UP TET/CTET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

प्राथमिक स्तर (कक्षा I से V के लिए)

शिक्षण विधि

(अध्यापन सम्बन्धी मुद्दे)

प्रधान सम्पादक
आनन्द कुमार महाजन

संपादन एवं संकलन
UP TET/CTET परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्णा, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com
© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा
सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP YCT BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-2 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव और सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

■ **UP TET/CTET शिक्षण विधियाँ (I-V) नवीन परीक्षा पाठ्यक्रम्............5-6**

बाल विकास

अधिगम और अध्यापन

■ **बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता के कारण 7-23**
- अधिगम का अर्थ 7
- अधिगम की विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक............ 7
- अधिगम के प्रकार एवं क्षेत्र............ 9
- अधिगम के वक्र तथा पठार............ 9
- अधिगम अनुभव एवं अधिगम शैली............11
- अधिगम अंतरण/स्थानान्तरण............12
- अधिगम के सिद्धांत............13
- थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत एवं नियम............14
- पावलव का अधिगम सिद्धांत............16
- स्किनर का अधिगम सिद्धांत............17
- हल का अधिगम सिद्धांत 18
- गुथरी का अधिगम सिद्धांत 18
- कोहलर का अधिगम सिद्धांत............18
- लेविन का अधिगम सिद्धांत 19
- बण्डूरा का अधिगम सिद्धांत............19
- बालकों का विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का अर्थ, कारण एवं उपाय 20

■ **अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ............24-47**
- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य एवं इनके प्रकार............24
- शिक्षण की प्रक्रिया एवं अवस्थाएँ............26
- शिक्षण के स्तर............27
- शिक्षण वातावरण 27
- शिक्षण का संगठन एवं नियोजन............28
- शिक्षण के सिद्धांत............28
- शिक्षण के सूत्र 30
- शिक्षण प्रविधियाँ............31
- शिक्षण प्रतिमान एवं उसके प्रकार 31
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (रचनात्मक, छात्र केन्द्रित, अध्यापक केन्द्रित आदि) 32
- सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल 34
- शिक्षण उपकरण एवं शिक्षण तकनीकी 37
- शिक्षण विधियाँ............38
- सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम एवं सामाजिक संदर्भ............40
- शिक्षा में विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज का योगदान 40

■ **बालक एक समस्या समाधानकर्ता एवं वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में............48-50**
- समस्या समाधान का अर्थ 48
- प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के सोपान 48
- समस्या समाधान की विधियाँ 49
- बालक एक समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में............49

- **बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ एवं उनकी त्रुटियों को समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–अवधान एवं रुचि 51-55**
  - पियाजे का रचनावादी दृष्टिकोण 51
  - वाइगोत्सकी का सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण 52
  - शिक्षार्थियों की त्रुटियों की पहचान 54
  - निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण 55
  - अवधान 55
  - रुचि का अर्थ प्रकार एवं मापन 55
- **बोध/संज्ञान, संवेग, संवेदनाएँ एवं प्रत्यक्षीकरण 56-60**
  - बोध/संज्ञान का अर्थ एवं सिद्धांत 56
  - संवेग का अर्थ, विशेषताएँ एवं संवेगात्मक बुद्धि 56
  - संवेग के प्रकार एवं सिद्धांत 57
  - सांवेगिक दशाएँ 58
  - बोध, संवेग एवं अधिगम में अंतर्सम्बन्ध 58
  - संवेदना का अर्थ, विशेषताएँ एवं प्रकार 59
  - प्रत्यक्षीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ 59
- **अभिप्रेरणा और अधिगम 61-70**
  - अभिप्रेरणा की अवधारणा 61
  - अभिप्रेरणा के संघटक एवं प्रकार 62
  - अभिप्रेरणा के सिद्धांत 64
  - अभिप्रेरणा और अधिगम में अंतर्संबन्ध 65
  - अभिप्रेरणा का शिक्षा में महत्त्व 65
  - पुनर्बलन, पुरस्कार एवं दण्ड 67
- **अधिगम में योगदान देने वाले कारक 71-71**
  - व्यक्तिगत कारक 71
  - पर्यावरणीय कारक 71

पर्यावरण

- **पर्यावरण शिक्षण 72-115**
  - पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा एवं पर्यावरण शिक्षा 72
  - पर्यावरण अध्ययन का महत्त्व, उद्देश्य, आवश्यकता एकीकृत पर्यावरण अध्ययन 76
  - अधिगम सिद्धांत 83
  - पर्यावरणीय शिक्षा का विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से सहसम्बन्ध 84
  - अवधारणा प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण 86
  - क्रियाकलाप 90
  - प्रयोग/व्यावहारिक कार्य 96
  - पर्यावरण शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षण सूत्र 100
  - सतत् व्यापक मूल्यांकन 103
  - शिक्षण सहायक सामग्री/उपकरण 112
  - पर्यावरण अध्यापन की समस्याएँ 115

हिन्दी भाषा शिक्षण

- भाषा अधिगम और अर्जन 116
- भाषा अध्यापन के सिद्धान्त 123
- भाषा का कार्य (सुनने और बोलने की भूमिका) 131
- विचारों का सम्प्रेषण (मौखिक और लिखित) 133

- भाषा कौशल 140
- भाषा बोधगम्यता एवं मूल्यांकन (बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना) 151
- अध्यापन अधिगम सामग्रियाँ 161
- उपचारात्मक अध्यापन....................166
- भाषा शिक्षण के विविध प्रश्न....................172

संस्कृत

- **संस्कृत शिक्षण एवं भाषा ज्ञान....................174-222**
  - अधिगम और अर्जन....................174
  - भाषा अध्यापन के सिद्धांत....................177
  - सुनने और बोलने की भूमिका....................183
  - मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श184
  - एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ, भाषा की कठिनाईयाँ, त्रुटियाँ और विकार....................189
  - भाषा कौशल 193
  - भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना 203
  - अध्यापन–अधिगम सामग्रियाँ : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन....................214
  - उपचारात्मक अध्यापन....................221

ENGLISH

- **PEDAGOGY OF LANGUAGE DEVELOPMENT 223-265**
  - Learning and Acquisition 223
  - Principles of Language Teaching 229
  - Role of Listening and Speaking; Function of Language and How Children use it as a Tool Language 237
  - Critical Perspective on the Role of Grammar in Learning A Language for Communicating Ideas Verbally and in Written Form 240
  - Language Skills 244
  - Evaluating Language Comprehension and Proficiency : Speaking Listening, Reading and Writing 249
  - Teaching-Learning Materials : Textbook, Multimedia Materials, Multilingual Resource of the Classroom 256
  - Remedial Teaching....................262

गणित

- **गणित शिक्षण....................266-304**
  - गणितीय/तार्किक चिंतन की प्रकृति, बालक के चिंतन एवं तर्क शक्ति पैटर्नों तथा अर्थ निकालने और अधिगम की कार्यनीतियों को समझना 266
  - पाठ्यचर्या में गणित का स्थान एवं गणित शिक्षण के उद्देश्य 273
  - गणित की भाषा एवं शिक्षण की विधियाँ....................277
  - सामुदायिक गणित एवं शिक्षण कौशल 282
  - औपचारिक एवं अनौपचारिक पद्धतियों के माध्यम से मूल्यांकन 287
  - शिक्षण की समस्याएँ एवं शिक्षण सामग्री 293
  - त्रुटि विश्लेषण तथा अधिगम एवं अध्यापन के प्रासंगिक पहलू....................298
  - नैदानिक एवं उपचारात्मक शिक्षण....................303

उत्तर प्रदेश/सीटेट शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी)
नवीन पाठ्यक्रम की संरचना
प्राथमिक स्तर (कक्षा I से V के लिए)

निर्देश : (1) परीक्षा की अवधि ढाई घण्टा अर्थात् 150 मिनट होगी
(2) संरचना एवं विषय वस्तु सूची (सभी अनिवार्य)

क्रम संख्या	विषय वस्तु	प्रश्नों की संख्या	अंक
1.	बाल विकास एवं शिक्षण विधि	30 प्रश्न	30
2.	भाषा प्रथम	30 प्रश्न	30
3.	भाषा द्वितीय	30 प्रश्न	30
4.	गणित	30 प्रश्न	30
5.	पर्यावरणीय अध्ययन	30 प्रश्न	30
	कुल	150 प्रश्न	150

I. बाल विकास और अध्यापन — 30 प्रश्न

(क) बाल विकास (प्राथमिक विद्यालय का बालक) — 15 प्रश्न

- विकास की अवधारणा तथा अधिगम के साथ उसका संबंध
- बालकों के विकास के सिद्धान्त
- आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव
- सामाजीकरण प्रक्रियाएं : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)
- पाइगेट, कोलबर्ग और वायगोट्स्की : निर्माण और विवेचित संदर्श
- बाल-केन्द्रित और प्रगामी शिक्षा की अवधारणाएँ
- बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श
- बहु-आयामी बौद्धिकता
- भाषा और चिंतन
- समाज निर्माण के रूप में लिंग, लिंग भूमिकाएं, लिंग-पूर्वाग्रह और शैक्षणिक व्यवहार
- शिक्षार्थियों के मध्य वैयक्तिक विभेद, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता पर आधारित विभेदों को समझाना
- अधिगम के लिए मूल्यांकन और अधिगम का मूल्यांकन के बीच अंतर, विद्यालय आधारित मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : संदर्श और व्यवहार
- शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर के मूल्यांकन के लिए कक्षा में शिक्षण और विवेचित चिंतन के लिए तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि के लिए उपयुक्त प्रश्न तैयार करना।

(ख) समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना। — 5 प्रश्न

- गैर-लाभप्राप्त और अवसर-वंचित शिक्षार्थियों सहित विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।
- अधिगम संबंधी समस्याएं, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना।
- मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।

(ग) अधिगम और अध्यापन — 10 प्रश्न

- बालक किस प्रकार सोचते हैं और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ : सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम; अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएं
- प्रेरणा और अधिगम
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक – निजी एवं पर्यावरणीय।

II. भाषा I — 30 प्रश्न

(क) भाषा बोधगम्यता — 15 प्रश्न

अपठित अनुच्छेदों को पढ़ना – दो अनुच्छेद एक गद्य अथवा नाटक और एक कविता जिसमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से सम्बन्धित प्रश्न होंगे (गद्य अनुच्छेद साहित्यिक, वैज्ञानिक, वर्णनात्मक अथवा तर्कमूलक हो सकता है)

(ख) भाषा विकास का अध्यापन — 15 प्रश्न

- अधिगम और अर्जन
- भाषा अध्यापन के सिद्धांत
- सुनने और बोलने की भूमिका : भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं।
- मौखिक और लिखित रूप से विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श
- एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ और विकार
- भाषा कौशल
- भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना
- अध्यापन – अधिगम सामग्रियाँ : पाठ्यपुस्तक, मल्टी मीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन
- उपचारात्मक अध्यापन

III. भाषा-II — 30 प्रश्न

(क) बोधगम्यता — 15 प्रश्न

दो अनदेखे गद्य अनुच्छेद (तर्कमूलक अथवा साहित्यिक अथवा वर्णनात्मक अथवा वैज्ञानिक) जिनमें बोधगम्यता, निष्कर्ष, व्याकरण और मौखिक योग्यता से संबंधित प्रश्न होंगे

(ख) भाषा विकास का अध्यापन — 15 प्रश्न

- अधिगम और अर्जन
- भाषा अध्यापन के सिद्धान्त
- सुनने और बोलने की भूमिका; भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं।
- मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर निर्णायक संदर्श
- एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ; भाषा की कठिनाइयां, त्रुटियाँ और विकार
- भाषा कौशल
- भाषा बौधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना
- अध्यापन – अधिगम सामग्री : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन
- उपचारात्मक अध्यापन

IV. गणित — 30 प्रश्न

(क) विषय-वस्तु — 15 प्रश्न

- ज्यामिति
- आकार और स्थानिक समझ
- हमारे चारों ओर विद्यमान ठोस पदार्थ
- संख्याएं
- जोड़ना और घटाना
- गुणा करना
- विभाजन
- मापन
- भार
- समय
- परिमाण
- आंकड़ा प्रबंधन
- पैटर्न
- राशि

(ख) अध्यापन संबंधी मुद्दे — 15 प्रश्न

- गणितीय/तार्किक चिंतन की प्रकृति; बालक के चिंतन एवं तर्कशक्ति पैटर्नों तथा अर्थ निकालने और अधिगम की कार्यनीतियों को समझना
- पाठ्यचर्या में गणित का स्थान
- गणित की भाषा
- सामुदायिक गणित
- औपचारिक एवं अनौपचारिक पद्धतियों के माध्यम से मूल्यांकन
- शिक्षण की समस्याएं
- त्रुटि विश्लेषण तथा अधिगम एवं अध्यापन के प्रासंगिक पहलू
- नैदानिक एवं उपचारात्मक शिक्षण

V. पर्यावरणीय अध्ययन — 30 प्रश्न

(क) विषय-वस्तु — 15 प्रश्न

I. परिवार और मित्र
1.1 संबंध
1.2. कार्य और खेल
1.3 पशु
1.4 पौधे
2. भोजन
3. आश्रय
4. पानी
5. भ्रमण
6. वे चीजें जो हम बनाते और करते हैं।

(ख) अध्यापन संबंधी मुद्दे — 15 प्रश्न

- ईवीएस की अवधारणा और व्याप्ति
- ईवीएस का महत्व, एकीकृत ईवीएस
- पर्यावरणीय अध्ययन एवं पर्यावरणीय शिक्षा
- अधिगम सिद्धांत
- विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की व्याप्ति और संबंध
- अवधारणा प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण
- क्रियाकलाप
- प्रयोग/व्यावहारिक कार्य
- चर्चा
- सीसीई
- शिक्षण सामग्री/उपकरण
- समस्याएं

अधिगम और अध्यापन

01.

बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता के कारण

अधिगम का अर्थ

1. **व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रबलित अभ्यास का परिणाम होता है, उसे क्या कहते हैं?**
(a) अधिगम (b) अभिप्रेरणा
(c) अभिवृत्ति (d) इनमें से कोई नहीं
UPTET (I-V) 19 December 2016
MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रबलित अभ्यास का परिणाम होता है, उसे अधिगम कहा जाता है। **किम्बले** ने भी अधिगम को इसी प्रकार परिभाषित करते हुए कहा है ''पुनर्बलित अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहारजन्य क्षमता में आने वाले अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति का परिवर्तन अधिगम है।''

2. **अधिगम का सबसे उपयुक्त कार्य है-**
(a) व्यक्तिगत समायोजन
(b) सामाजिक व राजनीतिक चेतना
(c) व्यवहार परिवर्तन
(d) स्वयं को रोजगार के लिए तैयार करना
Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) अधिगम का सबसे प्रमुख कार्य बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना है ताकि बालक अपने वातावरण के साथ समायोजन कर सके।

3. **अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन कहलाता है**
(a) स्मृति (b) सीखना
(c) प्रेरणा (d) चिन्तन
UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन सीखना कहलाता है। उदाहरणस्वरूप – यदि किसी बालक के सामने लाल मिर्च रखी है, तो वह जिज्ञासा के कारण मुँह में दबाता है और उसे काटते ही उसको तीखा का ज्ञान होता है और रोने लगता है इसलिए वह मिर्च को फेंक देता है फिर उसके पास कभी नहीं जाता क्योंकि उसने अनुभव से सीख लिया है कि लाल मिर्च कड़वी होती है। इस प्रकार सीखना अनुभव द्वारा व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन है।
मनोवैज्ञानिक सिम्पसन के अनुसार –''व्यवहार में कोई भी परिवर्तन जो कि अनुभवों का परिणाम है और जिसके फलस्वरूप व्यक्ति आने वाली परिस्थितियों का भिन्न प्रकार से सामना करता है-सीखना या अधिगम कहलाता है।''

4. **सीखने का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ है**
(a) कौशल अर्जन (b) ज्ञानार्जन
(c) व्यवहार में परिमार्जन (d) वैयक्तिक समायोजन
UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) सीखने का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ व्यवहार में परिमार्जन है। इसलिए कॉलविन ने कहा है '' पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।''

अधिगम की विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

5. **अधिगम के लिए निम्न में से कौन-सी धारणा उपयुक्त है?**
(a) प्रयासों से कोई फर्क नहीं पड़ता।
(b) असफलता अनियंत्रित है।
(c) योग्यता सुधार्य है।
(d) योग्यता अटल है।
C TET (I-V) 31 January 2021

Ans. (c) : 'योग्यता सुधार्य है', यह अधिगम की धारणा को प्रस्तुत करने के लिए सबसे उपयुक्त कथन है। यहाँ योग्यता सुधार्य का अर्थ किसी भी योग्यता से है जिसे व्यक्ति ने अर्जित किया है, अधिगम द्वारा उसमें सुधार किया जा सकता है। **मॉर्गन और गिलीलैण्ड** ने इसको स्पष्ट करते हुए कहा है, ''अधिगम या सीखना, अनुभव के परिणामस्वरूप प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन (सुधार) है, जो कम से कम कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है।'' इससे भी अधिगम की धारणा 'योग्यता सुधार्य है', के रूप में स्पष्ट हो जाती है।

6. **निम्नलिखित में से कौन सी प्रथाएँ सार्थक अधिगम को बढ़ावा देती हैं?**
(i) शारीरिक दंड
(ii) सहयोगात्मक अधिगम पर्यावरण
(iii) सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
(iv) निरंतर तुलनात्मक मूल्यांकन
(a) (i), (ii), (iii) (b) (ii), (iii), (iv)
(c) (i), (ii) (d) (ii), (iii)
C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) निम्नलिखित प्रथाएँ सार्थक अधिगम को बढ़ावा देती हैं–
– सहयोगात्मक अधिगम वातावरण
– सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
– अध्यापक की संरचनात्मक भूमिका
– रोचक पाठ्य सामग्री आदि

7. बालकों का अधिगम सर्वाधिक प्रभावशाली होगा, जब–
(a) पढ़ने–लिखने एवं गणितीय कुशलताओं पर ही बल होगा
(b) बालकों का संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोचालक पक्षों का विकास होगा
(c) शिक्षण व्यवस्था एकाधिकारवादी होगी
(d) शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में आगे होकर बालकों को निष्क्रिय रखेगा।

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : बालकों का अधिगम सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है जब बालकों का संज्ञानात्मक (cognitive), भावात्मक (affective) तथा मनोचालक (psychomotor) पक्षों का विकास होगा, क्योंकि शिक्षण–अधिगम के फलस्वरूप छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन इन्हीं तीन पक्षों में हो सकते हैं। छात्रों के व्यवहार में होने वाले इन तीन प्रकार के परिवर्तनों के आधार पर ही बेंजामीन एस. ब्लूम ने शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों को तीन भागों–
(i) संज्ञानात्मक उद्देश्य, (ii) भावात्मक उद्देश्य तथा (iii) मनोचालक उद्देश्य, में विभाजित किया है।

8. निम्न में से कौन–सी अधिगम की एक विशेषता नहीं है?
(a) अधिगम का अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है
(b) अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है
(c) अधिगम प्राणी की अभिवृद्धि है
(d) अधिगम एक लक्ष्योन्मुख प्रक्रिया है

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (a) योकम एवं सिम्पसन के अनुसार सीखने की सामान्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं–
(i) अधिगम अभिवृद्धि (Growth) है
(ii) अधिगम समायोजन है
(iii) अधिगम लक्ष्योन्मुखी प्रक्रिया है
(iv) अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है
(v) अधिगम विवेकपूर्ण व सृजनशील है
(vi) अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है
(vii) अधिगम अनुभवों का संगठन है
(viii) अधिगम क्रियाशील है।
अतः अधिगम का अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है, यह कथन सही नहीं है।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अधिगम के संबंध में सही नही है?
(a) अधिगम समायोजन है (b) अधिगम सिर्फ ज्ञान प्राप्ति है
(c) अधिगम विकास है (d) अधिगम परिपक्वता है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) अधिगम एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा बालक में समायोजन क्षमता का विकास तथा उच्चतम परिपक्वता के स्तर का विकास होता है। अधिगम का सम्बंध ज्ञान से है परन्तु सिर्फ ज्ञान प्राप्ति से नहीं है।

10. अधिगम के लिए क्या आवश्यक है?
(a) स्वानुभव (b) स्वचिंतन
(c) स्वक्रिया (d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक/छात्र में समझ विकसित होती है जो समस्या के समाधान में सहायक होती है। अधिगम का अर्थ सीखना होता है जो कई प्रकार से हो सकता है-
- स्वानुभव
- स्वचिंतन
- स्वक्रिया
- निर्देशन
- परामर्श आदि

11. निम्न में से कौन-सा उदाहरण अधिगम को प्रदर्शित करता है?
(a) हाथ जोड़ कर अध्यापक का अभिवादन करना
(b) स्वादिष्ट भोजन देख कर मुँह में लार का आना
(c) चलना, भागना एवं फेंकना तीन से पाँच वर्ष की अवस्था में
(d) इनमें से सभी।

REET–2012 (I-V) 09-09-2012

Ans: (a) अधिगम का तात्पर्य सीखना है। किसी बच्चे को कार्य करने के तरीकों को बताया जाए और छात्र उसी तरह का व्यवहार करे तो छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान या व्यवहार अधिगम कहलाएगा। जैसे– हाथ जोड़कर अध्यापक का अभिवादन करना बच्चें द्वारा सीखा जाता है।

12. निम्न में से कौन–से कथन सीखने की प्रक्रिया की विशेषता नहीं मानना चाहिए?
(a) शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है
(b) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है
(c) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है
(d) अन–अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है

CTET 2011 (I-V)

Ans : (a) सीखने की प्रक्रिया के निम्न विशेषताएँ हो सकती हैं–
(1) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है।
(2) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है।
(3) अन–अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है।
(4) सीखना अनुभवों का संगठन है।
(5) सीखना सम्पूर्ण जीवन काल तक चलता है तथा यह सार्वभौतिक होता है न कि शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है।

13. निम्नलिखित में से किस एक से शिशु के अधिगम को सहायता नहीं मिलती?
(a) अनुकरण (b) अभिप्रेरणा
(c) स्कूल का बस्ता (d) पुरस्कार

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (c) अधिगम एक क्रिया है जिससे व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है। अधिगम को तीव्र करने में अनुकरण, अभिप्रेरणा, पुरस्कार आदि सहायक की भूमिका निभाते है। जबकि स्कूल का बस्ता शिशु के अधिगम में सहायक नहीं होता है।

14. अधिगम क्षमता निम्नलिखित में से किससे प्रभावित नहीं होती?

(a) आनुवंशिकता (b) वातावरण
(c) प्रशिक्षण/शिक्षण (d) राष्ट्रीयता

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक -
1. आनुवांशिकता 2. वातावरण
3. प्रशिक्षण/शिक्षण 4. समायोजन की क्षमता
अतः राष्ट्रीयता अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक नहीं होता है।

15. सीखना

(a) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित नहीं होता है
(b) संवेगों से क्षीण संबंध रखता है
(c) सीखने वाले के संवेगों से स्वतंत्र है
(d) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होता है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (d) सीखना अधिगमकर्ता/सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होती है क्योंकि सीखने वाले की रूचि, उसकी मनोवृत्ति या उसकी भावनाओं पर ही निर्भर करता है कि सीखने की क्रिया कितनी तेज या कितनी धीमी है।

अधिगम के प्रकार एवं क्षेत्र

16. गैग्ने के अधिगम सोपान का सही क्रम है–

(a) नियम अधिगम, सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान
(b) सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान, नियम अधिगम
(c) सम्प्रत्यय अधिगम, नियम अधिगम, समस्या समाधान
(d) नियम अधिगम, समस्या समाधान, सम्प्रत्यय अधिगम

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) गैग्ने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में एक स्वस्पष्ट अंतर्निहित क्रम निहित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।

17. रिक्त स्थान भरिएः ''गैने के अधिगम पदानुक्रम में अधिगम की सर्वोच्च अवस्था है......?......''

उत्तरः समस्या-समाधान

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- गैने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में एक सुस्पष्ट अंतर्निहित क्रम व्यवस्थित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।

18. संकेत अधिगम के अंतर्गत सीखा जाता है–

(a) पारम्परिक अनुकूलन (b) मनोविज्ञान
(c) वातावरण (d) मनोदैहिक

REET–2015 (I-V) 16-02-2016

Ans. (a) : आर.एन. गैने के द्वारा प्रस्तुत अधिगम सोपानिकी के अंतर्गत अधिगम के आठ प्रकार बताये गये हैं, जिसमें पहला संकेत अधिगम हैं। संकेत अधिगम को पारम्परिक अनुकूलन या क्लासिकल अनुबंध भी कहा जाता है।

19. निम्नलिखित में से कौन सा अधिगम का क्षेत्र नहीं है?

(a) संज्ञानात्मक (b) भावात्मक
(c) क्रियात्मक (d) आध्यात्मिक

Hariyana TET (Class I-V) 1 Feb 2014
Hariyana TET (Class I-V) 2013

Ans: (d) अधिगम के मुख्यतः तीन क्षेत्र होते है
1. संज्ञानात्मक 2. भावनात्मक 3. क्रियात्मक
आध्यात्मिक अधिगम का भाग नहीं है। यह सामाजिक एवं पारिवरिक परिवेश का क्षेत्र है।

20. निम्नलिखित में से कौन–सा सीखने का क्षेत्र है?

(a) व्यावसायिक (b) आनुभविक
(c) भावात्मक (d) आध्यात्मिक

C TET (I-V) 2012

Ans : (c) अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने पूरे जीवनकाल में अनुभव प्राप्त करता है और प्राप्त अनुभवों से अपने ज्ञान में वृद्धि करता है। यह ज्ञान की वृद्धि संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक क्षेत्र में होती है।

अधिगम के वक्र तथा पठार

21. जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है, तब उनके सीखने का वक्र

(a) बेहतर होता है (b) स्थिर रहता है
(c) अवनत होता है (d) समान रहता है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (a) जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है तब उनके सीखने का वक्र बेहतर हो जाता है, क्योंकि समस्या पर चर्चा करने से विद्यार्थी एक दूसरे के विचारों से परिचित होते हैं तथा विद्यार्थियों में नये ज्ञान का भण्डार भी संचित होता है।

22. कौशल सीखने की पहली अवस्था है

(a) यथार्थता (b) कल्पनाशीलता
(c) समन्वय (d) अनुकरण

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) जन्म से ही बालक अपने माता-पिता या समाज के अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों का अवलोकन करता है एवं कालान्तर में उनमें से कुछ के व्यवहारों का अनुकरण अपने व्यवहार में करने लगता है। इसी प्रकार कौशल या किसी विशेष क्षेत्र में योग्यता हासिल करने की पहली अवस्था भी अनुकरण ही है। अनुकरण के माध्यम से ही वह कई प्रकार के कौशल सीख लेता है।

23. निम्नलिखित में से कौन सी एक मुख्य प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा सार्थक अधिगम घटित होता है?

(a) पुनरावृत्ति एवं अभ्यास
(b) निर्देश एवं संचालन
(c) अन्वेषण एवं पारस्परिक क्रिया
(d) कंठस्थीकरण एवं स्मरण

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) कंठस्थीकरण एवं स्मरण को सार्थक अधिगम की प्रक्रिया नहीं माना जा सकता है क्योंकि अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जो अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन लाता है। जबकि कंठस्थीकरण एवं स्मरण में सक्रियता का अभाव होता है तथा व्यवहार परिवर्तन को भी प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करता। दूसरी ओर पुनरावृत्ति एवं अभ्यास, निर्देश एवं संचालन तथा अन्वेषण एवं पारस्परिक क्रिया में सक्रियता निहित होती है तथा सार्थक अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

24. बालक विविध प्रकार से सीखते हैं

(a) शिक्षक के भाषण द्वारा
(b) प्रयोग द्वारा, विवेचन द्वारा, प्रश्न पूछकर, क्रिया करके तथा चिन्तन करके
(c) शिक्षक द्वारा निर्देशित, नियंत्रित पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण द्वारा
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) बालकों में सीखने की क्रिया विविध प्रकार से होती है -
1. क्रिया विधि द्वारा 2. प्रश्न पूछ कर
3. विषयवस्तु पर चिंतन करके 4. प्रयोग द्वारा
5. विवेचना द्वारा आदि।

25. दूसरे व्यक्ति के बाह्य व्यवहार की नकल है -

(a) सीखना (b) अनुकरण
(c) कल्पना (d) चिन्तन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) दूसरे व्यक्तियों के बाह्य व्यवहारों की नकल करना ही अनुकरण कहलाता है। जिन व्यक्तियों के व्यवहारों का अनुकरण किया जाता है उन्हें निदर्श (Models) कहा जाता है।

26. बच्चा किस प्रकार सीखता है?

(a) पुस्तकें पढ़कर (b) परिचर्चा द्वारा
(c) प्रश्न पूछकर (d) कई प्रकार से

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) सीखना, व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की एक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे कई प्रकार से सीख सकते हैं-
जैसे - पुस्तकों को पढ़कर - परिचर्चा द्वारा
- अखबार पढ़ कर - प्रश्न पूछकर
- अनुकरण करके
- समस्याओं को हल करके आदि।

27. बच्चे किस प्रकार से सीखते हैं? नीचे दिए गए कथनो में से कौन-सा इस प्रश्न के विषय में सही नहीं है?

(a) बच्चे केवल कक्षा में सीखते हैं।
(b) बच्चे तब सीखते हैं जब वे संज्ञानात्मक रूप से तैयार होते हैं।
(c) बच्चे अनेकों प्रकार से सीखते हैं।
(d) बच्चे सीखते हैं क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से प्रेरित होते हैं।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं, तथा वे हर समय तथा हर परिस्थिति में सीखते हैं तथा उनके सीखने का तरीका अलग-2 हो सकता है। अतः यह कथन गलत है कि बच्चे केवल कक्षा में सीखते हैं।

28. आप अनपढ़ माता–पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना चाहते हैं–

(a) आप बच्चे से अंग्रेजी में बात करेंगे
(b) आप बच्चे को अंग्रेजी में बोलने के लिए बाध्य करेंगे
(c) आप बच्चे को मातृभाषा में बोलने से रोकेंगे
(d) आप उसे मातृ–भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे

UK TET 2011 (I-V)

Ans : (d) यदि कक्षा के अशिक्षित माता–पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना हो तो एक अध्यापक को उसे उसकी मातृभाषा की सहायता से ही अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करना चाहिए ताकि बालक उपयुक्त वातावरण के अभाव में भी अंग्रेजी सीख सके।

29. किस मनोवैज्ञानिक ने सीखने की सामग्री के रूप में निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया?

(a) विलियम जेम्स (b) स्किनर
(c) एबिंगहॉस (d) बार्टलेट

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) एबिंगहॉस मनोवैज्ञानिक ने सीखने की सामग्री के रूप में निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया। उनके अनुसार निरर्थक शब्दों के प्रयोग से धीरे-धीरे सार्थक शब्दों का प्रयोग करना आसान हो जाता है।

अधिगम के वक्र तथा पठार

30. जब बच्चा कार्य करते हुए ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि–

(a) संभवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है
(b) बच्चा बुद्धिमान नहीं है
(c) बच्चे में सीखने की योग्यता नहीं है
(d) बच्चे को अनुशासित करने की ज़रूरत है

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (a) जब बच्चा किसी कार्य को लगातार करता है तो कुछ समय बाद उसकी उस काम में रुचि खत्म हो जाती है जिससे बच्चा ऊबने लगता है। जिसका आशय है कि कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है।

31. निम्न में से कौन–सा अधिगम का वक्र नहीं है?

(a) नतोदर (b) मिश्रित

(c) लम्बवत् (d) उन्नतोदर (उत्तल)

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : सीखने की मात्रा तथा समय (अथवा प्रयास) के परस्पर संबंध को चित्रांकित करने पर जो वक्र रेखा प्राप्त होती है उसे अधिगम वक्र रेखा कहा जाता है। अधिगम वक्र मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं–

1. सरल रेखीय वक्र (Straight Line Curve)

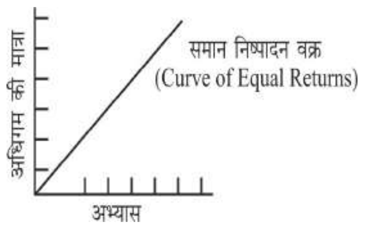

2. उन्नतोदर वक्र (Convex Curve)

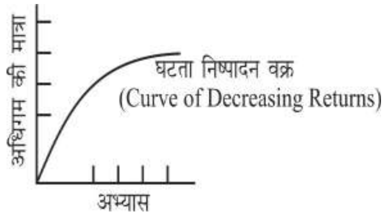

3. नतोदर वक्र (Concave Curve)

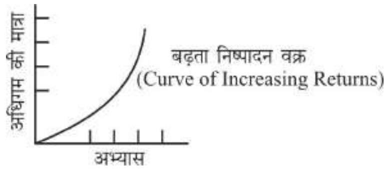

4. मिश्रित वक्र (Combination type Curve)

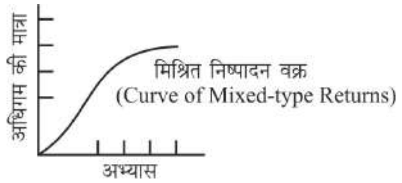

32. निम्न में से कौन-सा अधिगम के पठार का कारण नहीं है?

(a) प्रेरणा की सीमा (b) विद्यालय का असहयोग

(c) शारीरिक सीमा (d) ज्ञान की सीमा

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) सीखने की मात्रा तथा समय (अथवा प्रयास) के परस्पर सम्बन्ध को चित्रांकित करने पर जो वक्र रेखा प्राप्त होती है उसे अधिगम वक्र रेखा कहा जाता है। अधिगम वक्रो में कभी-कभी देखा जाता है कि अधिगम वक्र का कुछ भाग अत्यन्त कम उन्नति को प्रदर्शित करता है। नगण्य उन्नति को प्रदर्शित करने वाले इस प्रकार के भाग अधिगम के पठार कहलाते हैं अधिगम पठार बनने के कई कारण हो सकते हैं। जैसे- अधिगमकर्ता की आवश्यकता, ध्यान, रूचि, उत्साह, वातावरणीय व्यवधान, थकान, मनोशारीरिक सीमा, ज्ञान की सीमा आदि।

33. किसी शिक्षक को यदि यह लगता है कि उसका एक विद्यार्थी जो पहले विषय-वस्तु को भली प्रकार सीख रहा था। उसमें स्थिरता आ गई है। शिक्षक को इसे

(a) सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक स्थिति मानना चाहिए

(b) विषय को स्पष्टता से पढ़ाना चाहिए

(c) विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए

(d) उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) सीखने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। इस प्रक्रिया में कभी मंदता तो कभी तीव्रता आती है। इसी प्रकार विद्यार्थियों में सीखने की प्रक्रिया में स्थिरता भी आती है जो अधिगम की स्वभाविक प्रक्रिया है। अतः शिक्षक को इसे स्वभाविक प्रक्रिया ही मानना चाहिए।

34. सीखने की वह अवधि, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती, कहलाती है

(a) सीखने का वक्र (b) सीखने का पठार

(c) स्मृति (d) अवधान

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) सीखने की वह अवधि, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती, सीखने का पठार कहलाती है।

अधिगम अनुभव एवं अधिगम शैली

35. शिक्षार्थियों के बीच अधिगम शैली में अन्तर का कारण हो सकता है–

(a) शिक्षार्थी की समाजीकरण प्रक्रिया

(b) शिक्षार्थी द्वारा अपनाई गई विचारणा नीति

(c) परिवार की आर्थिक स्थिति

(d) बालक का लालन-पालन

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) शिक्षार्थियों द्वारा अपनायी गयी विचारणा नीति अर्थात् उनके सोचने–समझने के तरीकों के कारण अधिगम शैली में भिन्नता पायी जाती है।

36. सुरेश सामान्य रूप से एक शांत कमरे में अकेले पढ़ना चाहता है, जबकि मदन एक समूह में अपने मित्रों के साथ पढ़ना चाहता है। यह उनके .... में विभिन्नता के कारण है।

(a) मूल्यों (b) अभिक्षमता

(c) अधिगम शैली (d) परावर्तकता -स्तर

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) वैयक्तिक भिन्नता के कारण प्रत्येक व्यक्ति के रूचि, मनोवृत्ति, अवधान, अधिगम-शैली, विचार, बुद्धि, चिन्तन स्तर आदि में अन्तर पाया जाता है। इसलिए कोई व्यक्ति शांत वातावरण में पढ़ना चाहता है जबकि कोई अपने मित्रों के साथ समूह में। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके अधिगम शैलियों में अंतर होता है।

37. निम्न में से कौन-सा सीखने की शैली का एक उदाहरण है?

(a) संग्रहण (b) तथ्यात्मक

(c) स्पर्श-सम्बन्धी (d) चाक्षुष

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (d) चाक्षुष अर्थात् जिसका बोध नेत्र से हो। इस प्रकार सीखने का एक उत्तम उदाहरण चाक्षुष शैली हो सकता है। बालक इस शैली के माध्यम से किसी कार्य या व्यवहार का प्रत्यक्षीकरण करता है फिर वह उस व्यवहार का अनुकरण करता है जो एक बालक के सीखने के लिए सर्वोत्तम विधि है।

38. बच्चे के विकास के सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करता है –

(a) शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाना चाहिए - यह औचित्य स्थापित करने में

(b) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम-शैलियों को प्रभावी रूप में संबोधित करने में

(c) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में

(d) शिक्षार्थी की आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में

UK TET (I-V) 2014

Ans: (b) बच्चों के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों की रूचियों, व्यवहारों, संवेगों आदि को सही दिशा में निर्देशित कर सकता है, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने शिक्षण शैलियों का निर्माण कर सकता है एवं उन्हें प्रभावी रूप से संचालित कर सकता है।

39. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि–

(a) शिक्षार्थी हमेशा समूहों में ही बेहतर सीखते हैं।

(b) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसा ही बताया गया है।

(c) इससे प्रत्येक शिक्षार्थी को अनुशासित करने के लिए शिक्षकों को बेहतर अवसर मिलते हैं।

(d) बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (d) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।

अधिगम अंतरण/स्थानान्तरण

40. कौशलों के स्थानान्तरण के लिए कौन–सा उपयोगी है?

(a) कौशल अन्तरण एक गति है न कि उद्देश्य

(b) रेखीय अभिक्रम

(c) शाखीय अभिक्रम

(d) तैयारी और अर्जन

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (a) कौशल को किसी जटिल कार्य को आसानी से और दक्षता से करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया गया है। कार चलाना, आशुलिपि में लिखना आदि कौशल के उदाहरण हैं। कौशल अधिगम गुणात्मक रूप से कई भिन्न चरणों से होकर गुजरता है। एक चरण से दूसरे चरण में संक्रमण कौशल अंतरण कहलाता है। यह कौशल अंतरण उद्देश्यपूर्ण न होकर स्वतः होता है अर्थात कौशल अंतरण एक प्रकार की यात्रा है न कि लक्ष्य या उद्देश्य।

41. अधिगम अन्तरण का थॉर्नडाइक सिद्धांत कहा जाता है-

(a) समानता सिद्धांत

(b) अनुरूप तत्वों का सिद्धांत

(c) औपचारिक नियमों का सिद्धांत

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

REET–2015 (I-V) 16-02-2016

Ans. (b) : अधिगम अंतरण के 'अनुरूप तत्वों का सिद्धांत (Theory of Identical Elements) थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित किया गया था। वस्तुतः यह सिद्धांत थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित सादृश्यता के नियम का ही एक विस्तार कहा जा सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार सीखने का अंतरण उस सीमा तक ही हो सकता है जिस सीमा तक सीखने की दोनों क्रियाओं में समानता होती है।

42. एक बालक कक्षा में सीखे गए गणित का उपयोग किसी अन्य विषय के प्रश्न को हल करने में करता है, तो यह है–

(a) अधिगम का सकारात्मक स्थानांतरण

(b) अधिगम का शून्य सथानांतरण

(c) अधिगम का नकारात्मक स्थानांतरण

(d) प्रेरणात्मक स्थानांतरण

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) बालक द्वारा सीखे गये गणित का उपयोग किसी अन्य विषय के प्रश्न को हल करने में किया जाय तो इसे अधिगम का सकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं।

43. अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता को बढ़ाने के लिए अध्यापक को नहीं करना चाहिए

(a) स्व-क्रिया को प्रोत्साहित करना

(b) रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना

(c) सूझ द्वारा सीखने का विकास करना

(d) सामान्यीकरण पर बल देना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने से अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता बाधित होगा अतः अध्यापकों को इस तरह के प्रोत्साहन से बचना चाहिए।

44. शब्द IDENTICAL ELEMENTS (समान तत्व) निम्न से गहन सम्बन्ध रखता है

(a) समान परीक्षा प्रश्न (b) सहयोगियों से ईर्ष्या

(c) अधिगम स्थानान्तरण (d) समूह निर्देशन

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) IDENTICAL ELEMENT (समानतत्व) अधिगम स्थानान्तरण सिद्धांत से सम्बंधित है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन थार्नडाइक एवं वुडवर्थ ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार एक विषय का अध्ययन दूसरे विषय के अध्ययन में तभी सहायक सिद्ध हो सकता है जबकि इन दोनों विषयों में कुछ तत्व समान हो।

45. **निम्न में कौन शेष से भिन्न है?**
(a) अधिगम के लिए अधिगम का सिद्धान्त
(b) समान अवयवों का सिद्धान्त
(c) ड्राइव रिडक्शन सिद्धान्त
(d) सामान्यीकरण का सिद्धान्त

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) अधिगम के लिए अधिगम का सिद्धान्त, समान अवयवों का सिद्धान्त, सामान्यीकरण का सिद्धान्त ये सभी अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त है। जबकि ड्राइव रिडक्शन सिद्धान्त अधिगम का सिद्धान्त है जिसका प्रतिपादन क्लार्क एल. हल ने किया था।

46. **यदि पूर्व ज्ञान व अनुभव नये प्रकार के सीखने में सहायता करते हैं, तो उसे कहते हैं-**
(a) नकारात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण
(b) सकरात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण
(c) प्रशिक्षण स्थानान्तरण
(d) सीखना

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) धनात्मक अन्तरण को सकारात्मक अन्तरण भी कहते हैं। जब पूर्व अर्जित ज्ञान नवीन ज्ञान को अर्जित करने में सहायक होता है तो उसे धनात्मक या सकारात्मक अन्तरण कहते हैं।

47. **जब मानव शरीर के एक भाग को दिए गए प्रशिक्षण का अन्तरण दूसरे भाग में हो जाता है तो इसे कहते हैं -**
(a) ऊर्ध्व अन्तरण (b) क्षैतिज अन्तरण
(c) द्विपार्श्विक अन्तरण (d) उपरोक्त में से कोई नहा

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) मानव शरीर को दो भागों में बाँटा जा सकता है - दायाँ भाग और बायाँ भाग। जब मानव शरीर के एक भाग को दिये गये प्रशिक्षण का अंतरण दूसरे भाग में होता है तो इसे दिपार्श्विक अंतरण कहते हैं। जैसे दायें हाँथ से लिखने की योग्यता का उपयोग बायें हाँथ से लिखने में करना।

48. **एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उपयोग कहलाता है**
(a) **सीखने की विधियाँ** (b) **सीखने में स्थानान्तरण**
(c) सीखने में पठार (d) सीखने में रुचि

Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उस ज्ञान के उपयोग को सीखने में स्थानान्तरण कहते हैं। अतः जब एक विषय का ज्ञान अथवा एक परिस्थिति में सीखी बातें दूसरे विषय को सीखने में अथवा अन्य परिस्थिति में सीखी जा रही बातों के अध्ययन में सहायक अथवा घातक होता है तो उसे सीखने का स्थानान्तरण या अन्तरण कहा जाता है।

49. **एक बालक, जो साइकिल चलाना जानता है, मोटरबाइक चलाना सीख रहा है। यह उदाहरण होगा**
(a) क्षैतिज अधिगम अन्तरण का
(b) ऊर्ध्व अधिगम अन्तरण का
(c) द्विपार्श्विक अधिगम अन्तरण का
(d) कोई भी अधिगम अन्तरण नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण का उपयोग प्राणी के द्वारा किसी अन्य भिन्न प्रकार की अथवा उच्चस्तरीय परिस्थितियों के अध्ययन में किया जाता है तो इसे सीखने का उर्ध्व अंतरण कहते है।

50. **सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने का स्थानान्तरण' हो सकता है**
(a) सकारात्मक (b) नकारात्मक
(c) शून्य (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) जब एक विषय का ज्ञान अथवा एक परिस्थिति में सीखी बातें दूसरे विषय को सीखने में अथवा अन्य परिस्थिति में सीखी जा रही बातों के अध्ययन में सहायक या घातक होती है तो उसे सीखने का स्थानान्तरण कहा जाता है। यह स्थानानतरण कई प्रकार का हो सकता है - सकारात्मक स्थानान्तरण, नकारात्मक स्थानान्तरण, शून्य स्थानान्तरण, क्षैतिज स्थानान्तरण, उर्ध्व स्थानान्तरण, द्विपार्श्विक स्थानान्तरण।

अधिगम के सिद्धांत

51. **स्तम्भ–A तथा स्तम्भ–B को सुमेलित कीजिए।**

स्तम्भ–A		स्तम्भ–B	
A.	एनिमल इंटेलिजेंस	I.	गेस्टॉल्ट
B.	पुनर्बलन की अनुसूची	II.	पियाजे
C.	सारगर्भिता का नियम	III.	थॉर्नडाइक
D.	अनुकूलन	IV.	स्किनर

	A	B	C	D
(a)	I	IV	III	II
(b)	II	IV	III	I
(c)	II	IV	I	III
(d)	III	IV	I	II

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) :

स्तम्भ– A		स्तम्भ–B	
A.	एनिमल इंटेलिजेन्स	III.	थॉर्नडाइक
B.	पुनर्बलन की अनुसूची	IV.	स्किनर
C.	सारगर्भिता का नियम	I.	गेस्टॉल्ट
D.	अनुकूलन	II.	पियाजे

52. **अधिगम का व्यावहारिक सिद्धान्त निम्न है-**
(a) सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
(b) स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम का सिद्धान्त
(c) प्रबलन सिद्धान्त
(d) उपरोक्त सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम के व्यवहारिक सिद्धांत के अन्तर्गत स्किनर का क्रिया प्रसूत सिद्धांत, सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत तथा प्रबलन के सिद्धांत आते हैं।

53. **एस-ओ-आर किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया है?**
(a) वाटसन (b) कोफ्का
(c) कोहलर (d) गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (*) S-O-R (Stimulus-Organism-Response) अमेरिकी वैज्ञानिक **बुडवर्थ** के द्वारा प्रस्तावित किया गया था। यह संकल्पना अधिगम के क्षेत्र में उद्दीपन अनुक्रिया के बीच संज्ञान को महत्व देता है। जबकि वाटसन का मानना था कि मानव व्यवहार उद्दीपक अनुक्रिया (S-R) सम्बन्ध को इंगित करता है। प्राणी का प्रत्येक व्यवहार किसी न किसी तरह से उद्दीपक के प्रति एक अनुक्रिया ही होती है।

थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत एवं नियम

54. उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?
(a) पावलोव (b) थॉर्नडाइक
(c) स्किनर (d) कोह्लर

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन एडवर्ड एल.थार्नडाइक ने किया था। इवान पी. पावलव ने क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त का, बी.एफ.स्कीनर ने क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त का तथा कोहलर ने अंतर्दृष्टि के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था।

55. थार्नडाइक ने अपने सिद्धांत को किस शीर्षक से सिद्ध किया?
(a) संज्ञानात्मक अधिगम
(b) अधिगम के प्रयास एवं भूल
(c) संकेत अधिगम
(d) स्थान अधिगम

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (b) थार्नडाइक ने अपने सिद्धांत को 'अधिगम के प्रयास एवं भूल का सिद्धांत' शीर्षक से सिद्ध किया। इस सिद्धांत को सम्बन्धवाद या उद्दीपक–अनुक्रिया सिद्धांत भी कहते हैं। इनके अनुसार सीखने के लिए पुनर्बलन केन्द्रिय तत्त्व है तथा अनुक्रिया का संतोषजनक परिणाम ही उद्दीपक–अनुक्रिया बन्धन को सुदृढ़ कर सकता है।

56. निम्न में से कौन–सा थॉर्नडाइक के अधिगम के प्राथमिक नियमों में शामिल नहीं है?
(a) साहचर्यात्मक स्थानान्तरण का नियम
(b) अभ्यास का नियम
(c) प्रभाव का नियम
(d) तत्परता का नियम

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (a) ई.एल. थार्नडाइक ने अधिगम के तीन मुख्य नियम तथा पाँच गौण नियम दिये हैं जो निम्न हैं–

मुख्य नियम–
(i) अभ्यास का नियम
(ii) प्रभाव का नियम
(iii) तत्परता का नियम

गौण नियम–
(i) बहुअनुक्रिया का नियम
(ii) मनोवृत्ति का नियम
(iii) आंशिक क्रिया का नियम
(iv) सादृश्यता का नियम
(v) साहचार्यात्मक रूपान्तरण का नियम

57. The law of use and disuse in learning is also called as/अधिगम में उपयोग और अनुपयोग के नियम को भी कहा जाता है :
(a) law of effect/प्रभाव का नियम
(b) law of exercise/श्रम का नियम
(c) law of reinforcement/प्रबलन का नियम
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (b) : ई.एल. थार्नडाइक ने सीखने के कुछ नियम दिये हैं जिन्हें मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया गया है–

(A) मुख्य नियम :	**(B) गौण नियम :**
1. तत्परता का नियम	1. बहुअनुक्रिया का नियम
2. अभ्यास का नियम	2. मानसिक स्थिति का नियम
• उपयोग का नियम	3. आंशिक क्रिया का नियम
• अनुप्रयोग का नियम	4. समानता का नियम
	5.साहचर्य-परिवर्तन का नियम
3. प्रभाव का नियम	

नोट– यहाँ उपयोग और अनुपयोग के नियम को Low of Exercise या अभ्यास का नियम भी कहा जाता है। किन्तु हिन्दी में 'श्रम का नियम' होने के कारण आयेग द्वारा सभी प्रतियोगियों को बोनस अंक दिया गया है।

58. जब बालक सीखने के लिए तैयार होता है, तब वह जल्दी व प्रभावशाली तरीके से सीखता है यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है-
(a) थॉर्नडाइक द्वारा (b) स्किनर द्वारा
(c) पावलॉव द्वारा (d) कुर्ट लेविन द्वारा

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) थॉर्नडाइक के अनुसार- जब बालक सीखने के लिए तैयार होता है तब वह जल्दी एवं प्रभावशाली तरीके से सीखता है। यह तत्परता के नियम को प्रदर्शित कर रहा है।

59. जब अध्यापक एक छात्र को सफलता का अहसास कराता है तो वह उपयोग कर रहा होता है
(a) तत्परता के नियम का (b) अभ्यास के नियम का
(c) प्रभाव के नियम का (d) मानसिक तत्परता के नियम का

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अध्यापक द्वारा छात्र को सफलता का अहसास करना प्रभाव के नियम का उपयोग करना है।

60. निम्न में से कौन-सा सीखने के नियम में सम्मिलित नहीं है?
(a) अभ्यास (b) तत्परता
(c) खेल (d) प्रभाव।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) खेल सीखने के नियम में सम्मिलित नहीं है। थार्नडाइक ने इस सम्बन्ध में वृहत् अध्ययन किया एवं निष्कर्षतः अधिगम (सीखने) के तीन नियमों का प्रतिपादन किया। जो इस प्रकार हैं-
(i) अभ्यास का नियम
(ii) प्रभाव का नियम
(iii) तत्परता का नियम

61. 'तत्परता का नियम' किसने दिया है?

(a) पावलॉव (b) एबिंगहास
(c) थॉर्नडाइक (d) स्किनर

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) थॉर्नडाइक द्वारा तत्परता का नियम दिया गया। इस नियम के अनुसार जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तैयार होता है तो वह प्रक्रिया उसे आनन्द देती है तो वह कार्य तेजी से करता है और जल्दी सीख जाता है।

62. सीखने के 'प्रयास और भूल सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं

(a) कोह्लर (b) थॉर्नडाइक
(c) पावलॉव (d) स्किनर

HPTET (TGT) September, 2018
UPTET (I-V) 15 October 2017
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (b) सीखने के प्रयास एवं भूल का सिद्धांत थार्नडाइक द्वारा दिया गया। इसे उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत भी कहा जाता है। इसके लिए थार्नडाइक ने बिल्ली पर प्रयोग किया था। इस सिद्धांत के अनुसार त्रुटि (भूल) करते रहने से धीरे-धीरे किसी कार्य को करने की परिपक्वता आ जाती है।

63. 'सीखने के नियम' के प्रतिपादक है

(a) फ्रायड (b) स्किनर
(c) थॉर्नडाइक (d) एडलर

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) थार्नडाइक द्वारा 'सीखने के नियम' का प्रतिपादन किया गया था। इसके अनुसार व्यक्ति विशेष कार्य में विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करता है। थार्नडाइक ने सीखने के तीन नियम बताये -
(i) अभ्यास के नियम,
(ii) प्रभाव के नियम,
(iii) तत्परता का नियम।

67. अधिगम में .... ने प्रभाव का नियम दिया था।

(a) पावलोव (b) स्किनर
(c) वाटसन (d) थॉर्नडाइक

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) थॉर्नडाइक ने अधिगम या सीखने के मुख्यतः तीन नियम दिए हैं-
1. तत्परता का नियम
2. प्रभाव का नियम
3. अभ्यास का नियम

प्रभाव के नियम के अनुसार हम उस कार्य को सीखना चाहते हैं जिसका परिणाम हमारे लिए हितकर होता है। प्रभाव संतोषजनक होने पर व्यक्ति उस अनुक्रिया को सीख लेता है तथा असंतोष उत्पन्न होने पर उस कार्य को नहीं करना चाहता है। प्रभाव के नियम को अध्यापक द्वारा कक्षा कक्ष में लागू करने के लिए मुख्यतः दो कार्य करने अति आवश्यक हैं–
1. शिक्षकों को अध्यापन कार्य करते समय बालकों का उत्साह बढ़ाना चाहिए।
2. शिक्षक को चाहिए कि पाठ्यक्रम को व्यस्थित करके छात्रों के सामने प्रस्तुत करें ताकि छात्रों में अधिगम के प्रति अभिरुचि बढ़ें।

65. सीखने के नियम दिए हैं

(a) पावलॉव ने (b) स्किनर ने
(c) थॉर्नडाइक ने (d) कोह्लर ने

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) सीखने का नियम थॉर्नडाइक ने प्रतिपादित किया है। थार्नडाइक का पूरा नाम एडवर्ड थार्नडाइक था। यह यू.एस.ए. के एक मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने पशु व्यवहार तथा सीखने की प्रक्रिया दोनों पर कार्य किया था जिससे उन्हीं के कार्य के आधार पर आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की नींव पड़ी। थार्नडाइक ने सीखने के मुख्यतः तीन नियम दिए जो निम्नलिखित है-
1. तत्परता का नियम 2. प्रभाव का नियम 3. अभ्यास का नियम

66. सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम सम्बन्धित है

(a) अभ्यास कार्य से (b) परिणाम की अपेक्षा से
(c) प्रशंसा से (d) तत्परता से

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम तत्परता से सम्बन्धित है। थार्नडाइक के अनुसार सीखने के तीन मुख्य नियम हैं–
1. तत्परता का नियम 2. अभ्यास का नियम
3. प्रभाव का नियम
तत्परता का नियम- 'यह नियम कार्य करने के पूर्व तत्पर या तैयार किए जाने पर बल देता है।' यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तत्पर या तैयार होते हैं, तो उसे शीघ्र सीख लेते हैं। तत्परता में कार्य करने की इच्छा निहित होती है। ध्यान केंद्रित करने में भी तत्परता सहायता करती है।

67. जब बच्चे एक अवधारणा को सीखते हैं और उसका प्रयोग करते हैं, तो अभ्यास उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को कम करने में मदद करता है। यह विचार.........के द्वारा दिया गया।

(a) जीन पियाज़े (b) जे.बी. वॉटसन
(c) लेव वाइगोत्स्की (d) ई.एल. थॉर्नडाइक

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (d) यह थॉर्नडाइक की प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत से संबंधित है। थॉर्नडाइक ने बिल्ली पर प्रयोग करके यह सिद्धांत प्रतिपादित किया।

68. ''एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।'' यह किससे सम्बन्धित है?

(a) सीखने का 'प्रभाव-नियम'
(b) सीखने की प्रक्रिया का 'अभिवृत्ति-नियम
(c) सीखने का 'तत्परता-नियम'
(d) सीखने का सादृश्यता-नियम

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (d) सीखने का सादृश्यता-नियम के अनुसार एक बच्चा किसी नवीन परिस्थिति या समस्या के उपस्थित होने पर उससे मिलती जुलती अन्य परिस्थिति का स्मरण करता है जिसे वह पहले भी अनुभव कर चुका है। वह उसके साथ वैसी ही प्रतिक्रिया करेगा जैसा कि उसने पहली परिस्थिति एवं समस्या के साथ की थी।

69. निम्नलिखित में से कौन सा सीखने का नियम नहीं है-

(a) तत्परता का नियम (b) तनाव का नियम
(c) प्रभाव का नियम (d) अभ्यास का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) तनाव का नियम, सीखने का नियम नहीं है जबकि तत्परता का नियम, प्रभाव का नियम तथा अभ्यास का नियम, सीखने के मुख्य नियम हैं।

70. निम्न में से कौन-सा सीखने के मुख्य नियमों में शामिल नहीं है?

(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) बहु-अनुक्रिया का नियम (d) प्रभाव का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) थार्नडाइक ने अपने प्रयोगों के आधार पर सीखने के कतिपय नियमों का प्रतिपादन किया। इन नियमों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है- (1) मुख्य नियम (2) गौण नियम

(1) मुख्य नियम के अंतर्गत निम्नलिखित नियम है-
- (i) तत्परता का नियम
- (ii) अभ्यास का नियम
- (iii) प्रभाव का नियम

(2) गौण नियम के अंतर्गत निम्नलिखित नियम है-
- (i) बहुअनुक्रिया का निमय
- (ii) मानसिक स्थिति का नियम
- (iii) आंशिक क्रिया का नियम
- (iv) सादृश्य अनुक्रिया का नियम

71. अधिगम के प्राथमिक सिद्धांतों के प्रणेता कौन हैं?

उत्तरः ई. एल. थार्नडाइक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- अधिगम के प्राथमिक सिद्धान्त के प्रणेता इ. एल थार्नडाइक माने जाते हैं। 'पशु व्यवहार' एवं सीखने की प्रक्रिया' पर उनके कार्य के आधार पर ही आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की वैज्ञानिक नींव पड़ी। ये मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन बोर्ड के सदस्य तथा सन् 1912 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ के अध्यक्ष भी रहे।

72. 'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तरः ई. एल. थार्नडाइक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एडवर्ड एल. थार्नडाइक द्वारा सन् 1913 में किया गया। इन्होंने अपना प्रयोग बिल्ली पर किया जिसके आधार पर सीखने के तीन मुख्य नियमों- तत्परता का नियम, अभ्यास का नियम तथा प्रभाव का नियम प्रतिपादित किया। प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त को S-R bond (Stimulus-Response bond) सिद्धान्त भी कहा जाता है।

73. कक्षा शिक्षण में पाठ प्रस्तावना सोपान सीखने के किस नियम पर आधारित है?

(a) प्रभाव का नियम (b) सादृश्यता का नियम
(c) तत्परता का नियम (d) साहचर्य का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) तत्परता में कार्य करने की शक्ति निहित रहती है तथा साथ में तत्परता से सक्रियता भी बढ़ जाती है। तत्परता के नियम को तैयारी का नियम भी कहते हैं इस नियम के तहत निम्न कार्य करने चाहिए-

1. शिक्षकों को बालकों की अभिरुचि एवं अभिक्षमता का मापन कर लेना चाहिए। जिससे उनकी तत्परता का ज्ञान हो सके। (ज्ञात से अज्ञात की ओर)
2. बालकों के लिए तत्परता के अनुरूप शैक्षणिक व्यवस्था होनी चाहिए
3. पूर्व पाठ से कुछ 3 प्रश्न पूछ कर नवीन पाठ आरम्भ करनी चाहिए (पाठ प्रस्तावना)

भाटिया के अनुसार – "तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, युद्ध को आधा विजय कर लेना है।"

74. 'सीखने की तत्परता'------- की ओर संकेत करती है।

(a) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(b) शिक्षार्थियों का सामान्य योग्यता स्तर
(c) सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(d) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (c) 'सीखने की तत्परता' सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर की ओर संकेत करती है। अर्थात् सीखने की तत्परता, विद्यार्थी के पूर्व अनुभव का वर्तमान स्तर तथा नवीन ज्ञान के बीच सम्बन्ध को मजबूत बनाती है।

75. थॉर्नडाइक का सिद्धान्त निम्न में से कौन-सी श्रेणी में आता है?

(a) व्यवहारात्मक सिद्धान्त (b) संज्ञानात्मक सिद्धान्त
(c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) थॉर्नडाइक एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने अधिगम के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत का प्रतिपादन किया। ध्यातव्य है कि व्यवहारवाद के प्रवर्तक जे.बी. वाटसन माने जाते हैं तथा इसके समर्थकों में बी.एफ. स्किनर, पावलव जैसे मनोवैज्ञानिकों का नाम लिया जाता है।

पावलव का अधिगम सिद्धांत

76. प्राचीन अनुबंधन का सिद्धान्त किसने दिया ?

(a) स्किनर (b) स्पिनोविच
(c) पावलोव (d) बिने

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) प्राचीन अनुबंधन सिद्धान्त का प्रतिपादन इवान पी.पावलव ने किया था। इन्होंने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया। पावलव वास्तव में रूस के एक शरीर क्रिया वैज्ञानिक थे जिन्होंने पाचन क्रिया की दैहिकी का गहन अध्ययन किया।

77. अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत किसके अनुकूलन पर बल देता है?

(a) तर्क (b) व्यवहार
(c) चिन्तन (d) अभिप्रेरणा

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (b) अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत व्यवहार के अनुकूलन पर बल देता है। इस सिद्धांत के अनुसार अस्वाभाविक उद्दीपक को स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार–बार प्रस्तुत करने पर प्राणी अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रति भी स्वभाविक उद्दीपक जैसी अनुक्रियाएँ करने लगता है। अर्थात् उसकी अनुक्रियाएँ या व्यवहार अस्वभाविक उद्दीपक के साथ अनुकूलित हो जाती हैं।

78. In Pavlov's experiment the dog salivated not only when meat powder was placed directly in his mouth, but also before that i.e. when heard the trainer's footsteps coming down the stairs. This phenomenon is called as/पावलॉव के प्रयोग में, कुत्ता न केवल मांस प्रदाता के मांस सीधे मुँह में रखने लार टपकाता है, अपितु इससे पहले भी, अर्थात् जब सीढ़ियों से नीचे आने वाले प्रशिक्षक के कदमों की आवाज सुनता है। इस संवृत्ति को कहा जाता है :

(a) Extinction/विलोपन
(b) Unconditional stimulus/बिना शर्त प्रोत्साहन
(c) Conditioned reflex/अनुकूलित उत्तेजना
(d) Readiness/तत्परता

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (c) : पावलाव महोदय ने कुत्ते पर प्रयोग करते हुए अपने शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत में स्पष्ट किया है कि यदि स्वाभाविक उद्दीपक के साथ अस्वाभाविक उद्दीपक दिया जाए और इसकी पुनरावृत्ति अनेक बार की जाए तो कालान्तर में स्वाभाविक उद्दीपक के हटाए जाने पर अस्वाभाविक उद्दीपक से भी वही अनुक्रिया होती है जो स्वाभाविक उद्दीपक के साथ होती थी।

79. राजू खरगोश से डरता था। शुरू में खरगोश को राजू से काफी दूर रखा गया। आने वाले दिनों में हर रोज खरगोश और राजू के बीच की दूरी कम कर दी गई। अन्त में राजू की गोद में खरगोश को रखा गया और राजू खरगोश से खेलने लगा। यह प्रयोग उदाहरण है

(a) प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त का
(b) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त का
(c) क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का
(d) इनमें से सभी।

REET–2012 (I-V) 09-09-2012

Ans: (b) किसी व्यक्ति का किसी अन्य से सम्बंधों में प्रगाढ़ता शास्त्रीय अनुबंध सिद्धांत कहलाता है। इस सिद्धांत के तहत दो व्यक्ति या वस्तुओं में आत्मीयता बढ़ती जाती है।

80. पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है। बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है। राजू शोर सुन कर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शान्ति के पश्चात बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त का उदाहरण है?

(a) शास्त्रीय अनुबन्धन
(b) क्रियाप्रसूत अनुबन्धन
(c) प्रयत्न एवं भूल
(d) इनमें से कोई नहीं।

REET–2011 (I-V) 31-07-2011

Ans: (a) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत का प्रतिपादन पावलव ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी अनुक्रिया का सम्बन्ध किसी विशेष प्रकार के उद्दीपक के साथ स्थापित हो जाने पर उद्दीपक जैसे ही प्रस्तुत होती है अनुक्रिया स्वतः होने लगती है इस प्रकार अधिगम हो जाता है। प्रश्न में राजू बिजली चमकने और कड़कने की आवाज सुनकर उछलता है। बाद में जब पुनः बिजली कड़कती है तो वह पुनः उछल पड़ता है। इस प्रकार उसकी अनुक्रिया 'उछलना' उद्दीपक 'बिजली के कड़कने' के साथ सम्बन्धित हो गयी है। फलस्वरूप उस विशेष उद्दीपक के प्रति वह विशेष अनुक्रिया करना सीख गया है।

81. सीखने का 'क्लासिकल कण्डीशनिंग' सिद्धान्त प्रतिपादित किया था

(a) स्किनर
(b) पावलॉव
(c) थॉर्नडाइक
(d) कोह्लबर्ग

Punjab TET (I-V) 2011
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (b) सीखने की क्लासिकल कण्डीशनिंग सिद्धांत का प्रतिपादन पावलव द्वारा किया गया। इसे सम्बंध प्रत्यावर्तन सिद्धांत भी कहा जाता है। इसके अनुसार ''सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है।''

82. .... सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत में पावलॉव ने प्रयोग किया -

(a) बिल्ली पर
(b) कुत्ते पर
(c) बन्दर पर
(d) चूहे पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) अनुबंधित अनुक्रिया उद्दीपक सिद्धांत में पावलॉव ने कुत्ते पर प्रयोग किया जिसमें पावलॉव ने कुत्ते के लार स्रावित करने की क्रिया के आधार पर अनुबंधित अनुक्रिया सिद्धांत की व्याख्या की। बिल्ली पर थार्नडाइक द्वारा, चूहों पर स्किनर द्वारा एवं बन्दर पर कोहलर एवं कोफ्का ने प्रयोग किया था।

स्किनर का अधिगम सिद्धांत

83. निम्न में किस सिद्धांत को पुनर्बलन का सिद्धांत भी कहते हैं?

(a) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत
(b) उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत
(c) सूझ का सिद्धांत
(d) क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत को पुनर्बलन का सिद्धांत भी कहते हैं। स्किनर ने अपने अधिगम सिद्धांत में पुनर्बलन की सर्वाधिक तथा प्रभावशाली भूमिका बतायी है। इनके अनुसार पुनर्बलन से तात्पर्य किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे सुखकारी उद्दीपक की प्रस्तुति है जो प्राणी को अपेक्षित अनुक्रिया बार–बार करने के लिए प्रेरित करता है।

84. क्रिया–प्रसूत अनुबन्धन का दूसरा नाम है–

(a) समीपस्थ अनुबंधन
(b) नैमित्तिक अनुबंधन
(c) प्राचीन अनुबंधन
(d) चिन्ह अनुबंधन

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (b) क्रिया–प्रसूत अनुबंधन का दूसरा नाम नैमित्तिक अनुबंधन भी है। अधिगमकर्ता की अनुक्रियाओं का पुनर्बलन के लिए अनुबन्धन का एक निमित्त होने के कारण इस सिद्धांत को नैमित्तिक या यांत्रिक या साधानात्मक अनुबंधन सिद्धांत के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

85. क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त का प्रतिपादन ------ ने किया था-

(a) पावलॉव (b) स्किनर
(c) थार्नडाइक (d) कोहलर

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) स्किनर द्वारा क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था। इन्होंने चूहों पर प्रयोग कर सीखने का सिद्धान्त दिया था। इसी प्रकार पावलॉव- क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धान्त (कुत्ते पर प्रयोग) का, थौर्नडाइक- प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त (बिल्ली पर प्रयोग) का तथा कोहलर- सूझ का सिद्धान्त (बन्दर पर प्रयोग) दिया है।

86. अभिक्रमित अधिगम किसके सिद्धान्त पर आधारित है?
उत्तरः बी. एफ. स्किनर

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- अभिक्रमित अधिगम बी.एफ. स्किनर द्वारा प्रतिपादित अधिगम के क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त पर आधारित है। अभिक्रमित अधिगम एक ऐसी विधि है जिसमें अधिगमकर्ता सक्रिय रहता है, तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है तथा अपनी गति से सीखते हुए बढ़ता है। इस विधि को क्रमसिद्ध अधिगम भी कहा जाता है। स्किनर ने अभिक्रमित अधिगम के पाँच सिद्धान्त बताएँ है-
(1) लघुपदीय सिद्धान्त
(2) सक्रिय अनुक्रिया सिद्धान्त
(3) तत्कालीन जाँच या प्रतिपुष्टि का सिद्धान्त
(4) स्व-गति का सिद्धान्त
(5) छात्र परीक्षण का सिद्धान्त

87. अभिक्रमायोजित अधिगम का प्रत्यय किसने दिया था–

(a) हल (b) थार्नडाइक
(c) स्किनर (d) वाटसन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) अभिक्रमायोजित अधिगम का अर्थ है किसी योजना के अनुसार शिक्षण एवं अधिगम की क्रिया को साकार रूप प्रदान करना। इसका लक्ष्य है– अधिगम को सोद्देश्य एवं स्थायी बनाना। रेखीय अभिक्रमायोजित अधिगम का प्रतिपादन बी.एफ. स्किनर ने किया था। इस अधिगम में विषय–वस्तु को छोटे–छोटे पदों में बाँटकर उनको शृंखलाबद्ध तरीके से व्यवस्थित करके अधिगम किया जाता है।

हल का अधिगम सिद्धांत

88. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?

(a) सीखने का उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त–थॉर्नडाइक
(b) सीखने का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त–बी. एफ. स्किनर
(c) सीखने का क्लासिकल सिद्धान्त–पॉवलव
(d) सीखने का समग्र सिद्धान्त–हल

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (d) सीखने के समग्र सिद्धान्त को अंतर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त भी कहते हैं। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिको- वोल्फगैंग कोहलर तथा कुर्ट कोफ्का द्वारा किया गया जबकि हल ने सीखने के प्रबलन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

गुथरी का अधिगम सिद्धांत

89. किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल-अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्व नहीं दिया है?

(a) थार्नडाइक (b) पावलॉव
(c) स्किनर (d) गुथरी

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) गुथरी ने समीपता का सिद्धांत दिया। उसके अनुसार उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य अनुबंध पुनर्बलन (पुरस्कार) के आधार पर नहीं बल्कि समीपता के आधार पर होती है। जबकि थार्नडाइक, पावलव एवं स्किनर ने अधिगम क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों में पुरस्कार को एक महत्वपूर्ण कारक माना है।

कोहलर का अधिगम सिद्धांत

90. कोह्लर यह सिद्ध करना चाहता था कि सीखना–

(a) एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति, पशु से श्रेष्ठ है
(b) स्वायत्त यादृच्छिक क्रिया है
(c) संज्ञानात्मक संकार्य है
(d) पारिस्थिति के विभिन्न अंगों का प्रत्यक्षीकरण है

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (c) कोह्लर यह सिद्ध करना चाहता था कि सीखना एक संज्ञानात्मक संकार्य है। कोह्लर ने अंतर्दृष्टि या सूझ को अधिगम में महत्वपूर्ण माना। निःसंदेह सूझ की प्रक्रिया एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो समस्या का संज्ञानात्मक समाधान प्रस्तुत करके सीखने की प्रक्रिया को अत्यधिक सरल, सहज तथा उद्देश्यपूर्ण बनाती है।

91. अन्तर्दृष्टि (सूझ) द्वारा सीखने के सिद्धान्त में कोहलर ने प्रयोग किया था

(a) कुत्ते पर (b) वनमानुषों पर
(c) बिल्ली पर (d) चूहों पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धांत देने का श्रेय जर्मन मनोवैज्ञानिक वोल्फगैंग कोहलर को है। इस सिद्धांत को कोहलर ने अपनी पुस्तक 'Mentality of opes' में वर्ष 1925 में प्रस्तुत किया है।
कोहलर ने सूझ के सिद्धांत का प्रयोग वनमानुष या सुल्तान नामक ''चिम्पांजी'' पर किया था।
कोहलर के अनुसार ''कल्पना जितनी अधिक होगी सूझ की क्षमता का विकास भी उतना ही अधिक होगा।''

92. निम्न में से कौन-सा मत अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने की व्याख्या करता है?

(a) मनोविश्लेषणवाद (b) व्यवहारवाद
(c) सम्बन्धवाद (d) गेस्टाल्टवाद

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) सीखने के अर्न्तदृष्टि या सूझ के सिद्धांत का प्रतिपादन जर्मनी के गेस्टाल्टवादियों द्वारा किया गया था। इसलिए इस सिद्धांत को गेस्टाल्ट सिद्धांत भी कहते हैं। इसके अनुसार व्यक्ति सम्पूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह समझ लेता है और फिर वह अपनी सूझ और अनुभव के द्वारा उस परिस्थिति या समस्या का समाधान करता है। इस सिद्धांत का प्रयोग सुल्तान नामक वनमानुष पर किया गया था।

93. 'सीखने के अंतःदृष्टि सिद्धांत' को किसने बढ़ावा दिया?
(a) पॉवलव (b) जीन पियाजे
(c) वाइगोत्स्की (d) 'गेस्टाल्ट' सिद्धांतवादी

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (d) सीखने के अंतःदृष्टि सिद्धांत को जर्मनी के गेस्टाल्ट सिद्धांतवादियों ने बढ़ावा दिया।

94. सूझ द्वारा सीखने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया -
(a) थार्नडाइक (b) कोहलर
(c) पावलॉव (d) वुडवर्थ

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) सूझ द्वारा सीखने के सिद्धान्त का प्रतिपादन कोहलर महोदय ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम मात्र किसी अभ्यास का प्रशिक्षण नहीं वस्तुतः अचानक आयी सूझ से होता है। इसलिए इसे 'आहहा'! सिद्धांत भी कहा जाता है।

95. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आधारशिला किसने रखी थी -
(a) फ्रान्ज ब्रेन्टानो (b) मैक्स वरथीमर
(c) एडगर रूबिन (d) कुर्ट लेविन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आधारशिला जर्मन मनोवैज्ञानिक - मैक्स वरथीमर ने रखी। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के समर्थकों में बोल्फगैंग कोहलर, कुर्ट कोफ्का तथा कुर्ट लेविन का भी नाम लिया जाता है।

लेविन का अधिगम सिद्धांत

96. मनोवैज्ञानिक जो अपने अधिगम सिद्धान्त में 'लाइफ स्पेस' को सम्बोधित करता है, वह है-
(a) थार्नडाइक (b) कोहलर
(c) कुर्ट लेविन (d) स्किनर

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) कुर्ट लेविन ने अपने अधिगम सिद्धांत में 'लाइफ स्पेस' को प्रमुख सम्प्रत्यय स्वीकार किया है। लेविन के अनुसार किसी प्राणी का लाइफ स्पेस वह स्थान होता है, जिसमें वह स्वयं मनोवैज्ञानिक रूप से रहता है तथा इसमें उसके अपने प्रत्यक्षण एवं विचार–बिन्दु समाहित रहते हैं।

97. क्षेत्र सिद्धान्त निम्न में किस वर्ग का सिद्धांत है-
(a) व्यवहारविदों का (b) संरचनाविदों का
(c) मनोविश्लेषकों का (d) गेस्टाल्टवादियों का

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (d) अधिगम सम्बन्धी क्षेत्र सिद्धांत कुर्ट लेविन द्वारा प्रतिपादित किया गया है। लेविन एक गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक हैं। लेविन का क्षेत्र सिद्धांत सामान्य शब्दावली में यह कहता है कि "मानव व्यवहार व्यक्ति और वातावरण दोनों का प्रतिफल है जिसे सांकेतिक रूप में B = f(P.E) द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

98. इनमें से कौन व्यवहारवादी नहीं है?
(a) वाटसन (b) स्किनर
(c) पॉवलव (d) लेविन

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) जे.बी. वाटसन व्यवहारवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों में बी.एफ. स्किनर, ईवान पी. पावलव, क्लार्क हल, एडवर्ड टॉलमैन आदि का नाम प्रमुख है। जबकि कुर्ट लेविन, कुर्ट कोफ्का, वोल्फगैंग कोहलर आदि गेस्टाल्टवादी (समग्रवाद) मनोवैज्ञानिक थे।

बण्डूरा का अधिगम सिद्धांत

99. सामाजिक अधिगम आरम्भ होता हैः
(a) अलगाव से (b) भीड़ से
(c) संपर्क से (d) दृश्य श्रव्य सामग्री से

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) सामाजिक अधिगम लोगों के सम्पर्क में आने पर आरम्भ होता है। जितना अधिक लोगों के साथ सम्पर्क बनेगा सामाजिक अधिगम उतना ही अधिक होगा।

100. प्रेक्षणात्मक अधिगम सम्प्रत्यय ...... द्वारा दिया गया था।
(a) टोलमैन (b) बैण्डूरा
(c) थॉर्नडाइक (d) कोहलर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) प्रेक्षणात्मक अधिगम का सम्प्रत्यय (संकल्पना) अल्वर्ट बैण्डूरा के द्वारा दिया गया है। प्रेक्षणात्मक अधिगम सम्प्रत्यय का निर्माण दूसरों के व्यवहारों का प्रेक्षण करने से होता है। इसे पहले अनुकरण कहा जाता था। बण्डूरा ने कई प्रायोगिक अध्ययनों में प्रेक्षणात्मक अधिगम की विस्तृत खोजबीन की। इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को सीखता है इसलिए इसे कभी-कभी सामाजिक अधिगम भी कहा जाता है। हमारे सामने ऐसी अनेक सामाजिक स्थितियाँ आती हैं, जिनमें यह ज्ञात नहीं रहता कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए ऐसी परिस्थितियों में हम दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण करते हैं और उनकी तरह व्यवहार करते हैं।

101. एल्बर्ट बैन्ड्यूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार निम्न में से कौन-सा सही है?
(a) बच्चों के सीखने के लिए प्रतिरूपण (मॉडलिंग) एक मुख्य तरीका है।
(b) अनसुलझा संकट बच्चे को नुकसान पहुँचा सकता है।
(c) संज्ञानात्मक विकास सामाजिक विकास से स्वतंत्र है।
(d) खेल अनिवार्य है और उसे विद्यालय में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (a) एल्बर्ट बैन्ड्यूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार बच्चों के सीखने के लिए प्रतिरूपण एक मुख्य तरीका है।

102. अल्बर्ट बण्डूरा निम्न में से किस सिद्धांत से सम्बन्धित हैं-
(a) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
(b) व्यवहारात्मक सिद्धान्त
(c) विकास का संज्ञानात्मक सिद्धान्त
(d) विकास का मनो-सामाजिक सिद्धांत

UPTET (I-V) 15 October 2017
UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) अल्बर्ट बण्डूरा ने वर्ष 1969–71 में सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया। सामाजिक अधिगम सिद्धांत, अधिगम के संज्ञानात्मक क्षेत्र के सिद्धांत के अंतर्गत आता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है वह दूसरों को देखकर, सुनकर व समझकर सीखता है।

103. एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबंदी सीखता है; यह एक उदाहरण है–

(a) वाचिक अधिगम का (b) प्रेक्षण अधिगम का
(c) कौशल अधिगम का (d) अधिगम अंतरण का

UPTET (I-V) 2014

Ans : (b) जब विद्यार्थी कोई कार्य अपने से बड़ो या समवयस्कों के व्यवहार को देखकर उसे अपने व्यवहार में प्रयोग करता है तो वह प्रेक्षण अधिगम या अनुकरण कहलाता है। अतः विद्यार्थी जब अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है तो यह प्रेक्षण अधिगम का उदाहरण होगा।

बालकों का विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का अर्थ, कारण एवं उपाय

104. निम्न में से कौन-सा छात्रों के पलायन का कारण नहीं होता?

(a) अरुचिकर विद्यालयी कार्यक्रम
(b) अध्यापक का पक्षपातपूर्ण व्यवहार
(c) बहुत अधिक गृह कार्य
(d) बहुत अधिक छुट्टियाँ

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) विद्यालय से छात्रों के पलायन के कारण निम्न है-

→ विद्यालय का वातावरण
→ अरुचिकर पाठ्यक्रम
→ पक्षपातपूर्ण व्यवहार
→ आवश्यकता से अधिक गृहकार्य देना
→ कठोर दण्ड व्यवस्था आदि

EXAM POINT

- तर्कणा के कितने प्रकार होते हैं– **दो**
- किस प्रकार की सोच का विकास बच्चों में स्थायी ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन माना जाता है– **अनुभव के आधार पर सोच**
- ''सीखना, अनुभव या व्यवहार में परिवर्तन है।'' यह कथन किस विद्वान का है– **गेट्स का**
- सीखने की किस विधि का प्रतिपादन बैण्डुरा द्वारा किया गया– **प्रेक्षण द्वारा सीखना**
- सीखने (Learning) के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता– **व्यवहार का अध्ययन सीखना है**
- विद्यार्थियों को एकांकी तथ्यों और प्रक्रियाओं को याद करने के योग्य बनाना, यह लक्षण प्रदर्शित नहीं करता– **'समझ के लिए शिक्षण' को**
- सीखना उस वातावरण में प्रभावी होता है, जो संवेगात्मक रूप से सकारात्मक हो और शिक्षार्थियों को सन्तुष्ट करने वाला हो, यह कथन सही है– **'सीखने' (Learning) के बारे में**
- शैक्षिक संस्थान ही एक मात्र स्थान है जहाँ अधिगम (Learning) प्राप्त होता है, यह विशेषता नहीं मानना चाहिए– **सीखने की प्रक्रिया की**
- यदि वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए जिमसें विद्यार्थी एक दूसरे से अन्तःक्रिया करे और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाएँ, तब– **सीखना समृद्ध हो सकता है**
- पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान देखता है, बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है, राजू शोर सुनकर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शान्ति के पश्चात् बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त (Learning Theory) का उदाहरण है– **शास्त्रीय अनुबन्धन (Classical Conditioning)**
- ''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।'' यह कथन है– **वुडवर्थ का**
- 'तत्परता का नियम' दिया– **थार्नडाइक ने**
- मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने व्यक्ति को बाँटा है– **चिन्तन व कल्पना शक्ति के आधार पर**
- सीखने के नियम के प्रतिपादक हैं– **थार्नडाइक**
- सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम का सिद्धान्त एवं प्रबलन का सिद्धान्त है– **अधिगम का व्यावहारिक सिद्धान्त**
- शिक्षार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर एवं उत्सुकता और इच्छाशक्ति प्रभावित करते हैं– **सीखने को**
- एक शिक्षिका पाठ्यवस्तु और फल सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है, विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम आधारित है– **ज्ञान के निर्माण पर**
- जब बच्चा कार्य करते हुए ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि– **सम्भवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है**
- जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह कहलाता है– **अधिगम का शून्य स्थानान्तरण**
- चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक– **संज्ञानात्मक गतिविधि**
- चिन्तन के सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त में चरण आते हैं– **श्रेणीकरण**
- सीखने सम्बन्धी निर्योग्यताएँ सामान्यतः उन बच्चों में पायी जाती है जिनके– **पैत्रिक अभिभावक इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते हैं**
- सीखने में सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर संकेत करती है– **सीखने की तत्परता की ओर**

- सीखने की क्रिया को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **अनुकरण, प्रशंसा, निन्दा एवं प्रतियोगिता**
- बालक की वैयक्तिकता का आदर, पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा एवं भर्त्सना को उपयोगी माना जाता है– **बालकों के सीखने में प्रेरणा के रूप में**
- पावलॉव ने सीखने के अनुबन्धन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था– **कुत्ते पर प्रयोग करके**
- अधिगम कार्य के लिए विद्यार्थियों की तत्परता का आकलन करना शिक्षकों के लिए कठिन है क्योंकि– **तत्परता के सभी तत्व एक साथ परिपक्व नहीं होते**
- चिन्तन शक्ति के विकास की प्रक्रिया में गलत है– **कम बुद्धि व ज्ञान**
- अधिगम का सबसे उपयुक्त कार्य है– **व्यवहार परिवर्तन**
- बालक जब सीखने के लिए तैयार होता है, तब वह जल्दी व प्रभावशाली तरीके से सीखता है। यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है– **थार्नडाइक द्वारा**
- बालक का चिंतन प्रदर्शित नहीं होता है– **वैयक्तिकवाद के द्वारा**
- चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है। यह कथन दिया गया है– **रॉस द्वारा**
- थार्नडाइक का वह नियम जो सीखने में पुरस्कार और दण्ड के महत्व को बताता है– **प्रभाव का नियम**
- शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्या है– **विषय-वस्तु को समझने की समस्या**
- छात्रों के द्वारा अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग प्रभावित करता है– **अधिगम उत्पाद एवं प्रक्रिया को**
- अपने चिन्तन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को– **स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए**
- जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है– **कार्य को छोटे हिस्सों में बाँटने के लिए निर्देश लिखकर**
- सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होता है– **सीखना**
- एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उपयोग कहलाता है– **सीखने में स्थानान्तरण**
- अधिगम में प्रयत्न व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया– **थार्नडाइक ने**
- अधिगम का क्रिया प्रसूत सिद्धान्त दिया गया– **स्किनर द्वारा**
- अधिगम अन्तरण का थार्नडाइक सिद्धान्त कहा जाता है– **अनुरूप तत्वों का सिद्धान्त**
- सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल ''अवलोकनीय व्यवहार'' (Observable behaviour) पर आधारित होता है, सम्बद्ध है– **सीखने के व्यवहारवादी (Behaviourist) सिद्धान्त से**
- अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत के रूप में विवेचित किया जाता है– **विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना**
- एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण है– **विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना**
- विद्यालय से विद्यार्थियों के भाग जाने का कारण है– **समस्या के प्रति शिक्षकों की निर्दय अभिवृत्ति**
- एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप में इसका अर्थ है कि– **वह अधिक जिज्ञासु है**
- बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप किस विधि का चयन करेंगे– **बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे**
- शिक्षणार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर एवं उत्सुकता और इच्छाशक्ति, ये सभी कारक प्रभावित करते हैं– **सीखने को**
- जब बच्चा फेल होता है, तो इसका तात्पर्य है– **व्यवस्था फेल हुई है**
- सीखने का क्षेत्र है– **आनुभविक**
- बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगम-योग्य वातावरण के लिए उपयुक्त है– **विद्यार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है**
- सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम सम्बन्धित है– **तत्परता से**
- व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है– **सीखना**
- कक्षा-कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चे को– **चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके**
- शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा करना कि वे ज्ञान को उसी रूप में प्रस्तुत कर देंगे, जिस रूप में उन्होंने ग्रहण किया है– **समस्यात्मक है, क्योंकि व्यक्ति अनुभवों की व्याख्या करते हैं और ज्ञान को ज्यों का त्यों पुनः उत्पादित नहीं करते**
- सीखी हुई बात को स्मरण रखने या पुनः स्मरण करने की असफलता कहलाती है– **विस्मृति**

1. सरल रेखीय वक्र– इस वक्र में सीखने की दर एक समान होती है। सरल रेखीय वक्र कहलाती है।

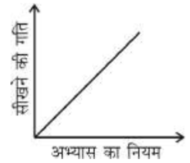

2. उन्नतोदर वक्र- इस वक्र में प्रारम्भिक सीखने की दर तीव्र और बाद में धीमी हो जाती है इस वक्र को उत्तल वक्र भी कहा जाता है।

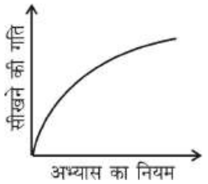

3. नतोदर वक्र– इस वक्र में सीखने की गति पहले धीमी होती है और बाद में तेज हो जाती है। इसको अवतल वक्र भी कहा जाता है।

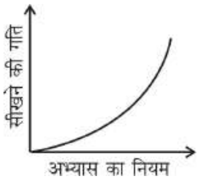

4. मिश्रित वक्र– इस वक्र में प्रारम्भ में सीखने की गति धीमी बाद में तेज, कुछ समय तक बनी रहती है तथा फिर तेज उसके बाद धीमी हो जाती है।

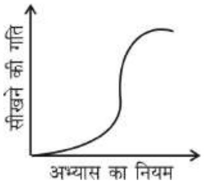

- मिश्रित वक्र का आकार होता है –S
- सीखने के वक्र में तीन प्रमुख तत्व है **–प्रारम्भिक तीव्रता पठार शारीरिक सीमा**
- पठार काल होता है **–एक प्रकार से पचने का काल**
- अधिगम वक्र की खोज की थी **–ब्रियान, हार्टर ने**
- वक्र के कितने प्रकार होते है **–चार**
- नकारात्मक वक्र की आकृति होती है **–उत्तल**
- ''अधिगम वक्र, अभ्यास द्वारा उसकी मात्रा, गति व उन्नति की सीमा का ग्राफ पर प्रदर्शन है'' कहा है **–गेट्स**

स्किनर के अनुसार– पठार क्षैतिज प्रसार है जिससे उन्नति का बोध नहीं होता है।'' इससे स्पष्ट है कि अधिगम की प्रक्रिया में एक स्थिति ऐसी अवश्य आ जाती है जब सीखने की गति में कोई प्रगति नहीं दिखाई देती। यह स्थिति ही पठार कहलाती है।

- सीखने की अवधि में पठार साधारणतया कुछ दिनों, सप्ताहें या महीनों तक रहते हैं, कथन है **–सोरेनस**

अधिगम के पठार के कारण–
1. शारीरिक सीमा
2. गलत पद्धति
3. प्रेरणा का अभाव
4. गलत क्रम
5. अभ्यास का अभाव
6. सामग्री का एकांकीपन
7. त्रुटियों का स्थानांतरण

- अधिगम की दार्शनिक आधार पर व्याख्या किस मनोवैज्ञानिक ने की है **–फ्रोबेल**
- सीखने के पठार का मुख्य कारण है **–उत्साहावरोध**
- जहाँ कोई व्यक्ति एक विशेष प्रणाली का अनुकरण करके पहुँचता है और वहीं रुक जाता है **–ज्ञानावरोध**
- सीखने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता पठार है। ये उस अवधि को बताते हैं, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती है, किसने कहा है? **–रॉस ने**
- सीखने में थकान, आदत और वातावरण का **–प्रभाव पड़ता है**
- परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने से विद्यार्थी में आ जाता है **–उत्साहवरोध**
- सीखने के पठारों का निराकरण सीखने के बाद किया जा सकता है **–विश्राम देकर**
- अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक है **–शारीरिक कारक मनोवैज्ञानिक कारक,**
- जब कोई व्यक्ति किसी कौशल को सीख लेता है अथवा किसी विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उस सीखे गये कौशल तथा प्राप्त किये गये ज्ञान का उपयोग किसी अन्य परिस्थितियों में करता है तो वह स्थिति अधिगम अथवा प्रशिक्षण का स्थानान्तरण कहलाती है। **–अधिगम अंतरण**
- जब किसी व्यक्ति को किसी पूर्व सीखे गये कार्य अथवा विषय के परिणामस्वरूप किसी अन्य कार्य या विषय को सीखना अथवा करना सामान्य रूप से सरल एवं सुविधाजनक लगता है तो इसे कहते है **–धनात्मक स्थानान्तरण**
- जब सीखा गया कोई कार्य, किसी अन्य कार्य को सीखने में कठिनाई उत्पन्न करता है तो उसे कहते है **–नकारात्मक स्थानान्तरण**
- अधिकतर व्यक्ति दायें हाथ से काम करते है, यदि कोई व्यक्ति समय आने पर सभी कार्य बायें हाथ से करने लगे तो इस स्थिति को कहेंगे **–द्विपक्षीय स्थानान्तरण**
- शिक्षा के क्षेत्र में किसी एक विषय का अध्ययन करते हुए प्राप्त किया गया ज्ञान आदि किसी अन्य विषय में समझने में सहायक हो तो इस स्थिति को कहते है **–क्षैतिज स्थानान्तरण**
- अधिगम के स्थानांतरण का प्रकार नही है**–समतल स्थानांतरण**
- अधिगम अथवा सीखने में स्थानांतरण के सिद्धान्त–
  1. एक समान तत्वों का सिद्धान्त
  2. सामान्यीकरण का सिद्धान्त
  3. मानसिक प्रभावों का सिद्धान्त
  4. दो तत्वों का सिद्धान्त
  5. गेस्टाल्ट सिद्धान्त
  6. हैरलो का अधिगम का सिद्धान्त
- स्थानांतरण को प्रभावित करने वाला कारक है **–बुद्धि, विषय की समानता, सामान्यीकरण**
- गणित विषय में प्रयोग किया जाता है **–दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री, दृश्य श्रव्य सामग्री**
- गृहकार्य है **–अभ्यास कार्य हेतु**
- गणित शिक्षण में ज्ञात से अज्ञात की ओर चलते है **–आगमन विधि**
- ''सीखना विकास की प्रक्रिया है'', कथन है **–वुडवर्थ**

- अधिगम की प्रक्रिया दो तत्व पर आधारित है **–परिपक्वता और पूर्व अनुभवों से लाभ**
- अधिगम की प्रक्रिया **–चेतन और अचेतन रूप में जीवन पर्यन्त चलती रहती है**
- अधिगम का आधार है **–परिपक्वता**
- ''व्यवहार के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं'' **–गिलफोर्ड के अनुसार**
- ''सीखने के नियमों के प्रतिपादक है'' **–थार्नडाइक**
- व्यवहार में कोई परिवर्तन जो अनुभवों का परिणाम है और जिसके फलस्वरूप व्यक्ति आने वाली स्थितियों का भिन्न प्रकार से सामना करता है **–अधिगम कहलाता है**
- ''नवीन ज्ञान और नवीन प्रक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया है'' कथन है **–वुडवर्थ का**
- अधिगम की क्रिया चेतन या अचेतन रूप में चलती है **–जीवनपर्यन्त**
- ''अधिगम किसी परिस्थिति में भिन्न ढंग से कार्य करने की क्षमता है, जो कि परिस्थिति के अनुसार पूर्व अनुभवों के कारण आती हैं'' कथन है **–गुथरी का**
- ''अधिगम व्यक्ति में एक परिवर्तन है, जो उसके वातावरण के परिवर्तन के अनुसरण में होता है'' कथन है **–पील का**
- अधिगम हो सकता है **–त्रुटि रहित या त्रुटि पूर्ण**
- ''जब किसी नये कार्य को करना सबलीकृत हो जाता है और कालान्तर की क्रियाओं में वह पुनः प्रकट होता है तो उस नये कार्य का करना अधिगम कहलाता है'' यह परिभाषा है **–वुडवर्थ की**
- अधिगम प्रक्रिया में चरण होते है **–4**
- अधिगम प्रक्रिया के चार चरण है **–आवश्यकता अथवा प्रयोजन, लक्ष्य समायोजन, परिवर्तन**
- अधिगम के सिद्धान्तों का वर्गीकरण **–समीपता सिद्धान्त, सबलीकरण सिद्धान्त, ज्ञानात्मक सिद्धान्त**

समीपता सिद्धान्त	पावलव का अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त
	वाटसन का अधिगम सिद्धान्त
	गुथरी का सामीप्य अनुकूलन सिद्धान्त
सबलीकरण सिद्धान्त	हल एवं उनकी परम्परा के सिद्धान्त
	यांत्रिक सबलीकरण का सिद्धान्त
ज्ञानात्मक सिद्धान्त	
1. चिन्ह अधिगम सिद्धान्त	टालमैन का चिह्न अधिगम सिद्धन्त
2. गेस्ट टाल्ट अधिगम सिद्धान्त	इसमें कोहलर का सूझ सिद्धान्त
	कोफ्का का पादक सिद्धान्त
3. गत्यात्म सिद्धान्त	इसमें लेबिन का क्षेत्र सिद्धान्त
	अधिगम का मनोविश्लेषनात्मक सिद्धान्त
4. बन्डूरा का प्रतिरूपण सिद्धान्त	
5. पियाजे का अधिगम का विकासात्मक सिद्धान्त	

- थार्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त से सम्बन्धित नहीं है– **सक्रिय अनुबन्ध का सिद्धान्त**
- स्किनर के सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त को अन्य किस नाम से जाना जाता है– **साधनात्मक अनुबन्ध व क्रिया प्रसूत अनुबन्ध**
- किस मनोवैज्ञानिक द्वारा एक भूखे चिम्पैंजी पर अपना प्रयोग किया– **कोहलर द्वारा**
- लेविन ने अधिगम सम्बन्धी सिद्धान्त में चार मुख्य तत्व बताए हैं। उनमें सही नहीं है– **उच्च शिक्षा**
- कार्ल रोजर्स ने अपने अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त में किसकी अधिगम प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए इस अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया– **प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए**
- तत्त्व प्रबलता का नियम, रुचि प्रबलता का नियम एवं साहचर्यात्मक स्थानान्तरण का नियम हैं– **पुनर्बलन के सिद्धान्त के सहायक नियम**
- अधिगम सम्बन्धी सिद्धान्त का तत्व नहीं है– **उच्च शिक्षा**
- ''एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।'' यह कथन सम्बन्धित है– **सीखने का 'प्रभाव-नियम'**
- शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है, जहाँ अधिगम प्राप्त होता है, यह कथन– **सीखने की प्रक्रिया की विशेषता नहीं है**
- वह सिद्धान्त जो यह दर्शाता है कि अपेक्षित व्यवहार के सन्निकट सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के फलस्वरूप व्यवहारात्मक विकास किया जा सकता है– **सामाजिक अनुबन्धन**
- एक शिक्षिका अपने-आप से कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम आधारित है– **सक्रिय भागीदारिता के सिद्धांत पर**
- सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है– **आंशिक पुनर्बलन**
- सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर संकेत करती है– **सीखने की तत्परता की ओर**
- विकास का वही सम्बन्ध परिपक्वता से है, जो उद्दीपन का है– **प्रतिक्रिया से**
- थॉर्नडाइक का व्यक्तित्व के वर्गीकरण का आधार है– **चिंतन और कल्पना**
- अधिगम को सकारात्मक प्रकार से प्रभावित करता है– **अर्थपूर्ण सम्बन्ध**
- अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन द्वारा सीखी जाती है, यह मानना है– **व्यवहारवादी स्किनर का**

02.

अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ

शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य एवं इनके प्रकार

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र का सही क्रम है–

(a) ज्ञान–अनुप्रयोग–अवबोध–विश्लेषण–संश्लेषण–मूल्यांकन
(b) मूल्यांकन–अनुप्रयोग–विश्लेषण–संश्लेषण–अवबोध– ज्ञान
(c) मूल्यांकन–संश्लेषण–विश्लेषण–अनुप्रयोग–अवबोध– ज्ञान
(d) ज्ञान–अवबोध–अनुप्रयोग–विश्लेषण–संश्लेषण–मूल्यांकन

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (d) बेंजामिन एस ब्लूम ने शिक्षण के उद्देश्यों को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया–
(i) संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्य
(ii) भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्य
(iii) मनोगात्यात्मक क्षेत्र के उद्देश्य
ब्लूम ने वर्ष 1956 में संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को पुनः क्रमशः 6 भागों में विभाजित किया, जो इस प्रकार हैं–
(1) ज्ञान (2) अवबोध (3) अनुप्रयोग (4) विश्लेषण (5) संश्लेषण (6) मूल्यांकन।

2. As a teacher you asked your students to write an essay explaining the impact of pollution on our life. Which cognitive level of Bloom's taxonomy is best illustrated by this assignment?/एक शिक्षक के रूप में आपने अपने छात्रों से हमारे जीवन पर प्रदूषक के प्रभाव को समझाते हुए एक निबंध लिखने के लिए कहा। इस कार्यभार से ब्लूम के वर्गीकरण के कौन से संज्ञानात्मक स्तर की व्याख्या की गई है?

(a) Analysis/विश्लेषण (b) Application/संप्रयोग
(c) Comprehension/समझ (d) Knowledge/ज्ञान

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (b) : यदि कोई शिक्षक, छात्रों से अपने जीवन पर प्रदूषक के प्रभाव को समझाने के लिए एक निबन्ध लिखने को कहता है, तो यह कार्यभार ब्लूम के संज्ञानात्मक पक्ष के संप्रयोग पर आधारित होगा। संप्रयोग के अन्तर्गत छात्र विभिन्न कार्यपरक क्रियाएँ करता है जैसे-व्याख्या करना, जाँच करना, निर्माण करना, खोज करना, समाधान करना इत्यादि।

3. Which domain is not named in Bloom's taxonomy?/कौन सा प्रक्षेत्र ब्लूम के वर्गीकरण में नामित नहीं है?

(a) Cognitive/संज्ञानात्मक
(b) Conative/क्रियात्मक
(c) Affective/भावात्मक
(d) Psychomotor/मनोप्रेरणा

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (*) : ब्लूम की वर्गिकी (ब्लूम टेक्सॉनोमी) वर्ष 1956 में महान शैक्षिक मनोवैज्ञानिक डॉ. बेंजामिन ब्लूम द्वारा दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के अवधारणाओं, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों के विश्लेषण का मूल्यांकन करना है। इनके द्वारा शिक्षा को सीखने के रूपों और स्तरों के वर्गीकरण का प्रयास किया गया है। ब्लूम टेक्सॉनोमी में उच्च स्तर को प्रभावी ढंग से प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि निचले स्तर को न प्राप्त किया गया हो इसलिए ब्लूम टक्सॉनोमी का वर्गीकरण 3 भागों में किया गया है–
(i) संज्ञानात्मक पक्ष (Congitive Domain)
(ii) भावात्मक पक्ष (Affective Domain)
(iii) क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain)
नोट–अगर देखा जाए तो क्रियात्मक तथा मनोप्रेरणा का मतलब लगभग एक ही है। अतः प्रश्नानुसार कोई विकल्प सही नहीं है।

4. संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर है

(a) ज्ञान (b) बोध
(c) अनुप्रयोग (d) विश्लेषण

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर ज्ञान है। संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति क्रमशः छः चरणों मे होता है- ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन।

5. शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा करना कि वे ज्ञान को उसी रूप में पुनः प्रस्तुत कर देंगे जिस रूप में उन्होंने उसे ग्रहण किया है।

(a) अच्छा है, क्योंकि यह शिक्षक के लिये आकलन में सरल है
(b) एक प्रभावी आकलन युक्ति है
(c) समस्यात्मक है, क्योंकि व्यक्ति अनुभवों की व्याख्या करते हैं और ज्ञान को ज्यों-का-त्यों पुनः उत्पादित नहीं करते
(d) अच्छा है, क्योंकि जो भी हमारे मन में हैं हम उसे रिकार्ड करने लगते है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) यह परिस्थिति समस्यात्मक है कि शिक्षार्थी ज्ञान को उसी रूप में पुनः प्रस्तुत करें जिस रूप में उन्होंने ग्रहण किया है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति/शिक्षार्थी किसी विषय पर प्राप्त ज्ञान को अपने अनुभव के द्वारा व्याख्या करता है तथा ज्ञान को ज्यों का त्यों

पुन: उत्पादित नहीं करता। ज्ञान को ज्यों का त्यों उत्पादित करना रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है तथा इससे मानसिक तथा बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

6. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन शिक्षण के संदर्भ में सही नहीं है?

(a) शिक्षण एक अन्त: क्रियात्मक प्रक्रिया है
(b) शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है
(c) शिक्षण एक प्रभाव–निर्देशित प्रक्रिया है
(d) शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया है

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो खेल के मैदानों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, वाचनालयों, संगोष्ठियों या अन्य वास्तविक परिस्थितियों में सम्पन्न होती है।

7. निम्न में से कौन–सा संज्ञानात्मक क्षेत्र से संबंधित नहीं है?

(a) अनुमूल्यन (b) अनुप्रयोग
(c) बोध (d) ज्ञान

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : बी.एस. ब्लूम तथा उनके सहयोगियों ने अपनी पुस्तक (Texonomy of Educational Objectives; Hand Book I; Cognitive Domain –1956) में लिखा है कि संज्ञानात्मक क्षेत्र में वे उद्देश्य होते हैं जो ज्ञान के पुन: स्मरण या पहचान तथा बौद्धिक योग्यताओं व कौशल के विकास से संबंधित होते हैं। ब्लूम ने संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को छ: वर्गों में विभाजित किया है–

1. ज्ञान 2. बोध
3. अनुप्रयोग 4. विश्लेषण
5. संश्लेषण 6. मूल्यांकन

8. बालक के व्यवहार का कौन सा पक्ष उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बंधित होता है?

उत्तर: भावात्मक पक्ष

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-बालक के व्यवहार का भावात्मक पक्ष उसकी रूचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बन्धित होता है। बालक के रूचियों, मनोवृत्तियों तथा आवश्यकताओ के आधार पर उसके व्यवहार में भी परिवर्तन होता रहता है अत: व्यवहार का भावात्मक पक्ष परिवर्तनीय होता है। बालक का जैसे-जैसे विकास होता है वैसे-वैसे उसके व्यवहार के भावात्मक पक्ष में स्थायित्व भी आता जाता है।

9. शिक्षा बच्चों की सहायक होती है, उनके–

(a) शारीरिक विकास में
(b) केवल मानसिक विकास में
(c) सर्वांगीण विकास में
(d) केवल चरित्र विकास में

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना होता है ताकि परिस्थितियों के साथ खुद का समायोजन स्थापित कर अपने बुद्धि का अधिकतम विकास कर सकें।

10. आपके अनुसार, शिक्षण है-

(a) एक प्रक्रिया (b) एक कला
(c) एक कौशल (d) (b) और (c) दोनों

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) शिक्षण कला एवं कौशल दोनों है अर्थात् शिक्षण कार्य करने से पूर्व शिक्षक किसी भी संबंधित संस्थान से व्यवस्थित रूप से शिक्षण के कौशल सीखता है, उसके बाद ही सफल शिक्षण कर पाता है। इसी प्रकार शिक्षण एक कला भी है, जो किसी व्यक्ति में विशेष रूप से होता है। इस प्रकार किसी अध्यापक में शिक्षण कला और कौशल दोनों होना आवश्यक होता है।

11. शिक्षा का उद्देश्य है-

(a) अच्छा नागरिक बनाना
(b) ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो समाज के लिए उपयोगी हों
(c) व्यवहारिकता का निर्माण करना
(d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) शिक्षा के निम्न उद्देश्य है-

1. मनुष्य के जन्मजात प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करना
2. बालक को अच्छा नागरिक बनाना
3. व्यक्तित्व का निर्माण करना
4. व्यवहारिकता का निर्माण करना
5. सत्य का ज्ञान कराना
6. मानसिक क्षमता का विकास करना आदि।

12. कक्षा शिक्षण में अधिगम को किस रूप में पहचाना जाता है?

(a) व्यक्तिगत समायोजन
(b) सामाजिक व राजनीतिक भिज्ञता
(c) व्यवहार परिवर्तन
(d) विशेष बड़े रोजगार के लिए तैयार करना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) कक्षा शिक्षण में अधिगम को व्यवहार परिवर्तन के रूप में पहचाना जाता है।

13. ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर उद्देश्य आधारित प्रश्नों के निर्माण में कौन-सा विकल्प असंगत है?

(a) विश्लेषण (b) मूल्यांकन
(c) आत्मानुभूति (d) अनुप्रयोग

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर उद्देश्य आधारित प्रश्नों के निर्माण में निम्न घटक का होना अति आवश्यक है- ज्ञान, समझ, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन, अनुप्रयोग। आत्मानुभूति ब्लूम के वर्गीकी का घटक नहीं है।

14. शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य हैं

(a) बालकों में विषयों का ज्ञान व उनका मानसिक विकास करना
(b) विषयों का ज्ञान देना व परीक्षा के लिए तैयार करना
(c) विषयों का ज्ञान देना व उसको कंठस्थ करवाना
(d) विषयों का ज्ञान देना व व्यावसायिक कौशल का विकास करना

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिक्षा का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा बालक अपने भावी जीवन की संरचना का निर्माण करते है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों को सम्बंधित विषय का ज्ञान कराना तथा बालकों के मानसिक क्षमता को विकसित करना है।

15. निम्न में से कौन-सा कथन शिक्षण के बारे में सत्य नहीं है?

(a) शिक्षण में सुधार किया जा सकता है
(b) शिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक है
(c) शिक्षण विज्ञान के साथ-साथ कला भी है
(d) शिक्षण अनुवेशन है।

REET–2011 (I-V) 31-07-2011

Ans: (d) शिक्षण अनुवेशन नहीं है बल्कि शिक्षण साहचर्य की भूमिका निभाता है जिसमें शिक्षक एवं छात्र दोनो का सम्बंध बना रहता है।

16. शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है

(a) अजीविका कमाना (b) बच्चे का सर्वांगीण विकास
(c) पढ़ना एवं लिखना सीखना (d) बौद्धिक विकास

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास करती है जिसके द्वारा वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

17. निम्नलिखित में कौन-सी संज्ञानात्मक क्रिया दी गई सूचना के विश्लेषण के लिए प्रयोग में लाई जाती है?

(a) वर्णन करना (b) पहचान करना
(c) अंतर करना (d) वर्गीकृत करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) किसी भी सूचना के मध्य अंतर करने या उनका आपस में तुलना करने के लिए, सूचनाओं का विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

18. निम्न में से किसने अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं किया?

(a) कोहलर (b) स्किनर
(c) बी.एस. ब्लूम (d) थार्नडाइक

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : बी.एस. ब्लूम तथा उसके सहयोगियों ने सन् 1956 में शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया था। जबकि कोहलर, मैक्स वरथीमर, कुर्ट कोफ्का तथा कुर्ट लेविन ने मिलकर अन्तर्दृष्टि अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
स्किनर ने अधिगम का क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धांत प्रतिपादित किया। थॉर्नडाइक ने अधिगम का सम्बन्धवाद सिद्धांत प्रतिपादित किया।

19. व्यवहार का 'करना' पक्ष .... में आता है?

(a) सीखने के गतिक क्षेत्र
(b) सीखने के भावनात्मक क्षेत्र
(c) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
(d) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र

UKTET-2014 (I-V)

Ans : (a) व्यवहार का 'करना' पक्ष सीखने के गतिक क्षेत्र में आता है। सीखने के गतिक क्षेत्र से तात्पर्य है उन क्रियाओं पर नियंत्रण जो शिशु को परिवेश के साथ समायोजन में सहयोग देती है। जैसे चलना, खड़ा होना आदि। इसके बाद उत्कृष्ट गतिक विकास होता है, जैसे– वस्तुओं तक पहुँचना, छूना, पकड़ना आदि।

शिक्षण की प्रक्रिया एवं अवस्थाएँ

20. शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी है

(a) आश्रित चर
(b) स्वतंत्र चर
(c) मध्यस्थ चर
(d) इनमें से कोई नहीं

REET–2015 (I-V) 16-02-2016

Ans. (a) : शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में तीन चर होते हैं– 1. शिक्षक, 2. विद्यार्थी, 3. पाठ्यक्रम
शिक्षक स्वतंत्र चर होता है, विद्यार्थी आश्रित चर तथा पाठ्यक्रम हस्तक्षेप/मध्यस्थ चर होता है।

21. शिक्षण एक प्रक्रिया है

(a) शिक्षक द्वारा अधिगमकर्ता को ज्ञान के स्थानान्तरण की
(b) अधिगम को निर्देशित करने की
(c) अनुदेशन देने की
(d) शिक्षण अधिगम का सरलीकरण करने की

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) शिक्षण अधिगम का सरलीकरण करने की एक प्रक्रिया है। बालक में सीखने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार अधिगम की इस प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाएं एवं समस्त शैक्षिक अवयव सहायक के रूप में होते हैं जिनका उद्देश्य अधिगम को सरल बनाना होता है।

22. शिक्षण के आधार पर इसके कितने चर है?

(a) 1 (b) 2
(c) 3 (d) 4

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) शिक्षण के आधार पर इसके तीन प्रकार के चर होते है-
1. शिक्षक 2. छात्र 3. पाठ्यक्रम

23. पाठ्यक्रम निम्नलिखित में से शिक्षण के कौन-से चर में आता है?

(a) आश्रित चर (b) मध्यस्थ चर
(c) स्वतन्त्र चर (d) इनमें से कोई नहीं

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण के तीन चर होते है
(i) मध्यस्थचर - पाठ्यक्रम (ii) आश्रित चर - छात्र
(iii) स्वतंत्र चर - शिक्षक

24. स्मिथ ने शिक्षण की त्रिध्रुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है

(a) अभिभावक को (b) शिक्षक को
(c) शिक्षार्थी को (d) पाठ्यक्रम को

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) स्मिथ ने त्रिध्रुवी प्रक्रिया में शिक्षक को कार्यवाहक, विद्यार्थी को लक्ष्य/उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम को मध्यस्थ चर माना है।

25. शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं

(a) शिक्षक (b) शिक्षार्थी
(c) पाठ्यक्रम (d) ये सभी

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (d) शिक्षण प्रक्रिया के मुख्यत: तीन अंग होते है- पाठ्यक्रम, छात्र, शिक्षक

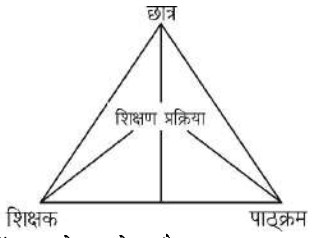

शिक्षण प्रक्रिया में छात्र केन्द्र होता है।

शिक्षण के स्तर

26. स्मृति स्तर एवं बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान की संरचना में कौन–सा सोपान उभयनिष्ठ है?

(a) सामान्यीकरण (b) अन्वेषण
(c) प्रस्तुतीकरण (d) तैयारी

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : स्मृति स्तर एवं बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान की संरचना में प्रस्तुतीकरण सोपान उभयनिष्ठ है।

स्मृति स्तर के सोपान		बोध स्तर के सोपान	
हरबर्ट ने स्मृति स्तर शिक्षण प्रतिमान की संरचना पाँच प्रमुख पदों में की है–		बोध स्तर शिक्षण प्रतिमान के जन्मदाता हेनरी सी मौरीसन हैं। इस प्रतिमान के निम्न सोपान हैं–	
1.	प्रस्तावना	1.	अन्वेषण
2.	प्रस्तुतीकरण	2.	प्रस्तुतीकरण
3.	स्पष्टीकरण तथा तुलना	3.	आत्मीकरण अथवा परिपाक
4.	सामान्यीकरण	4.	व्यवस्था
5.	प्रयोग	5.	वर्णन अथवा अभिव्यक्तिकरण

27. मॉरीसन ने बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान में पाँच पदों का वर्णन किया है वे हैं–

I. प्रस्तुतीकरण
II. खोज
III. संगठन/व्यवस्था
IV. आत्मीकरण
V. वाचन/अभिव्यक्तिकरण

इनकी सही क्रम है–

(a) IV, V, III, I, II (b) II, I, IV, III, V
(c) II, I, III, IV, V (d) I, II, III, IV, V

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : हेनरी सी. मौरीसन ने बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान में पाँच पदों का वर्णन किया है, जिसके सोपान निम्न हैं–

1. खोज/अन्वेषण (Exploration)
2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)
3. आत्मीकरण अथवा परिपाक (Assimilation)
4. संगठन/व्यवस्था (Organization)
5. वाचन/अभिव्यक्तिकरण (Recitation)

28. निम्न में से कौन–सा अवबोध स्तर के शिक्षण में शामिल है?

(a) पृथक्करण (b) अनुप्रयोग
(c) तुलना (d) अन्वेषण

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (d) बोध स्तर शिक्षण व्यवस्था को निम्नलिखित सोपानों में विभाजित किया गया है–

(i) अन्वेषण
(ii) प्रस्तुतीकरण
(iii) आत्मीकरण अथवा परिपाक
(iv) वर्णन अथवा अभिव्यक्तिकरण

29. भारतवर्ष में प्राइमरी शिक्षा निम्नलिखित पर बल देती है

(a) बोध का विकास करना
(b) आध्यात्मिक पक्ष पर बल देना
(c) विवेचनात्मक चिन्तन का विकास करना
(d) रटने को प्रेरित करना

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) बालकों को किसी भी स्तर या कही पर शिक्षा दी जाती है तो उसका मुख्य लक्ष्य बालकों के बौद्धिक क्षमता का विकास करना होता है।

शिक्षण वातावरण

30. निम्न में से कौन–सा अच्छे शिक्षण की विशेषता नहीं है?

(a) स्वेच्छाचारी
(b) जनतांत्रिक
(c) सहानुभूतिपूर्ण
(d) वांछनीय सूचनाएँ देने वाला

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (a) स्वेच्छाचारितापूर्ण शिक्षण वातावरण अच्छे शिक्षण की विशेषता नहीं होती है। प्रभावशाली व आनन्ददायक वातावरण में किये गये शिक्षण का प्रतिफल अधिगम के रूप में परिलक्षित हो जाता है। इसलिए शिक्षण का वातावरण जनतांत्रिक, सहानुभूतिपूर्ण, सहयोगात्मक तथा वांछनीय सूचनाएँ देने वाला होना चाहिए।

31. बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ–

(a) उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले
(b) उन्हें खेलने का मौका मिले
(c) उन्हें मित्र बनाने का मौका मिले
(d) कड़ा अनुशासन हो

UKTET 2014 (I-V)

Ans : (a) बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले। अत: अध्यापक को कक्षा–शिक्षण करते समय सहानुभूति तथा सहयोगात्मक व्यवहार करना चाहिए और बच्चों के अनुभवों और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

32. एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए-

(a) प्रगतिशील भूमिका में (b) प्रभुत्ववादी भूमिका में
(c) प्रजातांत्रिक भूमिका में (d) प्रभावशाली भूमिका में

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) शिक्षक को कक्षा में प्रजातांत्रिक भूमिका का निर्वहन करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में डर एवं भय का एहसास समाप्त हो जाए तथा शिक्षक-छात्र वार्तालाप सुचारू रुप से चलता रहे।

33. कौन सा सीखना स्थायी होता है?

(a) रटकर (b) सुनकर
(c) समझकर (d) देखकर

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) समझकर सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। जबकि रटकर, सुनकर, देखकर सीखा हुआ ज्ञान स्थायी नहीं होता। अत: विकल्प (c) सही है।

34. अपनी कक्षा के एक विद्यार्थी की प्रवृत्ति को यदि शिक्षक बदलना चाहता है, तो उसे.........

(a) विद्यार्थी के साथ कड़ाई से पेश आना होगा
(b) कक्षा के अन्य विद्यार्थियों को उससे न जानने योग्य दूरी बनाए रखने के लिए कहना होगा
(c) उसके समूह के सभी सदस्यों की प्रवृत्ति बदलनी होगी
(d) विद्यार्थी को पढ़ने के प्रति प्रेरित करना होगा

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (c) बालक की प्रवृति उसके संगत से मिलती है अत: यदि किसी एक बालक की प्रवृति में परिवर्तन करना हो तो उस बालक के संगत में रहने वाले सभी बालकों के प्रवृत्तियों में सामूहिक रूप से बदलाव का प्रयास करना चाहिए। अन्यथा बालक पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

35. बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगमयोग्य वातावरण के लिए निम्नलिखित में से कौन उपयुक्त हैं?

(a) शिक्षार्थियों को कुछ यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है।
(b) एक लंबे समय के लिए निष्क्रिय रूप से सुनना।
(c) निरंतर गृहकार्य देते रहना।
(d) सीखने वाले द्वारा व्यक्तिगत कार्य करना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (a) अधिगमयोग्य वातावरण में सबसे उपयुक्त है कि शिक्षार्थी पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो कि वह क्या सीखना चाहता है और किसमें उसकी रुचि है ताकि वह बिना किसी कठिनाई के सीख सके और कर सके। अत: शिक्षार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है अधिगमयोग्य वातावरण के लिए सबसे उपयुक्त है।

शिक्षण का संगठन एवं नियोजन

36. पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता कौन थे?

उत्तर: हरबर्ट

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता हरबर्ट थे। हरबर्ट ने अपने शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा मनोविज्ञान के आधार पर अध्यापन की एक सामान्य प्रणाली का प्रतिपादन किया। प्रारम्भ में इसके चार भाग थे- (1) स्पष्टता (2) सम्बन्ध (3) व्यवस्था या प्रणाली (4) विधि

हरबर्ट के अनुयायियों ने कुछ साधारण संशोधन करने के उपरान्त इसे हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली का स्वरूप दिया जो निम्न है-

(1) प्रस्तावना
(2) प्रस्तुतीकरण
(3) तुलना व सहयोग
(4) नियमीकरण
(5) अनुप्रयोग

37. शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक को

(a) छात्रों को खड़ा करना चाहिए
(b) छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए
(c) श्याम-पट को साफ करना चाहिए
(d) छात्रों को चुप रहने के लिए कहना चाहिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक को छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए क्योंकि इससे छात्रों की ग्रहण क्षमता बढ़ जाती है एवं कक्षा-कक्ष में अनुशासन स्थापित हो जाता है। अत: शिक्षण कार्य अत्यधिक प्रभावी हो जाता है।

शिक्षण के सिद्धांत

38. बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है, जब–

(a) अधिगम सामाजिक संदर्भ में हो।
(b) विषय-वस्तु को बहुरूपों में प्रस्तुत किया गया हो।
(c) सूचना अलग-अलग टुकड़ों में प्रस्तुत की जाए।
(d) वो आंतरिक रूप से अभिप्रेरित हो।

C TET (I-V) 31 January 2021

Ans. (c) : बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है, जब सूचना को अलग-अलग टुकड़ों में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए कक्षा शिक्षण करते समय अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि सूचनाएँ एक निश्चित क्रम में हों तथा वे आपस में अंतःसम्बन्धित भी हों। शिक्षक को यह भी कोशिश करना चाहिए कि सूचना के मुख्य स्रोत के बारे में भी विद्यार्थियों को यथासम्भव बताएं। इससे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में एक संरचना बन जाती है और अधिगम अनुभव स्थायी होता है।

39. शिक्षण सबसे अधिक प्रभावी होता है जब–

(a) विद्यार्थी विषय में रुचि लेते हैं।
(b) शिक्षक को विषय का गहन ज्ञान हो।
(c) विद्यार्थियों को उनके मानसिक स्तर के अनुरुप शिक्षा दी जाए।
(d) एक ही विषय-वस्तु को बार-बार दोहराया जाए।

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) शिक्षण सबसे ज्यादा प्रभावी तब होगा जब विद्यार्थियों को उसके मानसिक स्तर के अनुरुप शिक्षा दी जाय। इसके लिए शिक्षक को बौद्धिक भिन्नता तथा वैयक्तिक भिन्नता का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

40. बालकों में अधिगम

(a) ज्ञान को रटने से होता है
(b) पाठ्यपुस्तक को पढ़ने से होता है
(c) शिक्षक द्वारा ज्ञान के स्थानान्तरण द्वारा होता है
(d) क्रिया करके होता है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) बालकों में अधिगम का विकास क्रिया करके होता है। अनुभव के द्वारा सीखे गये तथ्य अधिक प्रभावशाली होते हैं। प्रकृतिवादी रूसो के अनुसार जलती हुई मोमबत्ती छू लेने पर बच्चे को यह बताने की आवश्यकता नहीं रह जाती कि आग जला भी देती है।

41. अधिगम प्रभावशाली रूप से होता है, यदि

(a) बच्चे को सीखने के लिए तत्पर किया जाये
(b) बच्चा, जो वह सीखता है उसे दुहराये
(c) बच्चा संतुष्ट अनुभव करे
(d) बच्चा उपर्युक्त सभी करे

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम प्रभावी तब होता है जब निम्न कार्य किए जाए -
1. बच्चों को सीखने के लिए तत्पर किया जाए
2. बच्चों को बार-2 दोहराने की प्रक्रिया कराई जाए
3. बच्चों द्वारा संतुष्टि का अनुभव किया जाय
4. बच्चे क्रिया विधि द्वारा अधिगम करे
5. खेल विधि का प्रयोग अधिगम के लिए किया जाए
6. कक्षा-कक्ष का वातावरण शांत हो

42. शिक्षण और अधिक प्रभावी हो सकता है, यदि

(a) छात्रो को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता दिया जाये
(b) छात्र अधिगम शिक्षक द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित हो
(c) शिक्षक तथ्यों की व्याख्या करने में केन्द्रीय भूमिका निभाये
(d) शिक्षक अधिगम को निर्देशित करे

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) छात्र जो भी कार्य स्वयं करते है वे उसे जल्दी सीख जाते है इसलिए करके सीखने की विधि को सबसे प्रभावी शिक्षण माना जाता है।

43. प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए निम्न में किसे बेहतर मानते हैं?

(a) विडीयो अनुरूपण
(b) प्रदर्शन
(c) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव
(d) इनमें से सभी।

REET–2011 (I-V) 31-07-2011

Ans: (c) प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए स्वयं के द्वारा प्राप्त किए गये अनुभव से प्राप्त शिक्षा सबसे बेहतर मानी जाती है क्योंकि स्वयं के अनुभव से प्राप्त शिक्षा जीवन पर्यन्त स्थिर रहती है।

44. बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन-सी विधि का चयन करेंगे?

(a) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछेंगे
(b) स्वयं गतिविधि करेंगे तथा बच्चों को बताएँगे
(c) आप गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे
(d) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) बच्चे द्वारा स्वयं कार्य करने से उनमें रुचि का विकास होता है क्योंकि इसमें बच्चों को कार्य करने की स्वतंत्रता होती है तथा उन्हें अलग-अलग तरीकों का प्रयोग करने की भी स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

45. जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है

(a) प्रतियोगिता को बढ़ावा देकर और सबसे पहले कार्य पूरा करने वाले बच्चे को पुरस्कार देकर
(b) कोई भी सहायता न देकर, जिससे बच्चे अपने आप निर्वाह करना चाहिए
(c) उस पर एक भाषण देकर
(d) कार्य को छोटे हिस्सों में बाँटने के बाद निर्देश लिखकर

C TET 2016 (I-V)

Ans : (d) वर्तमान शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होता है उसी के इर्द–गिर्द शिक्षण प्रक्रिया संचालित की जाती है। बालक के समक्ष जब जटिल परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तो यह अधिगम प्रक्रिया को बाधित करते हैं इसलिए शिक्षक जटिल शिक्षण परिस्थितियों को संसाधित करने के लिए कार्य को छोटे–छोटे हिस्सों में बाँट कर उस पर निर्देश के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन करता है।

46. सीखना समृद्ध हो सकता है यदि

(a) वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए जिसमें विद्यार्थी एक–दूसरे से अन्त:क्रिया करें और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाए
(b) कक्षा में अधिक–से–अधिक शिक्षण–सामग्री का प्रयोग किया जाए
(c) शिक्षक विभिन्न प्रकार के व्याख्यान और स्पष्टीकरण का प्रयोग करें
(d) कक्षा में आवधिक परीक्षाओं पर अपेक्षित ध्यान दिया जाए

C TET 2011 (I-V)

Ans : (a) सीखना तब अधिक प्रभावशाली होता है जब सीखी जाने वाली विषय–वस्तु का सम्बन्ध बालक के वास्तविक जीवन से होता है। अत: वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में प्रयोग करने से, जिसमें विद्यार्थी एक दूसरे से अन्त:क्रिया करते हैं और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं, से सीखना समृद्ध हो सकता है।

47. कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को उचित है

(a) श्यामपट्ट का प्रयोग करना (b) चर्चा करना
(c) कहानी कहना (d) प्रश्न पूछना

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) कक्षा में छात्रों की रुचि एवं उत्सुकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक छात्र से पूर्वज्ञान से सम्बंधित प्रश्न पूछे साथ ही शिक्षण के बीच में भी समय–समय पर प्रश्न पूछकर छात्रों की उत्सुकता शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बनाये रखना चाहिए।

48. यदि कुछ विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन की चित्तवृत्ति में नहीं है, तो आप

(a) उन्हें अध्ययन के लिए बाध्य करेंगे
(b) उन विद्यार्थियों को कक्षा छोड़ने के लिए कहेंगे
(c) उन्हें चेतावनी देंगे कि वे अवश्य अध्ययन करें नहीं तो आप प्रधानाध्यापक को सूचित कर देंगे
(d) उन्हें उनकी रुचि अथवा आप अपने विषय के अनुसार रुचिपूर्ण चीजें बताएँगे

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) अध्ययन में चित्तवृत्ति न होने का तात्पर्य अध्ययन में रुचि न लेना है। अगर कुछ छात्रों द्वारा इस तरह की प्रवृति अपनाई जाती है तो शिक्षक को अपने विषय वस्तु से सम्बंधित उनकी रुचि के अनुसार शिक्षण करना चाहिए। शिक्षण कार्य को मनोरंजक एवं रुचिकर बनाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का भी प्रयोग किया जाता है।

49. एक पी.टी. (खेल) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्र-रक्षण को सुधारना चाहता है। निम्न में से कौन-सी युक्ति शिक्षार्थियों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सर्वाधिक सहायक है?

(a) शिक्षार्थियों को क्षेत्र-रक्षण का अधिक अभ्यास करवाना।
(b) शिक्षार्थियों को यह बताना कि क्षेत्र-रक्षण सीखना उनके लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है।
(c) बेहतर क्षेत्र-रक्षण और सफलता की दर के पीछे के तर्क को स्पष्ट करना।
(d) क्षेत्र-रक्षण को प्रदर्शित करना और शिक्षार्थी अवलोकन करना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (a) एक पी. टी. (खेल) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्र–रक्षण को सुधारने के लिए वह निरन्तर शिक्षार्थियों को क्षेत्र-रक्षण का अधिक अभ्यास कराये तथा बाद में उनका परीक्षण भी लें ताकि अभ्यास के दौरान कोई कमी रह गई हो तो वह परीक्षण में पता चल जाये और उसे सुधारा जा सके ऐसा करने से उसे अपना लक्ष्य पाने में सहजता होगी।

50. एक शिक्षिका अपनी प्राथमिक कक्षा में प्रभावी अधिगम को बढ़ा सकती है–

(a) अधिगम में छोटी-छोटी उपलब्धियों के लिए पुरस्कार देकर
(b) ड्रिल और अभ्यास के द्वारा
(c) अपने विद्यार्थियों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर
(d) विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन के साथ संबंधित करके

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (d) प्राथमिक कक्षा में शिक्षिका अपने अधिगम को प्रभावी कर सकती हैं विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन से सम्बन्धित करके। ऐसा करने से विद्यार्थी विषय वस्तु को अपने जीवन से जोड़कर देखते हैं और अधिगम प्रभावशाली बनता है।

शिक्षण के सूत्र

51. निम्न में से कौन–सा शिक्षण का सूत्र नहीं है?

(a) सरल से कठिन की ओर
(b) अनिश्चित से निश्चित की ओर
(c) दृश्य से अदृश्य की ओर
(d) निगमन से आगमन की ओर

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (d) हरबर्ट स्पेन्सर तथा कामेनियस ने निम्न प्रकार के शिक्षण सूत्रों का उल्लेख किया है–

1. सरल से कठिन की ओर
2. ज्ञात से अज्ञात की ओर
3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर
4. पूर्ण से अंश की ओर
5. अनिश्चित से निश्चित की ओर
6. दृश्य से अदृश्य की ओर
7. विशिष्ट से सामान्य की ओर
8. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
9. मनोवैज्ञानिक क्रम से तर्कसंगत की ओर
10. अनुभव से युक्तियुक्त की ओर
11. प्रकृति का अनुसरण

52. निम्न में से कौन-सा तरीका विज्ञान विषय को समझने के लिये उच्च प्राथमिक स्तर पर उपयुक्त नहीं है?

(a) वस्तुओं का प्रेक्षण करना व अवलोकनों को रिकार्ड/ दर्ज करना
(b) रेखाचित्र बनाना
(c) वास्तविक अनुभव प्रदान करना
(d) अमूर्त्तता के द्वारा विषय को सीखना।

REET–2012 (I-V) 09-09-2012

Ans: (d) उच्च प्राथमिक स्तर पर बालकों को विज्ञान विषय समझाने के लिए उन सभी प्रक्रियाओं का सहारा लेना आवश्यक है जिसमें वे स्वयं प्रत्यक्ष तौर पर अनुभव कर सकें क्योंकि तभी उनकी समझ विकसित होती है। अप्रत्यक्ष अनुभव आधारित ज्ञान के द्वारा विज्ञान को समझने में समस्या का सामना करना पड़ेगा।

53. कक्षा एक और दो स्तर के बच्चे–

(a) अमूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं
(b) मूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं
(c) पढ़कर शीघ्र सीखते हैं
(d) लिखकर शीघ्र सीखते हैं

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) कक्षा एक एवं दो स्तर के बच्चे एक ही आयु वर्ग (2–7 वर्ष) में आते हैं तथा इस आयु वर्ग के बच्चे अपने मूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं।

शिक्षण प्रविधियाँ

54. पश्च अन्वेषण तथा साधन–साक्ष्य विश्लेषण निम्न में से किसके उदाहरण है?

(a) स्वतःशोध (b) एल्गोरिदम

(c) मानसिक वृत्ति (d) प्रकार्यात्मक स्थिरता

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (a) स्वतः शोध विधि में व्यक्ति समस्या का समाधान करने के लिए सभी विकल्पों को नहीं ढूँढ़ता है बल्कि सिर्फ उन्हीं विकल्पों का चयन करके समस्या समाधान करने की कोशिश करता है, जो उन्हें संगत प्रतीत होते हैं। पश्च अन्वेषण तथा साधन साक्ष्य विश्लेषण इसकी दो प्रमुख प्रविधियाँ हैं।

55. कक्षा तीन के विद्यार्थियों के लिये निम्न में से कौन-सा शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका होगा?

(a) व्याख्यान विधि

(b) सृजनात्मक क्रियाकलाप

(c) समूह वार्तालाप

(d) प्रयोगशाला विधि

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013, 2015

Ans: (b) कक्षा तीन के विद्यार्थी बाल्यावस्था मे रहते हैं। इस अवस्था में बालक की रूचि पढ़ने-लिखने में नहीं होती अत: उनकी रूचि और ध्यान अध्ययन या शिक्षण में लगाने के लिए आवश्यक है कि उनको खेल विधि या सृजनात्मक क्रियाकलाप के द्वारा शिक्षा दी जाये जिसमें वे सक्रिय सहभागी बन कर सीख सकें।

56. शिक्षण हेतु मानसिक उद्वेलन प्रतिमान का प्रयोग निम्न में से किसके सुधार हेतु किया जाता है?

(a) समझ (b) अनुप्रयोग

(c) सृजनात्मकता (d) समस्या समाधान

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) शिक्षण हेतु मानसिक उद्वेलन प्रतिमान (Brain storming model) का प्रयोग सृजनात्मकता में सुधार हेतु किया जाता है। यह एक प्रकार से छात्रों को किसी विषय–वस्तु पर स्वतंत्र रूप से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

57. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है

(a) महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना

(b) सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों को प्रयोग करना

(c) कहानी-कथन पद्धति का प्रयोग करना

(d) क्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (d) प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है कि क्षमता के अनुसार विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि प्राथमिक स्तर के छात्र स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें।

58. बच्चों को समूह में कार्य देना एक प्रभावी शिक्षण-रणनीति है, क्योंकि –

(a) इससे शिक्षक का काम कम हो जाता है।

(b) छोटे समूह में कुछ बच्चों को दूसरे बच्चों पर हावी होने की अनुमति होती है।

(c) सीखने की प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे से सीखते हैं और परस्पर सहायता भी करते हैं।

(d) बच्चे अपना काम जल्दी करने में समर्थ होते हैं।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) बच्चों को समूह कार्य देना एक प्रभावी शिक्षण रणनीति है क्योंकि, बालक अपने साथी समूह से परस्पर क्रिया करके अनेक कौशल सीख जाते हैं तथा एक दूसरे की मदद करके मानवीय गुणों का विकास करते हैं।

शिक्षण प्रतिमान एवं उसके प्रकार

59. सूची–A तथा सूची–B को सुमेलित कीजिए।

सूची–A		सूची–B	
A.	ब्रुनर	I.	बुनियादी शिक्षण प्रतिमान
B.	ऑसुबेल	II.	सायनेक्टिक्स शिक्षण प्रतिमान
C.	ग्लेजर	III.	अग्रिम संगठक शिक्षण प्रतिमान
D.	गॉर्डन	IV.	सम्प्रत्यय उपलब्धि शिक्षण प्रतिमान
		V.	पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान

	A	B	C	D
(a)	IV	III	I	II
(b)	IV	III	II	I
(c)	I	II	III	V
(d)	III	I	II	V

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) :

सूची–A		सूची–B	
A.	ब्रूनर	IV.	सम्प्रत्यय उपलब्धि शिक्षण प्रतिमान
B.	ऑसुबेल	III.	अग्रिम संगठक शिक्षण प्रतिमान
C.	ग्लेजर	I.	बुनियादी शिक्षण प्रतिमान
D.	गॉर्डन	II.	सायनेक्टिक्स शिक्षण प्रतिमान

60. अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान किस परिवार से सम्बन्धित है?

(a) वैयक्तिक (b) सामाजिक अन्तःक्रिया

(c) सूचना प्रक्रियाकरण (d) व्यवहार परिमार्जन

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (c) ब्रूस आर. जोयस तथा मार्शवेल ने अपनी पुस्तक 'मॉडल्स ऑफ टीचिंग' में शिक्षण प्रतिमानों को चार भागों में बाँटा है–

(1) अंतः प्रक्रिया स्रोत

(2) सूचना प्रक्रिया करण

(3) व्यक्तिगत स्रोत प्रतिमान

(4) व्यवहार परिवर्तन स्रोत प्रतिमान

इन चार प्रकार के प्रतिमानों को पुनः कई विभागों में विभाजित किया गया है। जैसे– सूचना प्रक्रियाकरण को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है–

(i) निष्पत्ति सम्प्रत्यय प्रतिमान

(ii) अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान

(iii) आगमन प्रतिमान

(iv) जैविक विज्ञान पृच्छा प्रतिमान आदि।

शिक्षण की नवीन विधाएँ (रचनात्मक, छात्र केन्द्रित, अध्यापक केन्द्रित आदि)

61. निम्न में से कौन-सी परिपाटी, विद्यार्थियों में संकल्पनात्मक समझ में बढ़ोत्तरी करने में सहायक है?

(a) बारंबार परीक्षाएँ।
(b) अन्वेषण और संवाद।
(c) प्रतिस्पर्धा आधारित प्रतिस्पर्धाएँ।
(d) पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित शिक्षाशास्त्र।

C TET (I-V) 31 January 2021

Ans. (b) : अन्वेषण और संवाद, विद्यार्थियों में संकल्पनात्मक समझ में बढ़ोत्तरी करने में सहायक होती है। दूसरे शब्दों में, जब विद्यार्थियों को खोज करने (अन्वेषण करने), संवाद करने या सामाजिक अंतर्क्रिया स्थापित करने के पर्याप्त अवसर दिये जाते हैं, तब उनमें संकल्पनात्मक समझ बेहतर होती है। इसलिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को ऐसे कार्यों में लगाया जाए।

62. निम्न में से अध्यापन-अधिगम का सबसे प्रभावशाली माध्यम कौन-सा है?

(a) बिना विश्लेषण के अवलोकन करना।
(b) अनुकरण/नकल और दोहराना।
(c) विषय वस्तु को यंत्रवत याद करना।
(d) संकल्पनाओं के बीच संबंध खोजना।

C TET (I-V) 31 January 2021

Ans. (d) : संकल्पनाओं के बीच सम्बन्ध खोजना, अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। संकल्पनाओं के बीच सम्बन्ध खोजना, बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है और किसी भी घटना में कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित करने की योग्यता का विकास करता है। इसलिए वर्तमान प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों के रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए ऐसी शिक्षण संकल्पनाओं का उपयोग किया जाता है।

63. संरचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, अधिगम .... है–

(a) एक निष्क्रिय एवं व्यक्तिपरक प्रक्रिया
(b) जानकारी के अर्जन की प्रक्रिया
(c) अनुभव के परिणाम के रूप में व्यवहार में एक परिवर्तन होने की प्रक्रिया
(d) एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) संरचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, अधिगम एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया है। संरचनात्मक दृष्टिकोण पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त पर आधारित है इसके अनुसार ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजन किया जाता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है। वहीं वाइगोत्सकी ने समाज रचनावाद से प्रभावित संज्ञानात्मक विकास पर कार्य किया जो कि व्यक्तिगत रूप से सामाजिक अन्तरक्रिया की सहायता से वातावरण द्वारा ज्ञान के निर्माण पर बल देता है। इसीलिए संरचनात्मक दृष्टिकोण अधिगम को एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया मानता है।

64. संरचनावादी ढाँचे में, अधिगम प्राथमिक रूप से–

(a) अनुबंधन द्वारा अर्जित है।
(b) अवबोधन की प्रक्रिया पर केन्द्रित है।
(c) यंत्रवत् याद करने पर आधारित है।
(d) प्रबलन पर केन्द्रित है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) संरचनावादी ढाँचे में अधिगम प्राथमिक रूप से अवबोधन की प्रक्रिया पर केन्द्रित है। संरचनावादी ढाँचे के अनुसार ज्ञान का निर्माण अधिगमकर्ता के पूर्व ज्ञान/अनुभव पर आधारित होता है। विद्यार्थी वस्तुओं एवं उन्हें प्रस्तुत की गयी गतिविधियों से ही सक्रिय रूप से पुराने अनुभवों को नये विचारों से जोड़ते हुए ज्ञान का सृजन करता है।

65. संरचनावादी सिद्धांतों के अनुसार अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) अधिगम आवृत्तीय संबंध के द्वारा व्यवहारों का अनुबंधन है।
(b) अधिगम सक्रिय विनियोजन के द्वारा ज्ञान की संरचना की प्रक्रिया है।
(c) अधिगम पुनरुत्पादन एवं स्मरण की प्रक्रिया है।
(d) अधिगम यंत्रवत् याद करने की प्रक्रिया है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) संरचनावादी सिद्धांतों के अनुसार अधिगम सक्रिय विनियोजन के द्वारा ज्ञान की संरचना की प्रक्रिया है अर्थात् अधिगम किसी अनुबंधन द्वारा न होकर बल्कि एक सक्रिय ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया है। संरचनावादी सिद्धांतकारों में स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे तथा रसियन मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्सकी प्रमुख हैं। इन दोनों सिद्धान्तकारों का मानना है कि ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजित किया जाता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है।

66. 'समूह शिक्षण' है-

(a) संसाधनों, रुचि व विशेषता का इष्टतम उपयोग करने हेतु शिक्षकों के समूह द्वारा शिक्षण है
(b) शिक्षकों की अनुपलब्धता से निपटने का एक उपाय है
(c) स्कूल में शिक्षकों के समूहों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा को प्रोत्साहित करता है
(d) विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षण है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) समूह शिक्षण द्वारा विद्यालय के संसाधनों का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों के रुचि एवं विशेषताओं का अधिकतम उपयोग करते हुए शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को समूह में शिक्षा दी जाती है। इससे विद्यालय का खर्च एवं समय की बचत होती है और छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त होती है।

67. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के लिए अधिगम

(a) ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है
(b) निष्क्रियता से रटने की प्रक्रिया है
(c) कक्षा-कक्ष में ध्यानपूर्वक सुनने की प्रक्रिया है
(d) पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करने की प्रक्रिया है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) 6-11 वर्ष की आयु वर्ग के लिए अधिगम ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है।

68. अधिगम एक प्रविधि है

(a) तथ्यों को याद करने की
(b) पाठ्यपुस्तक में दिये गये विषय को याद करने की
(c) अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण करने की
(d) परीक्षा की तैयारी की

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अधिगम एक अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण करने की प्रविधि है।

69. कक्षा-कक्ष में शिक्षक प्रयास करता है

(a) छात्रों को अनुभव प्रदान करने का
(b) छात्रों को सहायक अधिगम वातावरण देने का
(c) छात्रों को चिन्तन का अवसर देने का
(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) कक्षा-कक्ष में अध्यापक को चाहिए कि वह ऐसे अध्ययन-अध्यापन का वातावरण तैयार करे जिसमें छात्र सरलता से सीख सके साथ ही साथ छात्रों को चिंतन करने व स्वयं क्रिया विधि द्वारा अनुभव प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध हो।

70. रचनात्मक लेख का नियोजन होना चाहिए

(a) केवल उन छात्रों के लिए जो कक्षा स्तर पर पढ़ते हैं
(b) केवल उन छात्रों के लिए जो लम्बे वाक्य को लिख सकते हैं
(c) केवल उन छात्रों के लिए जो समाचार-पत्र के लिए लिखना चाहते हैं
(d) सभी छात्रों के लिए

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) रचनात्मक लेख का नियोजन उन सभी बच्चों के लिए होनी चाहिए जो वाक्यों, भाषा और संदर्भों को भलीभाँति समझते हो। इसीलिए बच्चों से निबंध, यात्रावृतांत, संस्मरण आदि लिखवाये जाते हैं।

71. ''सीखने का वह मॉडल'' जो बच्चों की सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करता है:

(a) बैंकिंग मॉडल (b) रचनावादी मॉडल
(c) प्रोग्रामिंग मॉडल (d) उपरोक्त में कोई नहीं

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) रचनावादी मॉडल 'सीखने का वह मॉडल' है जो बच्चों में सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करता है। क्योंकि इस मॉडल में बच्चों को कार्य करने की स्वतंत्रता होती है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों में सृजनशीलता की उत्पत्ति होती है।

72. कक्षा में जो विद्यार्थी प्रश्न पूछते हैं उन्हें

(a) कक्षा के बाद शिक्षक से मिलने की सलाह दी जाए
(b) कक्षा चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए
(c) लगातार प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए
(d) स्वतन्त्र रूप से उत्तर ढूँढने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थी के प्रश्न पूछने पर उसके उत्सुकता को शांत करने के लिए शिक्षक को उसकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए तथा छात्र को विषयवस्तु सम्बंधी सार्थक प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि विषय से सम्बंधी शिक्षण में उनकी रुचि बनी रहे तथा अधिगम बिना अवरोध के सतत रुप से चलती रहे।

73. ....को अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत के रूप में विवेचित किया जाता है

(a) कक्षा में अधिकतम उपस्थिति
(b) शिक्षक द्वारा दिया गया उपचारात्मक कार्य
(c) विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना
(d) कक्षा में पूर्ण नीरसता

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षण प्रभावशाली एवं सजीव तब होता है जब कक्षा में समय-समय पर शिक्षक-छात्र वार्तालाप हो तथा छात्रो द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछा जा रहा हो। इससे पता चलता है कि छात्र का अधिगम अच्छी तरह से चल रहा है और छात्र कक्षा में रूचि ले रहा है।

74. एक शिक्षिका अपने-आप में कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम .... के सिद्धान्त पर आधारित है।

(a) अनुदेशात्मक सामग्री के उचित संगठन
(b) अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना और भूमिका-प्रतिरूप बनना
(c) सीखने की तत्परता
(d) सक्रिय भागीदारिता

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
UK TET 2014 (I-V)

Ans: (d) यदि शिक्षिका अपने-आप में कभी भी प्रश्नों का उत्तर नहीं देती है और यदि वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं तो यह उपागम सक्रिय भागीदारिता के सिद्धान्त पर आधारित है।

75. एक शिक्षिका पाठ्य–वस्तु और फल–सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं ओर पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम .... पर आधारित है।

(a) ज्ञान के निर्माण
(b) अधिगम के शास्त्रीय अनुबन्धन
(c) पुनर्बलन के सिद्धांत
(d) अधिगम के सक्रिय अनुबन्धन

C TET (I-V) 2012

Ans : (a) एक शिक्षिका पाठ्यवस्तु और फल–सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम ज्ञान के निर्माण पर आधारित है।

76. निम्न में से कौन-सा कथन बहुग्रेड शिक्षण प्रणाली के साथ सहमति नहीं रखता?

(a) एक अध्यापक एक समय में एक से अधिक कक्षाओं का प्रबन्धन करता है
(b) बैठने की लचीली व्यवस्था
(c) विभिन्न कक्षाओं से एक ही कक्षा में अन्त:क्रिया
(d) विद्यार्थियों का आयु एवं योग्यता के आधार पर समान होना।

REET–2012 (I-V) 09-09-2012

Ans: (d) बहुग्रेड शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत एक अध्यापक एक समय में एक से अधिक कक्षाओं का प्रबन्धन करता है तथा विभिन्न कक्षाओं से एक ही कक्षा में अंत:क्रिया का अवसर देता है। इसके लिए बैठने की लचीली व्यवस्था, योग्य और कुशल अध्यापक, लचीला पाठ्यक्रम आदि का होना आवश्यक है।

सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल

77. सूक्ष्म–शिक्षण चक्र का प्रथम पद होता है–

(a) प्रतिपुष्टि (b) शिक्षण
(c) योजना बनाना (d) प्रस्तावना

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (c) ए. डब्ल्यू एलन को सूक्ष्म शिक्षण का जन्मदाता माना जाता है। सूक्ष्म शिक्षण चक्र का प्रथम पद योजना बनाना होता है।

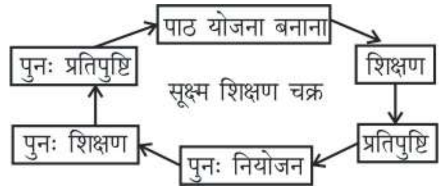

78. जब अध्यापक प्रथम बार कक्षा-कक्ष में प्रवेश करे तो उसे बात करनी चाहिए

(a) विद्यालय भवन के बारे में
(b) विद्यालय के प्रधानाध्यापक के बारे में
(c) पाठ्यपुस्तक के बारे में
(d) अपने एवं छात्रों के बारे में

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अध्यापक द्वारा प्रथम बार कक्षा-कक्ष में प्रवेश करने पर छात्र-शिक्षक अन्तर्क्रिया अनिवार्य है। इस क्रिया के द्वारा छात्र-शिक्षक के व्यक्तित्व एवं शिक्षक छात्र की रुचि, योग्यता एवं उनके परिवेश के बारे में जान सकेंगे और इसकी सहायता से शिक्षण कार्य सुगम बना रहेगा।

79. अनुशासन, जो अधिगम वातावरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, किस तरह की मदद करता है?

(a) बच्चों को अपनी शिक्षा को विनियमित और मॉनीटर करने के लिए
(b) चुप्पी साधे रहने के लिए
(c) शिक्षकों को निर्देश देने में
(d) बच्चों को उनके पाठ रटकर याद करने में

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : अनुशासन, जो अधिगम वातावरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बच्चों को अपनी शिक्षा को विनियमित और मॉनीटर करने में मदद करता है। अर्थात् जब कक्षा अनुशासित रहता है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रगति करती है तथा जब कक्षा अनुशासनहीन होती है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बाधित होता है।

80. पाठ प्रस्तावना कौशल का मुख्य संघटक क्या है?

(a) पूर्वज्ञान (b) व्याख्यान
(c) श्यामपट्ट लेखन (d) गृहकार्य

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) पाठ प्रस्तावना कौशल के मुख्य संघटक निम्न हैं–
(1) पूर्वज्ञान से सम्बन्ध
(2) प्रेरणा हेतु उपयुक्त युक्ति व शैक्षिक साधनों का चयन
(3) आन्त ज्ञान से तुलना
(4) प्रश्नों में तारतम्यता
(5) उद्दीपन प्रभाव

81. निम्न में से किस कौशल में पूर्व ज्ञान का परीक्षण आता है?

(a) उद्दीपन–परिवर्तन कौशल (b) प्रस्तावना कौशल
(c) समापन कौशल (d) प्रदर्शन कौशल

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : प्रस्तावना कौशल में पूर्व ज्ञान का परीक्षण किया जाता है। इस कौशल का उपयोग कर शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान का परीक्षण करता है ताकि वह नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए अधिगम परिस्थिति का निर्माण कर सकें। शिक्षण में पाठ की प्रस्तावना से तात्पर्य है–छात्रों व शिक्षकों के बीच मानसिक समरसता स्थापित करना।
प्रस्तावना कौशल के घटक निम्नलिखित हैं–
1. पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध,
2. आदन्त ज्ञान से तुलना,
3. प्रेरणा हेतु उपयुक्त युक्ति व शैक्षिक साधनों का चयन,
4. प्रश्नों में तारतम्यता,
5. उद्दीपन प्रभाव।

82. सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय प्रतिमान में कुल कितना समय लगता है?

(a) 36 मिनट (b) 40 मिनट
(c) 45 मिनट (d) 30 मिनट

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : सूक्ष्म–शिक्षण के भारतीय प्रतिमान में सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि **36 मिनट** होती है। इसका विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1.	पाठ योजना निर्माण	–	6 मिनट
2.	शिक्षण	–	6 मिनट
3.	प्रतिपुष्टि या पोषण	–	6 मिनट
4.	पुन: पाठ योजना निर्माण	–	6 मिनट
5.	पुन: शिक्षण	–	6 मिनट
6.	पुन: प्रतिपुष्टि	–	6 मिनट
	कुल समय	**–**	**36 मिनट**

83. **विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा विकसित करने के लिए, एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?**
(a) गलाकाट प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करना
(b) विद्यार्थियों के सम्मुख एक अप्राप्य लक्ष्य रखना
(c) नई तकनीक व नई विधियों का प्रयोग करना
(d) उनके आकांक्षा स्तर को घटाना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा को विकसित करने के लिए शिक्षक को नई तकनीकी एवं नई विधियों के प्रयोग द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए।

84. **शिक्षण करते समय आपको लगे कि जो कुछ आपने पढ़ाया है वह सही नहीं है तो आप**
(a) प्रकरण अधूरा छोड़ देंगे तथा दूसरा प्रकरण शुरू कर देंगे
(b) छात्रों से कहेंगे कि गलती हुई और उसे ठीक कर देंगे
(c) छात्रों का उससे ध्यान हटा देंगे
(d) छात्रों को डाँट पिलायेंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण कार्य के समय अगर शिक्षक द्वारा कोई तथ्य गलत कह दिया जाय तो शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी गलती को तुरन्त सुधार कर सही तथ्य प्रस्तुत करे। शिक्षण कार्य की यही सही विधि है।

85. **सलीम संगीत में निष्णात है परन्तु गणित में अच्छा नहीं कर पाता। गणित के अध्यापक के रूप में आप सलीम को क्या कहेंगे?**
(a) उससे कहेंगे कि संगीत का कोई भविष्य नहीं है
(b) उससे संगीत छोड़कर गणित की पढ़ाई करने को कहेंगे
(c) उसके अभिभावकों को बुलाकर बात करेंगे
(d) उससे कहेंगे कि वह गणित में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकता है और उसे गणितीय अवधारणाएँ समझायेंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) किसी विद्यार्थी को उसके मनपसंद विषय से कभी दूर नहीं करना चाहिए और न ही छोड़ने के लिए कहना चाहिए अगर वह अन्य विषय में कमजोर है तो उसे उस विषय पर विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। साथ में अन्य विषय की मूलभूत अवधारणाओं का समझना भी आवश्यक है।

86. **एक लंबे व्याख्यान को देते हुए अध्यापक को**
(a) बीच में विराम लेना चाहिए
(b) लगातार बोलना चाहिए
(c) बीच में प्रश्न पूछने चाहिए
(d) अपनी भाव-भंगिमा बदलनी चाहिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) लम्बे व्याख्यान देते समय अध्यापक को बीच में विराम लेना चाहिए क्योंकि लगातार व्याख्यान से नीरसता उत्पन्न होगी और सम्बंधित विषय उबाऊ हो जाएगा। छात्र भी इन सभी व्याख्यान को एक साथ आत्मसात करने में कठिनाई महसूस करेंगे।

87. **आपकी कक्षा के कुछ छात्रों का ध्यान पढ़ने से हट गया है। आप उनका ध्यान पुन: केन्द्रित करने के लिए कौन-सा उपाय करेंगे?**
(a) छोटी-सी शारीरिक क्रिया करवाना
(b) थोड़ी देर के लिए कक्षा को निलंबित करना
(c) बच्चों को ध्यान लगाने के लिए कहना
(d) कक्षा को खेल के लिए भेजना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) कक्षा-कक्ष में छात्रों के ध्यान भंग होने पर अध्यापक द्वारा पुन: ध्यान केन्द्रित करने को कहना चाहिए क्योंकि ध्यान भंग होना किसी प्रकार का दोष या गलती नहीं है जिसे तुरन्त दूर न किया जा सके।

88. **निम्न में से क्या एक प्रभावी प्रशंसा के रूप में अध्यापक के लिये कार्य करेगा?**
(a) विद्यार्थियों के अवधान को उसके कार्य से सम्बन्धित व्यवहार पर केन्द्रित करता है
(b) विद्यार्थियों के वर्तमान कार्य निष्पादन को उसके समूह के अन्य साथियों के सन्दर्भ वर्णित करता है
(c) विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं अथवा कार्य निष्पादन के महत्व की सूचना देता है
(d) जब विद्यार्थी अपने व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर पाते तो उन्हें सकारात्मक व्यवहारात्मक समर्थन प्रदान करता है।

REET–2012 (I-V) 09-09-2012

Ans: (c) विद्यार्थी की योग्यता एवं कार्य निष्पादन की सफलता अध्यापक के लिए प्रभावी प्रशंसा का कार्य करती है क्योंकि विद्यार्थी की सफलता में ही अध्यापक की सफलता होती है।

89. **छात्रों को 'ठीक, शाबास, बहुत अच्छा' कहना है**
(a) शाब्दिक पुनर्बलन
(b) अशाब्दिक पुनर्बलन
(c) सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन
(d) नकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (c) छात्रों को ठीक, शाबास, बहुत अच्छा कहना सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन है। सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन के अंतर्गत शिक्षक के वे सभी शाब्दिक अथवा मौखिक व्यवहार आते हैं जो सकारात्मक पुनर्बलन में सहायक हो। अर्थात् जिनके द्वारा एक विद्यार्थी को ठीक उत्तर देने अथवा सही अनुक्रियाएँ करने के लिए प्रोत्साहन और बल मिले।

90. **शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को क्या करना चाहिए?**
(a) छात्रों को दण्डित करना चाहिए
(b) चुटकुले सुनाने चाहिए
(c) अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए
(d) आराम करना चाहिए

Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (c) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक प्रस्तावनात्मक प्रश्न पूछकर परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है।

91. यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिए कि वह–

(a) शिक्षण विधि बदल दें
(b) दृश्य–श्रव्य सामग्री को प्रयोग में लाकर पाठ को रुचिकर बनाए
(c) कक्षा से चला जाए
(d) कक्षा में कोई अन्य कार्य प्रारम्भ करें

UK TET 2014 (I-V)

Ans : (a) यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिए कि शिक्षण विधि बदलकर पाठ को रुचिकर बनाये ताकि विद्यार्थी रुचि पूर्वक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहभागी बने। इसलिए अध्यापक को विभिन्न शिक्षण–विधियों का ज्ञान होना चाहिए।

92. आपकी कक्षा में एक बच्चा रोज आपको परेशान करने के लिए अप्रासंगिक प्रश्न पूछता है। आप क्या करेंगे?

(a) प्रधानाचार्य से शिकायत करेंगे
(b) उसे डाँटेंगे
(c) उससे बातचीत करेंगे
(d) उसके माता–पिता से शिकायत करेंगे

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (c) यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अप्रासंगिक प्रश्न पूँछकर बाधित करता है तो अध्यापक को उससे बातचीत करके उसके द्वारा इस प्रकार के व्यवहार किये जाने का कारण जानना चाहिए। क्योंकि इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उसे वह विषय समझ में ही न आ रहा हो। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी को अतिरिक्त समय देकर विषय समझाने का प्रयास करना चाहिए।

93. निम्न में से कौन–सा/से अच्छे अनुशासन के लिए मुख्य तत्त्व है/हैं?

(1) कुशल मुख्याध्यापक
(2) स्कूल का स्वस्थ वातावरण
(3) आदर्श अध्यापक
(4) पुरस्कार और दंड

(a) 1, 2, 4 (b) केवल 2
(c) 1 एवं 3 (d) ये सभी

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) विद्यालय में स्वस्थ्य पठन–पाठन के वातावरण को सुनिश्चित करने के लिए अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण कारक है। विद्यालय में अनुशासन के लिए आवश्यक है कि कुशल मुख्याध्यापक (प्रधानाध्यापक) हो, स्कूल का स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण वातावरण हो, आदर्श अध्यापक हो, पुरस्कार एवं दण्ड की उचित व्यवस्था आदि हो।

94. एक शिक्षक (को)

(a) व्याख्यान पर अधिक ध्यान देना चाहिए और ज्ञान के लिए आधार उपलब्ध कराना चाहिए
(b) शिक्षार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों को एक भयंकर भूल के रूप में लेना चाहिए और प्रत्येक त्रुटि के लिए गम्भीर टिप्पणी देनी चाहिए
(c) शिक्षार्थी कितनी बार गलती करने से बचता है इसे सफलता के माप के रूप में लेना चाहिए
(d) जब शिक्षार्थी विचारों को संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हों, तो उन्हें ठीक नहीं करना चाहिए

C TET 2013 (I-V)

Ans : (d) एक शिक्षक को, जब शिक्षार्थी विचारो को संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हों तो तत्काल उनमें सुधार नहीं करना चाहिए बल्कि जब वे विचारों को सम्प्रेषित कर ले तो उन्हीं (शिक्षार्थियों) की सहायता से ही उसे ठीक करनी चाहिए।

95. शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है, शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

(a) शिक्षक द्वारा शिवानी को चुप करा देना चाहिए
(b) शिक्षक द्वारा शिवानी का ध्यान बँटा देना चाहिए
(c) शिक्षक को कहना चाहिए कि ''मैं नहीं जानता हूँ''
(d) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना चाहिए

UK TET 2011 (I-V)

Ans : (d) यदि शिवाानी द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे पाता है तो उसे स्पष्ट रूप से कहना चाहिए कि 'इस प्रश्न का उत्तर हम बाद में समझकर देंगे'।

96. ध्यान आकर्षित होने में .... की प्रमुख भूमिका होती है।

(a) उद्दीपन की तीव्रता (b) उद्दीपन की उपादेयता
(c) उद्दीपन की विश्वसनीयता (d) उद्दीपन की सक्रियता

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) उद्दीपन की तीव्रता ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि उद्दीपन की तीव्रता जितनी ज्यादा होगी व्यक्ति न चाहते हुए भी उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है।

97. कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय क्या है?

(a) अनुशासनहीन छात्रों को कक्षा से बाहर निकाल देना
(b) शिक्षण को रोचक एवं व्यवहारिक बनाना
(c) छात्रों के अभिभावकों को सूचित करना
(d) अनुशासनहीन छात्रों को विशिष्ट सुविधाएँ प्रदान करना

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) कक्षा में अनुशासन बनाये रखने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय यह है कि शिक्षण को रोचक एवं व्यवहारिक बनाया जाये साथ ही शिक्षण छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप हो।

98. निम्न में से कौन शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है?

(a) श्यामपट्ट पर लिखना (b) प्रश्नों को हल करना
(c) प्रश्न पूछना (d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक सभी शिक्षण कौशलों में कुशल हो। शिक्षण कौशल निम्न है–

1. श्यामपट्ट कौशल
2. प्रश्न कौशल
3. स्पष्टीकरण कौशल
4. प्रतिपुष्टि कौशल आदि।

शिक्षण उपकरण एवं शिक्षण तकनीकी

99. आई.सी.टी. का उद्देश्य है–

(a) स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना
(b) शिक्षकों की क्षमता बढ़ाना
(c) (a) और (b) दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) योजना दिसम्बर, 2004 में माध्यमिक स्तर के छात्रों को मुख्यत: अपनी आई.सी.टी. कौशल क्षमता बढ़ाने और कम्प्यूटर सहायक शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु किया गया था। इसके मुख्यत: चार उद्देश्य थे–
1. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के साथ भागीदारी करना।
2. स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना।
3. शिक्षक संबंधित हस्तक्षेप जैसे– विशिष्ट शिक्षक की नियुक्ति, आईसीटी में सभी शिक्षकों की क्षमता–बढ़ाना और प्रेरणा के रूप में राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार हेतु योजना बनाना।
4. ई-विषयवस्तु का विकास करने से है।

100. पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ मुख्यत: सम्बन्धित हैं–

(a) शैक्षिक संस्थानों के विकास से
(b) छात्रों के सर्वांगीण विकास से
(c) छात्रों के वृत्तिक विकास से
(d) छात्रों के मानसिक विकास से

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ छात्रों के सर्वांगीण विकास से, छात्रों के रुचि और अवधान से, छात्रों की सक्रिय सहभागिता से, छात्रों की क्रियाशीलता आदि से सम्बन्धित है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में खेल, नाटक, निबन्ध प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण, अंताक्षरी आदि क्रियाएँ आती हैं।

101. शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम है-

उत्तर: प्रणाली विश्लेषण/प्रणाली उपागम

UP Assistant Teacher Test (I-V) 27.05.2018

व्याख्या- शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम प्रणाली विश्लेषण या प्रणाली उपागम है। आई. के. डेविज ने अपनी पुस्तक 'मैनेजमेंट आफ लर्निंग' में शैक्षिक तकनीकी के तीन स्वरूपों का वर्णन किया है-
(1) शैक्षिक तकनीकी प्रथम या कठोर शिल्प उपागम
(2) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या मृदुल शिल्प उपागम
(3) शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण
शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली उपागम शैक्षिक प्रशासन के विकास तथा अनुदेशन की रूपरेखा बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

102. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षण का एक नवाचारी स्रोत है?

(a) टेलीस्कोप (b) इन्टरनेट
(c) फेसबुक (d) ब्लैक बोर्ड

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) इंटरनेट शिक्षण का नवाचारी स्रोत है क्योंकि इंटरनेट वर्तमान में खोजी गयी एक ऐसी तकनीकी है जो शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है।

103. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए :

A. स्लाइड प्रोजेक्टर (i) दृश्य साधन
B. टी वी (ii) श्रव्य साधन
C. चार्ट (iii) दृश्य-श्रव्य साधन
D. आवाज रिकॉर्डर (iv) प्रक्षेपण साधन

	A	B	C	D
(a)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) स्लाइड प्रोजेक्टर→प्रक्षेपण साधन
टी. वी.→ श्रव्य-दृश्य साधन
चार्ट → दृश्य साधन
आवाज रिकार्डर→ श्रव्य साधन

104. एक विषय पर सर्वाधिक एवं आधुनिकीकृत सूचना किस स्रोत से प्राप्त होती है?

(a) विश्वकोश
(b) इन्टरनेट
(c) नवीनतम अकादमिक पत्रिकाएँ
(d) अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) एक विषय पर सर्वाधिक एवं आधुनिकीकृत सूचना प्रदाता स्रोत इन्टरनेट है जिसके द्वारा आसानी से सूचना का आदान प्रदान किया जा सकता है।

105. कोमल शिल्प उपागम संबंधित है–

(a) रेडियो से
(b) दूरदर्शन से
(c) कम्प्यूटर से
(d) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोगों से

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या कोमल शिल्प उपागम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित है। इस उपागम में शिक्षण व सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

106. निम्न में से कौन श्रव्य–दृश्य सामग्री का उद्देश्य है?

(1) शिक्षण को प्रभावशाली बनाना
(2) सकारात्मक सृजनात्मकता उत्पन्न करना
(3) छात्रों को क्रियाशील बनाना
(4) विषय–वस्तु में अरुचि उत्पन्न करना

(a) 1, 2 एवं 3 (b) 1 एवं 4
(c) 1, 3 एवं 4 (d) 2, 3 एवं 4

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (a) शिक्षण प्रक्रिया में श्रव्य–दृश्य सामग्री (शिक्षण सहायक सामग्री) के प्रयोग का निम्न उद्देश्य हो सकता है–

- शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए।
- छात्रों में सृजनात्मकता उत्पन्न करने के लिए।
- छात्रों को क्रियाशील बनाने के लिए।
- छात्रों में पाठ के प्रति रुचि जागृत करने के लिए।
- सीखने की गति में सुधार करने के लिए।
- अमूर्त पदार्थो को मूर्त रूप देने के लिए।
- जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करने के लिए

107. श्यामपट्ट को शिक्षण सामग्री के किस समूह के अन्तर्गत किया जा सकता है?

(a) श्रव्य साधन (b) दृश्य साधन
(c) दृश्य-श्रव्य साधन (d) इनमें से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (b) वे साधन जिसमें बालक की दृश्य ज्ञानेन्द्रिय (आँख) प्रेरित होती है वे दृश्य शिक्षण सामग्री कहलाते हैं। जैसे- श्यामपट्ट, मानचित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि।

शिक्षण विधियाँ

108. प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता कौन थे?
उत्तर: विलियम एच. किलपैट्रिक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता जॉन डयूवी के शिष्य विलियम एच. किलपैट्रिक हैं। किलपैट्रिक के अनुसार- ''प्रयोजना वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे लगन के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है।'' अर्थात प्रोजेक्ट विधि विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित किसी समस्या का हल खोज निकालने के लिए अच्छी तरह से चुना हुआ वह कार्य है जिसे पूर्ण स्वभाविक परिस्थितियों में सामाजिक वातावरण में ही पूर्ण किया जाता है।

109. ह्यूरिस्टिक विधि के प्रतिपादक कौन थे?
उत्तर: आर्मस्ट्रांग

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- ह्यूरिस्टिक विधि या अन्वेषण विधि के प्रतिपादक आर्मस्ट्रांग माने जाते हैं। ''ह्यूरिस्टिक'' एक ग्रीक शब्द है। यह ह्यूरिसिको से बना है जिसका अर्थ है ''मैं खोज करता हूँ''। इस विधि में छात्रो को उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढूँढने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसमे अध्यापक मात्र पथप्रदर्शन करता है।

110. यदि आप कक्षा में ज्यादा छात्रों की प्रतिभागिता चाहते हैं तो आप शिक्षण की कौन सी विधि का चुनाव करेंगे?
उत्तर: विचार-विमर्श विधि/सामूहिक-परिचर्चा विधि

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-विचार-विमर्श विधि का उपयोग तब किया जाता है जब सभी विद्यार्थियो को विचार-विमर्श में सीधे रूप में सम्मिलित करना सम्भव हो। इस विधि में कुछ छात्र दिये गये विषय या समस्या के विभिन्न पक्षों पर संक्षेप में भाषण तैयार करते हैं तथा शिक्षक की अध्यक्षता में भाषण देते हैं।

111. A language teacher teaching a poem in the classroom by explaining the details of the poem and asking the students to draw conclusion or broad view from explanation. It is an example of /एक भाषा शिक्षक कक्षा में कविता का विवरण समझाकर कक्षा में कविता पढ़ा रहा है और छात्रों को स्पष्टीकरण से निष्कर्ष निकालने या व्यापक विचार करने के लिए कह रहा है। यह का एक उदाहरण है :

(a) Inductive reasoning/आगमनात्मक तर्क
(b) Deductive reasoning/निगमनात्मक तर्क
(c) Concept mapping/अवधारणा मानचित्रण
(d) Hypothesis testing/परिकल्पना परीक्षण

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (a) : यदि एक भाषा शिक्षक कक्षा में कविता का विवरण समझाकर कविता को पढ़ा रहा है, तो इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान (ज्ञात से अज्ञात की ओर) से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। जो एक आगनात्मक तर्क का उपयुक्त उदाहरण है।

112. फ्रोबेल ने निम्नलिखित में से किस खेल पर प्रमुख बल दिया?

(a) गेंद का खेल (b) ब्लॉक का खेल
(c) आकृतियों को खेल (d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) फ्रोबेल ने खेल विधि को अधिगम का एक उपयुक्त उपकरण माना है। फ्रोबेल के अनुसार खेल विधि से बालक में समायोजन शक्ति, शारीरिक शक्ति एवं मानसिक क्षमता का विकास होता है। खेल विधि में फ्रोबेल ने गेंद के खेल को प्रमुखता दी। फ्रोबेल ने किण्डर गार्डेन शिक्षा प्रणाली की स्थापना की।

113. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि किससे सम्बन्धित है?

(a) फ्रोबेल (b) जॉन डीवी
(c) आर्मस्ट्राँग (d) मैक्ड्यूगल

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) ''प्रोजेक्ट शिक्षण विधि जॉन डीवी की विचारधारा पर आधारित है। लेकिन इसको विकसित करने का श्रेय किलपेट्रिक को जाता है।'' अत: यह कह सकते है कि जॉन डीवी, किलपैट्रिक के सम्मलित प्रयास का परिणाम प्रोजेक्ट विधि है। इनके अनुसार कार्य को वास्तविक परिस्थिति में करने से अधिगम स्थायी होता है।

114. विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी निम्नलिखित विधि के द्वारा सम्भव है

(a) व्याख्यान विधि (b) पाठ्यपुस्तक विधि
(c) श्रव्य-दृश्य सामग्री (d) वार्तालाप विधि

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी, वार्तालाप विधि (Discussion Method) द्वारा सम्भव है क्योंकि इसमें सभी विद्यार्थीयों को अपने विचार रखने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

115. अध्यापन की पद्धति के रूप में व्याख्यान प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों का अध्ययन करें :

A. सूचना प्रदान करने की यह एक कुशल विधा है।

B. विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित करने हेतु यह एक प्रभावपूर्ण प्रणाली है।

इनमें से कौन-सा कथन सही है?

(a) केवल A (b) केवल B

(c) A तथा B दोनों (d) न A न B

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अध्यापन की पद्धति के रूप में व्याख्यान प्रणाली एक कुशल विधा है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

116. एक बालक अधिक सीखता है, यदि उसे

(a) पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पढ़ाया जाये

(b) कम्प्यूटर से पढ़ाया जाये

(c) व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाये

(d) क्रिया विधि से पढ़ाया जाये

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) एक बालक अधिक सीखता है यदि उसे क्रिया विधि से पढ़ाया जाये क्योंकि इस विधि में छात्र सक्रिय सहभागिता करता है जिसमें उसकी सभी इंन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं और सभी इंन्द्रियों के सक्रिय रहने से अधिगम अधिक प्रभावी होता है। अत: शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षण की क्रिया विधि का प्रयोग किया जा सकता है।

117. शिक्षा में विकास को लेकर फ्रोबेल का मुख्य योगदान है

(a) वाणिज्यिक शिक्षणालय (b) बालवाड़ी

(c) पब्लिक स्कूल (d) लैटिन स्कूल

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षा के विकास में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान किण्डर गार्डन (बालवाडी) पद्धति की स्थापना करना।

118. शिक्षा में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान था..........का विकास।

(a) व्यावसायिक स्कूल (b) पब्लिक स्कूल

(c) किण्डर गार्टन (d) लेटिन स्कूल

Jharkhand 2011 (I-V)

Ans: (c) शिक्षा के क्षेत्र में फ्रोबेल का महत्त्वपूर्ण योगदान था– 'किण्डर गार्टन' का विकास। किण्डर गार्टन का शाब्दिक अर्थ होता है 'बच्चों का बगीचा'।

119. सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है?

(a) बाल्यावस्था (b) पूर्व बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) उपरोक्त सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) बाल्यावस्था, पूर्व बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था इन तीनों अवस्थाओं में प्रोजेक्ट विधि अधिगम के लिए सर्वोत्तम होती है।

120. 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक कौन हैं?

(a) सुकरात (b) फ्रोबेल

(c) किलपैट्रिक (d) अरस्तू

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (b) 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक पेस्टालॉजी के शिष्य **फ्रेडरिक विलियम ऑगस्ट फ्राबेल** माने जाते हैं। इन्होंने **किंडरगार्टन (वालवाड़ी)** की संकल्पना दी तथा शैक्षणिक खिलौनों का विकास किया जिन्हें 'फ्राबेल उपहार' के नाम से जाना जाता है। किलपैट्रिक जॉन डिवी के उत्तराधिकारी थे तथा इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के लिए 'परियोजना विधि' (प्रोजेक्ट मेथड) का विकास किया।

121. डॉल्टन शिक्षण विधि का विकास किसने किया?

(a) फ्रोबेल

(b) डब्ल्यू.एच.किलपैट्रिक

(c) मिस हेलेन पार्कहर्स्ट

(d) डॉल्टन

UK TET 2011 (I-V)

Ans : (c) डाल्टन शिक्षण विधि या 'डाल्टन प्रयोगशाला योजना' का प्रयोग मिस हेलेन पार्कहर्स्ट ने वर्ष 1920 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मैसाच्यूसेट्स राज्य के डाल्टन स्थित विद्यालयों में प्रारम्भ की। इस विधि के दो मुख्य सिद्धान्त हैं–

1. विभिन्न विषयों के लिए निश्चित घंटों और समय–सारिणी के कठोर बंधनों को नष्ट करके बच्चे को स्वतंत्रतापूर्वक काम करने की सुविधा देना।
2. बालक की रुचि जिस विषय में अधिक हो उसे उस विषय को जितनी देर तक वह चाहे अध्ययन करने देना।

122. उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण निम्नलिखित में से किस विधि के सोपान हैं?

(a) निगमन विधि (b) आगमन विधि

(c) अन्तर्दर्शन विधि (d) बहिर्दर्शन विधि

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण का सोपान आगमन विधि के अन्तर्गत आता है। शिक्षण की आगमन विधि में शिक्षक अनेक विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर सामान्यीकरण करने का प्रयास करता है।

123. शैशवावस्था के लिए उत्तम शिक्षण विधि है

(a) मॉण्टेसरी विधि (b) खेल विधि

(c) किण्डरगार्टन विधि (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) 0-6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था कहते हैं। इस अवस्था में शिशु को माण्टेसरी शिक्षाविधि, किण्डरगार्टन विधि तथा खेल विधि से शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार की शिक्षण पद्धति वर्तमान समय में प्ले वे (Play way school) स्कूलों में अपनायी जाती है।

124. शिक्षा की किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया

(a) टी.पी. नन ने (b) स्पेन्सर ने
(c) फ्रोबेल ने (d) माण्टेसरी ने

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) मनोवैज्ञानिक फ्रोबेल ने 1840 में जर्मनी में पहला किण्डरगार्टन खोला तथा किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया। किण्डरगार्टन का अर्थ (बच्चों का बगीचा) होता है, अर्थात् फ्रोबेल के अनुसार बच्चे उद्यान में स्थित नर्सरी की तरह होते हैं जैसे नर्सरी की अच्छी तरह देख-भाल से छोटे पौधे स्वस्थ वृक्ष बनते हैं उसी तरह बच्चों की देख-भाल से उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विकास होता है।

125. निम्नलिखित में से अंत: विषयी अनुदेशन का सर्वोत्कृष्ट लाभ यह है कि

(a) पाठ-योजना बनाने और गतिविधियों में शिक्षकों को अधिक लचीलेपन की अनुमति होती है।
(b) विद्यार्थियों को सीखे गए ज्ञान का बहु-संदर्भो में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिए जाते हैं
(c) प्रकरणों की विविधता, जिन्हें परंपरागत पाठ्यचर्या में संबोधित किए जाने की आवश्यकता है, से शिक्षकों के अभिभूत होने की कम संभावना होती है
(d) विद्यार्थियों में विभिन्न विषय-क्षेत्रों के विशेष प्रकरणों के प्रति नापसंदगी विकसित होने की कम संभावना होती है

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) अंत: विषयी अनुदेशन का सर्वोत्कृष्ट लाभ यह है कि विद्यार्थियों को सीखे गये नये ज्ञान का बहु-संदर्भों में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिये जाते हैं।

126. बीजों का अंकुरण संकल्पना के शिक्षण की सबसे प्रभावी पद्धति है–

(a) विद्यार्थियों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना
(b) श्यामपट्ट पर चित्र बनाना और वर्णन करना
(c) बीज की वृद्धि के चित्र दिखाना
(d) विस्तृत व्याख्या करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (a) किसी भी कार्य को यदि प्रयोगात्मक रूप से छात्रों द्वारा करवाकर उसका अध्ययन कराया जायेगा तो वह सबसे अधिक प्रभावशाली होगा जैसे छात्रों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना। यह शिक्षण की परियोजना विधि का सबसे अच्छा उदाहरण है।

127. प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण की उपयुक्त विधि है

(a) प्रयास व भूल विधि (b) अनुकरण विधि
(c) व्याख्यान विधि (d) खेल विधि

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण की उपयुक्त विधि खेल विधि है।

128. सामाजार्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को...............सहायता करता है।

(a) स्व-अधिगम मॉडल (b) विभेदित निर्देश
(c) पाठ्यचर्या का विस्तार (d) संज्ञानात्मक वर्गीकरण

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) समाजार्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है उनके लिए स्व-अधिगम मॉडल सहायता कर सकती है। इसी आधार पर सरकारें खुला विद्यालय एवं खुला विश्वविद्यालय की स्थापना करती हैं ताकि समावेशी शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके।

सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम एवं सामाजिक संदर्भ

129. One of the adjustment mechanism involves thinking logically and socially, in approved reason of past, present and proposed behavior is called/एक समायोजन तंत्र में अतीत, वर्तमान और प्रस्तावित व्यवहार के अनुमोदित कारणों में तार्किक और सामाजिक रूप से सोचना शामिल है, कहलाता है:

(a) Compensation/प्रतिकरण
(b) Rationalization/परिमेयकरण
(c) Regression/प्रतिगमन
(d) Repression/दमन

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (b) : एक समायोजन तंत्र में अतीत, वर्तमान और प्रस्तावित व्यवहार क अनुमोदित कारणों में तार्किक और सामाजिक रूप से सोचना परिमेयकरण कहलाता है। परिमेयकरण या औचित्य स्थापन के द्वारा किसी भी कार्य व्यवहार को तार्किक आधार पर सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। इस युक्ति का प्रयोग तनाव को कम करने के लिए किया जाता है।

शिक्षा में विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज का योगदान

130. शैक्षिक सुधारों में प्रभावी विकेन्द्रीकरण तभी संभव होगा–

(A) जब खंड व संकुल संदर्भ केन्द्रों की भागीदारी बढ़े
(B) स्थानीय संदर्भ व्यक्ति उपलब्ध हो
(C) अध्यापकों के पास संसाधन और प्रासंगिक सामग्री भी मौजूद हो

सही उत्तर चुनें–

(a) A और C (b) A और B
(c) B और C (d) A, B और C

UP TET (I-V) 18 November, 2018

Ans : (d) शैक्षिक सुधारों में प्रभावी विकेन्द्रीकरण तभी सम्भव होगा–
- जब खंड व संकुल संदर्भ केन्द्रों की भागीदारी बढ़े
- स्थानीय संदर्भ व्यक्ति उपलब्ध हो
- अध्यापकों के पास संसाधन और प्रासंगिक सामग्री भी मौजूद हो
- स्थानीय स्तर पर ग्राम शिक्षा समिति, महिला संगठन, गैर सरकारी संगठन या अन्य संगठनों, समितियों की सक्रिय सहभागिता बढ़े।

131. Orgnization set-up of the school influences learning of students. This factor belongs to which category? /स्कूल की संगठनात्मक स्थापना छात्रों के अधिगम को प्रभावित करती है। यह पहलू उस श्रेणी से संबंधित है :

(a) Physiological factors/क्रियात्मक कारक
(b) Psychological factors'/मनोवैज्ञानिक कारक
(c) Social factors/सामाजिक कारक
(d) Other factors/अन्य कारक

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (c) : स्कूल की संगठनात्मक स्थापना छात्रों के अधिगम को प्रभावित करती है। यह पहलू सामाजिक कारक श्रेणी से सम्बन्धित है।

132. आर टी ई एक्ट, 2009 के अनुसार, शिक्षक हेतु प्रति सप्ताह कार्य के घण्टे हैं–

(a) 40 (b) 42
(c) 45 (d) 48

REET–2015 (I-V) 16-02-2016

Ans. (c) : आर.टी.ई. एक्ट-2009 (शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009) के अनुसार शिक्षक हेतु प्रति सप्ताह 45 घंटे निर्धारित किया गया है।

133. एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

(a) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
(b) कक्षा में समयानुवर्ती होना
(c) विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना
(d) एक सुवक्ता होना

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षक का कक्षा शिक्षण के समय कई कार्य एवं उत्तरदायित्व होते हैं परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह होता है कि वह छात्रों की समस्याओं का समाधान करें तथा उनकी उत्सुकता को शांत करें।

134. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) कक्षा में शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अनुशासन को बनाए रखना है
(b) एक शिक्षक को निर्धारित पाठ्यपुस्तक का पालन करना चाहिए
(c) पाठ्यक्रम का समय पर पूरा करने के साथ-साथ दोहराने के लिए पर्याप्त समय देना महत्वपूर्ण है
(d) आराम के लिए जगह बनाना, जहाँ बच्चे संवाद और पूछताछ के माध्यम से सीखते हैं

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : एक शिक्षक की भूमिका सुविधा प्रदाता के रूप में होती है। वह ऐसे सहज परिस्थिति का निर्माण करता है जहाँ बच्चे नि:संकोच प्रश्न पूछ सकते हैं और संवाद के माध्यम से सीख सकते हैं।

135. निम्नलिखित में से कौन-सा कक्षा में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) वे कक्षा में उपलब्ध संसाधन और संदर्भ सामग्री में से एक हैं।
(b) वे एक राज्य या राष्ट्र में अधिगम में एकरूपता बनाए रखते हैं।
(c) वे अध्ययन के पाठ्यक्रम के बारे में शिक्षकों और माता-पिता को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
(d) वे संसाधन-रहित संदर्भ में सबसे आवश्यक अधिगम संसाधन बनाते हैं।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : कक्षा शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका कक्षा में उपलब्ध संसाधन और संदर्भ सामग्री के रूप में होती है। पाठ्य पुस्तकें शिक्षकों और छात्रों का मार्गदर्शन करती है तथा एक सुव्यवस्थित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती हैं।

136. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों में अधिगम में सुधार करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है?

(a) नियमित मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की जानी चाहिए।
(b) शिक्षक को विभिन्न उदाहरणों और चित्रों का उपयोग करके विषय की व्याख्या करनी चाहिए।
(c) कक्षा में सभी प्रकार की शिक्षण-सामग्री होनी चाहिए।
(d) शिक्षक को वास्तविक जीवन स्थितियों पर बच्चों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में मदद करनी चाहिए।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : बच्चों के अधिगम में सुधार करने के लिए सबसे उपयुक्त होगा कि शिक्षक वास्तविक जीवन स्थितियों पर बच्चों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में मदद करें। अधिगम में सुधार मूल्यांकन का ही एक अभिन्न अंग होता है। इसलिए शिक्षक, बच्चे अच्छा निष्पादन कर सकें इसके लिए यह विधि अपना सकता है।

137. एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो कर सकता है-

(a) कक्षा पर नियंत्रण
(b) कम समय में अधिक सूचना देना
(c) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना
(d) दत्तकार्य को ध्यानपूर्वक जाँचना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित कर सके।

138. एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है-

(a) विद्यार्थियों से उनका गृहकार्य करवाना
(b) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना
(c) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
(d) प्रश्नपत्र तैयार करना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती उसके अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना, ताकि उसका शिक्षण कार्य ऊबाऊ न लगे और छात्र कक्षा-कक्ष में शांति पूर्वक शिक्षा ग्रहण करें।

139. एक सजीव कक्षा स्थिति में निम्नलिखित में सबसे अधिक सम्भावित है-

(a) कभी कभार हँसी का शोर
(b) पूर्णरूप से शान्ति
(c) शिक्षक-छात्र वार्ता
(d) विद्यार्थियों के बीच तेज आवाज में वार्तालाप

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) कक्षा-कक्ष की स्थिति को जानने का सबसे बेहतर उपाय शिक्षक छात्र वार्तालाप है। इस प्रक्रिया द्वारा छात्रों की उत्सुकता का समाधान आसानी से हो सकेगा तथा कक्षा-कक्ष का वातावरण प्रजातांत्रिक रहेगा।

140.विद्यार्थियों की अकादमिक निष्पादन को सुधारा जा सकता है यदि अभिभावकों को उत्साहित किया जाये

(a) बच्चों के कार्य का निरीक्षण करने के लिए
(b) अधिक ट्यूशन का प्रबंधन करने के लिए
(c) इसके बारे में चिन्तित न होने के लिए
(d) शिक्षकों से बार-बार अंतर्क्रिया करने के लिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विद्यार्थियों की अकादमिक निष्पादन को सुधारने के लिए अभिभावक शिक्षक अन्तर्क्रिया बहुत ही आवश्यक है इससे अभिभावक अपने बालक के विकास को जान सकता है तथा अध्यापक को प्रतिपुष्टि प्राप्त हो सकती है। इसीलिए आजकल विद्यालयों में Parents meeting बुलायी जाती है।

141. शिक्षण को प्रभावित करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा घटक शिक्षक से संबंधित नहीं है?

(a) विषय का ज्ञान (b) संप्रेषण कौशल
(c) विद्यार्थियों से जुड़ाव (d) संसाधनों की उपलब्धता

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) वे सभी कारक जो शिक्षण कार्य को प्रभावित करते है वे शिक्षण घटक कहलाते है। इनके अनुपस्थिति में शिक्षण कार्य बाधित होता है। ये सभी घटक शिक्षक में अनिवार्य रूप से होने आवश्यक है। जैसे- सम्बंधित विषय का ज्ञान, सम्प्रेषण कौशल एवं विद्यार्थियों से जुड़ाव ताकि उनकी समस्याओं को समझ सके। संसाधनों की उपलब्धता शिक्षक से सम्बन्धित घटक नहीं है।

142. शिक्षण की आधुनिक संकल्पना के अनुसार, एक अध्यापक को मुख्य भूमिका निभानी चाहिए

(a) दार्शनिक की (b) मित्र की
(c) कार्यसहभागी की (d) अनुदेशक की

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण की आधुनिक संकल्पना के अनुसार कक्षा-कक्ष में अध्यापक की भूमिका मित्र की होनी चाहिए ताकि छात्रों के कौशल में विकास हो सके तथा अपनी भावनाओं, विचारों, प्रश्नों आदि को नि:संकोच अपने शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

143. एक उत्तम शिक्षक वह है जो

(a) छात्र में वांछित व्यवहारगत परिवर्तन करता है
(b) मौखिक रूप से ज्ञान प्रेषित करता है
(c) सूचना का वर्णन करता है
(d) पाठ्यचर्या को संप्रेषित करता है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है छात्रों का व्यवहार परिवर्तन करना। इसलिए एक उत्तम शिक्षक वह है जो एक ऐसी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का संचालन करे जिससे छात्रों में वांछित व्यवहारगत परिवर्तन हो सके।

144.सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका होनी चाहिए–

(a) सुगमकर्ता की (b) अनुदेशनकर्ता की
(c) प्रशिक्षक की (d) नियंत्रणकर्ता की

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (a) सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका में होना चाहिए तथा शिक्षक द्वारा छात्र को एक आधार देना चाहिए जिस पर छात्र अपना अधिगम कार्य कर सके तथा समस्या का समाधान शिक्षक की सहायता से कर सकें।

145.एक शिक्षक बच्चे द्वारा की गई छोटी-छोटी गलतियों पर क्रोध प्रकट करता है, यह इंगित करता है–

(a) वह बच्चे का शुभचिंतक है
(b) उसमें ज्ञान की कमी है
(c) वह कुंठित है
(d) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित नहीं है

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (d) बच्चों की छोटी सी गलती पर अध्यापक द्वारा क्रोध प्रकट करना अध्यापक की संवेदनात्मक स्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार के व्यवहार अपनाने वाला शिक्षक संवेदनात्मक रूप से असंतुलित होता है तथा उसमें समायोजन की क्षमता का आभाव पाया जाता है।

146. एक आदर्श अध्यापक में पाया जाने वाला गुण है

(a) लोकतन्त्रात्मक दृष्टिकोण
(b) विषय-वस्तु पर अधिकार
(c) बाल मनोविज्ञान का ज्ञान
(d) उपरोक्त सभी

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (d) आदर्श अध्यापक के महत्वपूर्ण गुण-
1. लोकतांत्रिक दृष्टिकोण 2. विषय का पूर्ण ज्ञान
3. बालमनोविज्ञान का ज्ञान 4. आदर्शवादी आचरण
5. अनुशासन प्रियता 6. शिक्षण कौशल युक्त

147. शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य सम्बन्ध होना चाहिए

(a) स्नेह का (b) विश्वास का
(c) सम्मान का (d) ये सभी

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) अधिगम प्रक्रिया को निरंतर एवं सुचारु रूप से चलाने के लिए शिक्षक छात्र का सम्बंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इस सम्बन्ध में सम्मान, विश्वास, स्नेह जैसे सकारात्मक मूल्यों का होना अति आवश्यक है।

148. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है

(a) प्रतियोगिता की भावना को
(b) सहयोग की भावना को
(c) प्रतिद्वन्द्विता की भावना को
(d) तटस्थता की भावना को

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) एक अच्छा अध्यापक सदैव विद्यार्थियों के मध्य सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है ताकि विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का विकास हो सके। इसके लिए खेल शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

149. एक अध्यापक की दृष्टि में कौन-सा कथन सर्वोत्तम है?

(a) प्रत्येक बच्चा सीख सकता है
(b) कुछ बच्चे सीख सकते है
(c) अधिकतर बच्चे सीख सकते हैं
(d) बहुत कम बच्चे सीख सकते है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (a) ''प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।'' यह कथन एक अध्यापक की दृष्टि से सर्वोत्तम है। क्योंकि अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा अलग-अलग शिक्षण कौशलों का प्रयोग कर भिन्न-भिन्न बुद्धिलब्धता के स्तर वाले विद्यार्थियों में ज्ञान का प्रसार किया जा सकता है।

150. आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है–

(a) सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की
(b) बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाने की
(c) बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने की
(d) बच्चों को सभी कुछ पढ़ाने की

UK TET 2011 (I-V)

Ans : (a) आधुनिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की होनी चाहिए। शिक्षक सीखने हेतु अधिगम–परिस्थिति उपस्थिति करता है जिसमें छात्र सक्रिय सहभागिता के द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करता है।

151. प्राथमिक स्तर पर मूल्यों की शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है

(a) मूल्यों के महत्व को बताना
(b) मूल्यों के पालन न करने पर दण्डित करना
(c) अध्यापक के व्यवहार में मूल्य स्थापन
(d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहु आयामी है इसलिए शिक्षा के द्वारा उन सार्वजनिक और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हम लोगों को एकता की ओर ले जा सके। प्राथमिक स्तर पर मूल्य आधारित शिक्षा देने की कई विधियां होती हैं। सर्वोत्तम विधि हैं-

1. महान व्यक्तियों के गुणों के बारे में बताना
2. मूल्यों के महत्व को बताना
3. अध्यापक द्वारा स्वयं मूल्य आधारित व्यवहार एवं आचरण अपनाना
4. कक्षा में अनुशासन बनाए रखना।

152. एक अभिभावक आपसे विद्यालय में मिलने के लिए कभी नहीं आता है। आप

(a) बच्चे की उपेक्षा करेंगे
(b) अभिभावक को लिखेंगे
(c) आप स्वयं उनसे मिलने जाएँगे
(d) बच्चे को दण्ड देना शुरू करेंगे

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) यदि छात्र का अभिभावक विद्यालय में किसी कारण-वश शिक्षक से मिलने नहीं आता है तो शिक्षक को चाहिए कि वह स्वयं अभिभावक से मिलने उसके घर जाए तथा छात्र से सम्बंधित समस्याओं पर अभिभावक से वार्तालाप करे।

153. एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए। इसका अर्थ है

(a) उनके पास पर्याप्त धन-सम्पदा होनी चाहिए ताकि उसे शिक्षण देने की जरूरत न पड़े
(b) उनका अधिकारियों के उच्च स्तर से सम्पर्क होना चाहिए
(c) उनको अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए
(d) विद्यार्थियों के बीच उनकी प्रसिद्धि होनी चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011
Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans : (c) एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए अर्थात् शिक्षक को उन सभी शैक्षिक गुणों एवं कौशलों से परिपूर्ण होना चाहिए जिससे शिक्षण कार्य सुगम रुप से चलता हो साथ ही छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए पूर्ण ज्ञान होना शिक्षक के लिए आवश्यक होता है।

154. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण प्रभावशाली विद्यालय की प्रथा का है?

(a) निरंतर तुलनात्मक मूल्यांकन
(b) शारीरिक दंड
(c) व्यक्तिसापेक्ष अधिगम
(d) प्रतियोगितात्मक कक्षा

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (c) व्यक्ति सापेक्ष अधिगम प्रभावशाली विद्यालय का उदाहरण है। व्यक्ति सापेक्ष अधिगम का अर्थ है प्रत्येक छात्र के अधिगम को सुनिश्चित करना। एक प्रभावशाली विद्यालय छात्रों के वैयक्तिक विभिन्नता के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन करता है।

155. प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को

(a) विभेद नहीं करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए
(b) सूमह-गतिविधियों के दौरान समाजमिति के आधार पर उन्हें अपने समूह बनाने की अनुमति देनी चाहिए
(c) सकारात्मक अंत वाली कहानियाँ सुनानी चाहिए।
(d) सुबह प्रत्येक बच्चे का अभिवादन करना चाहिए

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans (a) प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को भेद भाव (विभेद) नहीं करना चाहिए और प्रत्येक छात्र के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए। ताकि सभी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सुविधानुसार प्रयास कर सकें।

156. एक शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है। कुछ शिक्षार्थी एक-साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने-आप पढ़ते हैं। एक अभिभावक को यह पसंद नहीं आता। इस स्थिति से निबटने का निम्न में से कौन सा तरीका सबसे बेहतर हो सकता है?

(a) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से अनुरोध करना चाहिए कि वे उनके बच्चे का अनुभाग बदल दें

(b) अभिभावकों को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए

(c) अभिभावकों को उस विद्यालय से अपने बच्चे को निकाल लेना चाहिए

(d) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से शिक्षक की शिकायत करनी चाहिए।

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (b) यदि कोई शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है तो कुछ शिक्षार्थी एक साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने आप पढ़ते हैं। यदि यह स्थिति किसी अभिभावक को पसन्द नहीं आता है तो सर्वप्रथम अभिभावक को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए।

157. शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली-----की ओर संकेत करती है।

(a) विद्यालय का संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं

(b) मूल्यांकन –प्रक्रिया

(c) कक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली पाठ्य सामग्री

(d) शिक्षण-पद्धति एवं पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (a) शिक्षा क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली विद्यालय के संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं, कि ओर संकेत करती है। अर्थात् पाठ्यचर्या के अंतर्गत पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ भी शामिल होती हैं।

158. बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को ---- भूमिका निभानी चाहिए।

(a) अग्रोन्मुखी (b) सहानुभूतिपूर्ण

(c) तटस्थ (d) नकारात्मक

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (a) बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को अग्रोन्मुखी भूमिका निभानी चाहिए तथा उन्हें और अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

159. एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओं में से किसे सर्वाधिक बढ़ावा देगा?

(a) प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति (b) परीक्षण करने की प्रवृत्ति

(c) स्मृति (d) अनुशासित स्वभाव

UK TET (I-V) 2014
C TET (I-V) 2012

Ans : (a) एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति को सर्वाधिक बढ़ावा देगा क्योंकि शिक्षकों में प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति होने पर बेहतर शिक्षण कार्य करने के प्रति प्रतिबद्धता होगी।

160. प्राथमिक स्तर पर शिक्षक में निम्न में से किसे सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता माननी चाहिए?

(a) पढ़ाने की उत्सुकता

(b) धैर्य और दृढ़ता

(c) शिक्षण–पद्धतियों और विषयों के ज्ञान में दक्षता

(d) अति मानक भाषा में पढ़ाने में दक्षता

C TET (I-V) 2011

Ans : (b) प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में धैर्य और दृढ़ता के गुण विशेष तौर पर होनी चाहिए क्योंकि बाल्यावस्था में बालकों की रुचि खेलने में ज्यादा होती है पढ़ने में कम। अत: वे देर से सीखते हैं इसलिए एक अच्छा अध्यापक वही हो सकता है जिसमें धैर्य एवं दृढ़ता हो।

EXAM POINT

- किस विधि के अन्तर्गत किसी वस्तु या तथ्य के घटको को विभाजित किया जाता है **–विश्लेषण विधि**
- गणित शिक्षण में अज्ञात से ज्ञात की ओर शिक्षण सिद्धान्त का पालन होता है **–निगमन विधि**
- निगमन विधि है **–विश्लेषण विधि**
- गणित शिक्षा में आगमन विधि का शिक्षण सूत्र है **–विशिष्ट से सामान्य**
- गणित शिक्षण में निगमन विधि का शिक्षण सूत्र है **–सामान्य से विशिष्ट**
- वृत्त की परिधि का सूत्र ज्ञात करने में प्रयुक्त होने वाली विधि है **–आगमन विधि**

शिक्षण विधियाँ और उनके जनक

विधियाँ	जनक
आगमन विधि	अरस्तू
निगमन विधि	अरस्तू
प्रश्नोत्तर/सुकराती	सुकरात
प्रोजेक्ट विधि	किलपैट्रिक
खेल विधि	कॉल्डवैल कुक
डाल्टन विधि	कु. हेलेन पार्क हर्स्ट
हरबर्ट विधि	हरबर्ट
किण्डर गार्टन विधि	फ्रोबेल
माण्टेसरी विधि	मारिया मान्टेसरी
हयूरिस्टिक विधि	आर्मस्ट्राँग

- हयूरिस्टिक शब्द का अर्थ है **–खोज करना**
- ग्रीक भाषा में हयूरिस्टिक शब्द का अर्थ है **–उत्पन्न**
- बेसिक शिक्षा प्रणाली के जनक **–महात्मा गाँधी**
- ''शिक्षण चार चरणों वाली एक प्रक्रिया है। योजना निर्देश, मापन तथा मूल्यांकन।'' शिक्षण के बारे में यह परिभाषा किस विद्वान द्वारा दी गयी है– **हफ तथा डंकन के द्वारा**
- कथन सत्य नहीं है– **शिक्षा एक ऐसी प्रकिया है, जो शिक्षण संस्थाओं तक सीमित होती है**
- शैक्षिक प्रक्रिया के तीन मुख्य बिन्दु बताए गए हैं, उनसे सम्बन्धित नहीं है– **पाठ्यक्रम को रटाना**
- किस व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक ने शिक्षण का पुनर्बलन सिद्धान्त दिया है– **बी. एफ. स्किनर**
- ...... विधि सीखने के सामाजिक सन्दर्भ के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया को लाभ पहुँचाती है– **समूह परिचर्चा, स्वयं अध्ययन तथा एक-से-एक अधिगम**
- सूक्ष्म शिक्षण चक्र में सम्मिलित नहीं है–**सामाजिक अन्त:क्रिया**
- प्रजातान्त्रिक शिक्षण व्यूह रचना में सम्मिलित नहीं है– **अभिक्रमित अनुदेशन**
- शिक्षण-नियन्त्रित अनुदेशन विधियों में सम्मिलत है– **पाठ-दर्शन विधि, अनुवर्ग-शिक्षण विधि, व्याख्यान विधि**
- डाल्टन शिक्षण विधि की विशेषताओं के सन्दर्भ में सत्य नहीं है– **अध्यापक वाद-विवाद के माध्यम से बालकों के समक्ष समस्या उत्पन्न करता है**
- मैजिक लैनटर्न किस प्रकार के शिक्षण सहायक सामग्री से सम्बन्धित है– **दृश्य सहायक सामग्री**
- आप कक्षा का ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं–**उद्दीपन परिवर्तन द्वारा**
- यदि छात्रों को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता व नियन्त्रण दिया जाए तो– **शिक्षण और अधिगम प्रभावी हो सकता है**
- शिक्षण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है– **अधिगम का सरलीकरण**
- आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है– **सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्त्ता की**
- डाल्टन शिक्षण विधि का विकास किया– **मिस हेलेन पार्कहर्स्ट ने**
- बच्चा सीखता है– **कई प्रकार से**
- सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी द्वारा की गयी त्रुटियों के सम्बन्ध में आपकी दृष्टि में सर्वोत्तम कथन है– **त्रुटियाँ अधिगम प्रक्रिया का भाग है**
- शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है– **बच्चे का सर्वांगीण विकास**
- विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिए, अध्यापक को नहीं करना चाहिए– **दबाव से किसी बात या विचार के लिए राजी करना**
- जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव से, को कहा जाता है– **सामाजिक अधिगम**
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **परिपक्वता (Maturation) एवं आयु**
- श्यामपट्ट पर लिखना, प्रश्नों को हल करना एवं प्रश्न पूछना सम्बन्धित है– **शिक्षण कुशलता से**
- अल्पवयस्क बच्चों के अधिगम प्रक्रिया में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिए– **अग्रसक्रिय**
- परिवार एक साधन है– **अनौपचारिक शिक्षा का**
- शिक्षण का सत्तावादी स्तर है– **शिक्षक केन्द्रित**
- शिक्षण अधिगम का स्तर नहीं है– **त्रिभेदीकरण स्तर**
- अधिगम से सम्बन्धित किसी विद्यार्थी की समस्याओं का सबसे अच्छा उपचार है– **निदानात्मक शिक्षण**
- आप किसी कक्षा में पाठ पढ़ाते हैं और एक विद्यार्थी विषय से असम्बद्ध एक प्रश्न पूछता है, तब आप– **कक्षा के बाद प्रश्न का उत्तर देंगे**
- श्यामपट्ट पर लिखते समय सबसे महत्वपूर्ण है– **लेखन में स्पष्टता**
- व्यावहारिक जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना उद्देश्य होना चाहिए– **शिक्षा का**
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को करना चाहिए– **अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए**
- स्वतंत्र चर में आता है– **शिक्षक**
- स्मिथ ने शिक्षण की त्रिधुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है– **शिक्षक को**
- शिक्षण के आधार पर चर हैं– **3**
- सीखने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है– **जिज्ञासा**
- ''प्रयास व त्रुटि'' में सबसे महत्वपूर्ण है– **लक्ष्य**
- शिक्षक को गृहकार्य की जाँच करनी चाहिए– **नियमित**
- आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है– **सीखने की क्षमता पर**
- एक प्रभावी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह– **सम्प्रेषण में निपुण हो**
- शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है– **बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति अपनाकर**
- विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का यह दृढ़ विश्वास है कि– **शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण होते हैं**
- एक शिक्षिका अपने आप से कभी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती, वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम आधारित है– **सक्रिय भागीदारिता के सिद्धान्त पर**
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है क्योंकि– **बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं**
- प्राय: शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ संकेत करती हैं– **सीखने की अनुपस्थिति की ओर**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय-क्षेत्रों के ज्ञान को साथ जोड़ सकें। इससे बढ़ावा मिलता है– **ज्ञान के सह-सम्बन्ध एवं अन्तरण को**
- व्यवहार का 'करना' पक्ष आता है– **सीखने के गतिक क्षेत्र में**

- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे-समूह चर्चा, समूह परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है– **सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है, क्योंकि– **इनमें अधिकतम इन्द्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है**
- शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये सहायता करती है– **समाजीकरण में**
- शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वे प्राय: संकेत करती हैं **–आवश्यक उपचारात्मक युक्तियों की ओर**
- वे शिक्षार्थी जो संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं, उनके पास होता है– **निष्पादन-उपागम अभिविन्यास**
- विद्यार्थियों को सीखे गये नए ज्ञान को बहु संदर्भों में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिए जाते हैं– **अन्त:विषयी अनुदेशन में**
- नर्सरी कक्षा से शुरूआत करने के लिए सबसे अच्छी विषयवस्तु है– **मेरा परिवार**
- प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को– **विभेद नहीं करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए**
- एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में सर्वाधिक बढ़ावा देगा– **प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति का**
- सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में 'स्कैफोल्डिंग' संकेत करता है– **सहयोगात्मक अधिगम की ओर**
- सीखने के लिए आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच सम्बन्धों के दृढ़ीकरण द्वारा– **सीखने को प्रभावित करता है**
- पाठ योजना में शामिल नहीं है– **योजना की दृढ़ता**
- 'अधिगमकर्ता का स्वनियमन' का अर्थ है– **स्व अनुशासन और नियंत्रण**
- एक विद्यार्थी कहता है "उसका दादा आया है" एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए– **'दादा आया है' की जगह पर दादा जी आए हैं, कहना चाहिए**
- शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को कहा जा सकता है– **सामाजिक अधिगम**
- यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं, तो शिक्षक को– **अनुदेशन कार्य, समय-सारणी अथवा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए**
- प्रतिक्रिया का विलोप होना अधिक कठिन है– **आंशिक पुनर्बलन के बाद**
- निपुणता अभिविन्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है– **शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत प्रयासों पर ध्यान केन्द्रित करके**
- शिक्षिका को अपने संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक शैली की पहचान करनी चाहिए, यह सर्वाधिक उचित है– **अधिगम को अधिकतम करने के लिए**
- शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना– **अन्तपरक अनुदेशन है**
- शिक्षण प्रक्रिया में भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए– **विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता**
- अधिगम क्षमता प्रभावित नहीं होती– **राष्ट्रीयता से**
- किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल-अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्व नहीं दिया है– **गुथरी**
- भूलने का सिद्धान्त है– **प्रतीपकारी अवरोध**
- स्मरण करने की विधि है– **विचार-साहचर्य विधि**
- सीखने की प्रगति के सूचक हैं– **सीखने के वक्र**
- अधिगम का श्रेणीक्रम सम्बन्धित हैं– **गैग्ने से**
- व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है– **सीखना**
- प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ शिक्षक के लिए विद्यालय में बेहतर नेतृत्व शैली है– **प्रजातांत्रिक नेतृत्व**
- निचली कक्षाओं में पढ़ाते समय एक शिक्षक को प्राथमिकता देनी चाहिए– **कहानी कथन को**
- एक कक्षा में एक शिक्षक पढ़ाने के लिए बाल-केन्द्रित उपागम का प्रयोग कर रहा है। यह तरीका उपयुक्त नहीं है– **प्रदर्शन के लिए**
- जब एक क्षेत्र का अधिगम दूसरे क्षेत्र के अधिगम में सहायता करता है, तो उसे कहते हैं– **अधिगम का धनात्मक अन्तरण**
- वह विशेषता जो कि सहयोगात्मक स्थिति की सीमा में नहीं है– **शिक्षक केन्द्रित**
- एक शिक्षण विधि में दो या अधिक शिक्षक सहयोगपूर्वक विषयों की योजना बनाते हैं, पूरा करते हैं तथा सदैव विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन आवर्ती रूप से करते हैं, यह विधि है– **टोली शिक्षण**
- लोकतन्त्रात्मक दृष्टिकोण, विषय-वस्तु पर अधिकार एवं बाल मनोविज्ञान का ज्ञान, ये सभी गुण पाये जाते हैं– **एक कुशल अध्यापक में**
- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित है– **कोमल शिल्प उपागम**
- संस्कृति का संरक्षण, संस्कृति का परिष्करण एवं संस्कृति के नए प्रतिरूपों का निर्माण, यह कार्य होता है– **विद्यालय का**
- शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं– **शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम**
- खेल शिक्षण विधि के प्रतिपादक हैं– **फ्रोबेल**
- छात्रों को 'ठीक', 'शाबास', बहुत अच्छा कहना है– **सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन**
- शिक्षण को प्रभावशाली बनाना, छात्रों में सृजनात्मकता उत्पन्न करना एवं छात्रों को क्रियाशील बनाना उद्देश्य है– **श्रव्य-दृश्य सामग्री का**
- बहुशिक्षण शास्त्रीय तकनीकें, वर्गीकृत, अधिगम सामग्री, बहुआकलन तकनीकें तथा परिवर्तनीय जटिलता एवं सामग्री का स्वरूप सम्बद्ध है– **विभेदित अनुदेशन से**

- एक शिक्षिका पाठ को पूर्ववत् पाठ से जोड़ते हुए बच्चों को सारांश लिखना सिखा रही है, वह क्या कर रही है– **वह बच्चों की पाठ समझने की स्वशैली विकसित करने में सहायता कर रही है**
- जो अध्यापक/अध्यापिका अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों में सुधार करना चाहता/चाहती हैं उसके लिए समुचित मार्ग है– **उसे उन त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए जो सामान्य अर्थ व अवबोधनात्मकता में हस्तक्षेप करती है**
- एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए– **प्रजातांत्रिक भूमिका में**
- एक सजीव कक्षा स्थिति में सबसे अधिक सम्भावित है– **शिक्षक–छात्र वार्ता**
- आपके अनुसार शिक्षण है– **एक कला, एक कौशल**
- अच्छा नागरिक बनाना, ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो समाज के लिए उपयोगी हों एवं व्यावहारिकता का निर्माण करना, ये सभी उद्देश्य हैं– **शिक्षा के**
- फ्रोबेल ने प्रमुख बल दिया– **गेंद के खेल पर**
- संसाधनों, रुचि व विशेषता का इष्टतम उपयोग करने हेतु शिक्षकों के समूहों द्वारा शिक्षण है– **''समूह शिक्षण''**
- एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है– **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना**
- एक प्रभावी शिक्षक वह है जो कर सकता है– **विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना**
- अधिगम का क्षेत्र नहीं है– **आध्यात्मिक**
- शिक्षक को व्याख्यान की गति, विद्यार्थी के ज्ञान को बाधित कर सकती है, यदि वह अत्यधिक तेज या अत्यधिक धीमी है। इससे बचने के लिए शिक्षक को करना चाहिए– **नयी सूचना को प्रस्तुत करने के लिए तेजगति के व्याख्यान का प्रयोग करना**
- सीखने का वह सिद्धान्त जो केवल ''अवलोकित व्यवहार'' पर निर्भर है, यह जुड़ा है– **सीखने के व्यवहारात्मक सिद्धान्त से**
- एक विद्यार्थी गुणा के सवालों को हल करना सीखता है। वह अपने 'जोड़' के पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है। इस प्रकार के अधिगम अन्तरण को कहा जाता है– **ऊर्ध्व अन्तरण**
- एक शिक्षक को विद्यार्थियों की तत्परता स्तर को बढ़ाना है ऐसा करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है– **विशेष प्रकरण से सम्बन्धित सृजनात्मकता क्रिया-कलाप को कक्षा में संगठित करवाकर**
- सीखने की प्रक्रिया में सीखने का स्थानान्तरण हो सकता है– **सकारात्मक, नकारात्मक एवं शून्य**
- अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने की व्याख्या करता है– **गेस्टाल्टवाद**
- कौशल सीखने की पहली अवस्था है– **अनुकरण**
- 'प्रयास और भूल' सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं– **थार्नडाइक**
- ''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसका शिक्षक को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए।'' उपर्युक्त कथन दिया गया है– **रूसो द्वारा**
- ''स्मृति सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है।'' उक्त कथन है– **वुडवर्थ का**
- जिस वक्र रेखा में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और बाद में यह क्रमश: मन्द होती जाती है। उसे कहते हैं– **उन्नतोदर वक्र (Convex curve)**
- कौन-सी दशा/दशाएँ ध्यान को आकर्षित करने की आन्तरिक दशा नहीं है– **उद्दीपन की स्थिति**
- समानता का नियम, वैषम्य का नियम एवं समीपता का नियम है– **साहचर्य के नियम**
- गेट्स के अनुसार ''अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन'' है– **सीखना**
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिये संगीत, कहानी कहने, नाटक, कला, शिल्प, खेल आदि जैसी गतिविधियों का संचालन– **प्रत्येक विषय के साथ सम्मिलित होना चाहिये**
- यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिये कि वह– **शिक्षण विधि बदल दे**
- व्यवहार का 'करना' पक्ष आता है– **सीखने के गतिक क्षेत्र में**
- बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ– **उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले**
- एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है। यह एक उदाहरण है– **प्रेक्षण अधिगम का**
- विद्यार्थियों को अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अधिक महत्वपूर्ण तरीका है– **अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण**
- शिक्षक का बर्ताव होना चाहिए– **आदर्शवादी**
- शिक्षा में विकास को लेकर फ्रोबेल का मुख्य योगदान है– **बालवाड़ी**
- यह कहा जाता है कि शिक्षक को संसाधन सम्पन्न होना चाहिए, इसका अर्थ है– **उसे पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए ताकि छात्रों की समस्याओं को हल कर सके**
- बीजों का अंकुरण संकल्पना के शिक्षक की सबसे प्रभावी पद्धति है– **विद्यार्थियों द्वारा पौधों के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना**
- शब्द Identical Elements (समान तत्व) गहन सम्बन्ध रखता है– **अधिगम स्थानान्तरण से**
- सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है– **लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत सन्तुष्टि**
- उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण, ये सभी सोपान हैं– **आगमन विधि के**
- विद्यार्थियों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिए– **समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना पड़ेगा**
- ''सीखने का मतलब ज्ञान निर्माण करना है'' यह कथन है– **मनोवैज्ञानिक पियाजे का**
- वाइगॉट्स्की बच्चों के सीखने में किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं– **सामाजिक**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों का सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इससे बढ़ावा मिलता है– **ज्ञान के सह-सम्बन्ध एवं अन्तरण**
- श्यामपट्ट पर लिखना, प्रश्नों को हल करना एवं प्रश्न पूछना ये सभी सम्बन्धित हैं– **शिक्षण कुशलता से**
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि– **बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं**

03.

बालक एक समस्या समाधानकर्ता एवं वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

समस्या समाधान का अर्थ

1. निम्नलिखित में से कौन–सी विशेषता समस्या–समाधान उपागम का विशेष चिह्न है?

(a) सही उत्तर प्राप्त करने का सामान्यतः एक उपागम होता है
(b) समस्या केवल एक सिद्धांत/प्रकरण पर आधारित होती है
(c) समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है
(d) समस्या मौलिक होती है

C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) समस्या–समाधान उपागम की मुख्य विशेषता होती है कि समस्या कथन में संकेत अंतर्निहित रूप से दिया होता है जिसे पहचानकर समस्या समाधान किया जाता है।

प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के सोपान

2. समस्या-समाधान क्षमताओं को किस प्रकार सुसाध्य किया जा सकता है?

(a) समरूपों के इस्तेमाल को बढ़ावा देकर।
(b) विद्यार्थियों में डर की भावना पैदा कर।
(c) लगातार अभ्यास और कार्यान्वयन पर जोर देकर।
(d) समस्याओं के हल हेतु अटल प्रक्रिया के इस्तेमाल को बढ़ावा देकर।

C TET (I-V) 31 January 2021

Ans. (a) : समस्या समाधान क्षमताओं को सुसाध्य बनाने के लिए समरूपों के इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, प्रगतिशील शिक्षा बच्चों को समस्या-समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक मानती है। ऐसे में बच्चों को समस्या-समाधान कौशल में निपुण होना चाहिए। बच्चों को समस्या-समाधान कौशल में निपुण बनाने के लिए शिक्षक को उन्हें समरूप समस्या या एक ही प्रकार की समस्याओं को विभिन्न प्रकार से हल करने के लिए देना चाहिए। इससे बच्चों में समस्या-समाधान में निपुणता भी प्राप्त होगी और उनमें रचनात्मकता का विकास भी होगा।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक द्वारा कक्षा में बच्चों के लिए समस्या हल करने के तरीके का वर्णन नहीं कर सकता?

(a) किसी विशेष समस्या को हल करने के बारे में अपनी विचार-प्रक्रियाओं पर चर्चा करना
(b) कुछ हल करते समय गलतियों को करने के प्रति ईमानदार रहना
(c) सोच, विचार, परीक्षण और विभिन्न उत्तरों जैसी शब्दावली का प्रयोग करना
(d) अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न पूछना

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न पूछना, शिक्षक द्वारा कक्षा में बच्चों के लिए समस्या हल करने के तरीके का वर्णन नहीं कर सकता है क्योंकि अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न का अर्थ होता है निश्चित उत्तरों वाले प्रश्न। ऐसे प्रश्न बच्चों की स्मृति व पहचान आधारित होते हैं न कि उनके विभिन्न तरीकों से चिन्तन करने पर आधारित होते हैं। बच्चों को चिंतन हेतु प्रेरित करने के लिए अपसारी उत्तरों या मुक्त अंत उत्तरों वाले प्रश्न पूछने चाहिए।

4. एक शिक्षक बच्चों को प्रभावी रूप से समस्या का समाधान करने में सक्षम बनने के लिए किस तरह से प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) पाठ्यपुस्तक से एक ही प्रकार के प्रश्नों के उत्तर के अभ्यास के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में अवसर प्रदान करके।
(b) पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचनाओं के कंठस्थीकरण करने पर बल देकर।
(c) बच्चों को समस्या के बारे में सहजानुभूत अनुमान लगाने एवं बहु-विकल्पों को देखने के लिए प्रोत्साहित करके।
(d) पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नों के व्यवस्थित तरीके से समाधान लिखकर।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) एक शिक्षक बच्चों को प्रभावी रूप से समस्या का समाधान करने में सक्षम बनाना चाहती है तो उसे बच्चों को समस्या के बारे में सहजानुभूत अनुमान लगाने एवं बहु-विकल्पों को देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि बच्चे स्वयं सक्रिय अन्वेषक एवं समस्या-समाधानकर्ता होते हैं तथा वे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। छात्र ज्ञान के निर्माण में सक्रिय सहभागिता द्वारा घनिष्ठ रूप से संबद्ध होते हैं, वे अपने भौतिक एवं प्राकृतिक विश्व के संबंध में जानने का प्रयास करते हैं। इसलिए शिक्षक को छात्रों के समक्ष समस्या प्रस्तुत करनी चाहिए और उन्हें उसका स्वयं समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

5. एक प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका बच्चों को एक प्रभावशाली समस्या-समाधानकर्ता बनने के लिए किस प्रकार से प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) 'गलत उत्तरों' को अस्वीकार करके एवं दंडित करके।
(b) बच्चों को सहजानुभूत अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करके तथा उसी पर आधारित विचार मंथन करके।
(c) प्रत्येक छोटे कार्य के लिए भौतिक पुरस्कार देकर।
(d) केवल प्रक्रियात्मक ज्ञान पर बल/महत्त्व देकर।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) यदि एक प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका बच्चों को एक प्रभावशाली समस्या-समाधानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहती है तो उसे बच्चों को सहजानुभूत अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उसी पर आधारित विचार मंथन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को सक्रिय समस्या-समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक माना जाता है जो अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं इसलिए बच्चों के सामने ऐसी समस्यात्मक वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें उन्हें सक्रिय रूप से समाधान खोजने के अवसर प्राप्त हों।

6. शिक्षक ___ के अलावा निम्नलिखित सभी को करते हुए समस्या-समाधान को विद्यार्थियों के लिए मजेदार बना सकता है।

(a) सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने
(b) जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने की कोशिश कर रहे हो तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा करने
(c) मुक्त अंत वाली सामग्री उपलब्ध कराने
(d) मुक्त खेल के लिए समय देने।

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) शिक्षक को जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने की कोशिश कर रहे हों तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा नही करनी चाहिए बल्कि उनके द्वारा किये गये त्रुटियों को कम करने के लिए उन्हें प्रेरित करनी चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों से परिपूर्णता की अपेक्षा न करके समस्या समाधान को रोचक बनाया जा सकता है।

समस्या समाधान की विधियाँ

7. .... के अतिरिक्त निम्नलिखित समस्या समाधान की प्रक्रिया के चरण हैं

(a) परिणामों की आशा करना
(b) समस्या की पहचान
(c) समस्या का छोटे हिस्सों में बाँटना
(d) संभावित युक्तियों को खोजना

C TET 2013 (I-V)

Ans : (a) समस्या समाधान की प्रक्रिया में निम्न चरण होते हैं–

- समस्या की पहचान
- समस्या को हल करने के लिए विभिन्न युक्तियों को खोजना
- समस्या का विश्लेषण
- समस्या समाधान का तार्किक विश्लेषण

8. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या-समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है?

(a) प्राक्कल्पना का परीक्षण करना
(b) समस्या के प्रति जागरुकता
(c) प्रासंगिक जानकारी को एकत्र करना
(d) प्राक्कल्पना का निर्माण करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (b) किसी भी प्रकार की समस्या समाधान का पहला चरण समस्या के बारे में जानना होता है इसे वैज्ञानिक भाषा में समस्या के प्रति जागरुकता के नाम से जाना जाता है।

बालक एक समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

9. A teacher in the classroom is doing some activities like : (a) asking not only what happened but also "how and why", (b) helping them to compare various answers to a question and judge which is really the best answer. From thinking point of view, through these activities he is trying to promote :/एक अध्यापक कक्षा में कुछ गतिविधि कर रहा है, जैसे (अ) न केवल यह पूछ कर कि क्या हुआ बल्कि यह भी पूछा कि 'कैसे और क्यों', (ब) उन्हें एक प्रश्न के विभिन्न उत्तरों तथा परख की तुलना करने में मदद करना जो वास्तव में सबसे अच्छा जवाब है, इन गतिविधियों से वह बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है :

(a) Analogy/समानता
(b) Critical thinking/आलोचनात्मक सोच
(c) Integrative thinking/एकीकृत सोच
(d) Concept mapping/अवधारणा मानचित्रण

REET–2017 (I-V) 11-02-2018

Ans. (b) : उपर्युक्त गतिविधियों के माध्यम से अध्याप बच्चों में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। आलोचनात्मक सोच के माध्यम से शैक्षिक गतिविधियों के दौरान एक शिक्षक द्वारा छात्रों से प्रश्न पूछकर पाठ्य-वस्तु के सर्वकालिक महत्व तथा कमियों की जानकारी प्राप्त किया जाता है ताकि अन्त में तुलना के आधार पर पाठ्य-वस्तु के गुणों एवं दोषों की समग्र उपयोगिता को बढ़ावा दिया जा सके।

10. एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप में इसका अर्थ है कि

(a) वह शरारती है
(b) वह अधिक जिज्ञासु है
(c) वह असामान्य है
(d) वह प्रतिभाशाली है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) अगर कोई बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है तो इसका तात्पर्य है कि वह शिक्षण अधिगम में रुचि ले रहा है तथा वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का है। ऐसी स्थिति में शिक्षक द्वारा छात्र की जिज्ञासा तुरन्त शांत करनी चाहिए।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न बच्चों को गंभीर रूप से सोचने के लिए आमंत्रित करता है?

(a) क्या आप इसका उत्तर जानते हैं?
(b) सही जवाब क्या है?
(c) क्या आप इसी तरह की स्थिति के बारे में सोच सकते हैं?
(d) विभिन्न तरीकों से हम इसे कैसे हल कर सकते हैं?

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : किसी दिये गये समस्या को विभिन्न तरीके से हल करने के लिए कहना, बच्चों को गम्भीर रूप से सोचने के लिए आमंत्रित करता है, क्योंकि समस्या को विभिन्न तरीके से हल करने के लिए अपसारी चिंतन आवश्यक होता है और अपसारी चिंतन में किसी समस्या पर विविध तरीके से विचार किया जाता है।

12. बच्चों के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन–से सही हैं?

(a) बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं।
(b) बच्चे समस्या समाधानकर्ता हैं।
(c) बच्चे वैज्ञानिक शोधकर्ता हैं।
(d) बच्चे पर्यावरण के सक्रिय अंवेषक हैं।

(a) B, C और D (b) A, B, C और D
(c) A, B, और C (d) A, B और D

C TET 2016 (I-V)

Ans : (a) सामान्यतः बच्चों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–
(1) बच्चे समस्या समाधानकर्ता होते हैं।
(2) बच्चे वैज्ञानिक शोधकर्ता होते हैं।
(3) बच्चे पर्यावरण के सक्रिय अन्वेषक होते हैं।
(4) बच्चे जानकारी के सक्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं।
बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते हैं क्योंकि वे किसी उद्दीपक या क्रिया के प्रति अनुक्रिया या प्रतिक्रिया करके ज्ञान प्राप्त करते हैं।

13. 'मन का मानचित्रण' संबंधित है

(a) साहसिक कार्यों की क्रिया-योजना से
(b) मन का चित्र बनाने से
(c) मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से
(d) बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (c) 'मन का मानचित्रण' का अर्थ 'मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से' है अतः अर्थानुसार किसी कार्य को करने से पहले उसकी एक रूपरेखा मन में बना लेना चाहिए।

14. बच्चे

(a) चिन्तन में वयस्कों की भाँति ही होते हैं और ज्यों-ज्यों वे बड़े होते है उनके चिन्तन में गुणात्मक वृद्धि होती है
(b) खाली बर्तन के समान होते हैं, जिसमें बड़ो के द्वारा दिया गया ज्ञान भरा जाता है
(c) निष्क्रिय जीव होते हैं जो प्रदत्त सूचना को ज्यों–का–त्यों प्रतिलिपि के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं
(d) जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारों ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं

C TET 2015 (I-V)

Ans : (d) बच्चे जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारो ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं। जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं वैसे–वैसे उनका दृष्टिकोण भी व्यापक होता जाता है और अपने आस–पास के घटनाओं से हटकर अमूर्त संकल्पनाओं का निर्माण करने के लिए प्रयास करने लगते हैं।

15. बच्चे की जिज्ञासा शान्त करनी चाहिए

(a) जब शिक्षक फुर्सत में हो
(b) जब विद्यार्थी फुर्सत में हो
(c) कुछ समय के पश्चात्
(d) तत्काल,जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) बच्चों की जिज्ञासा का निराकरण तत्काल करना चाहिए जब विद्यार्थी द्वारा इसे प्रकट किया गया हो।

EXAM POINTS

- "समस्या समाधान वह प्रतिमान है, जिसमें तार्किक चिन्तन निहित होता है।" यह कथन किस विद्वान का है– **स्टैनले ग्रे का**
- कथन सत्य नहीं है– **समस्या समाधान का प्रयोग केवल राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में किया जाता है**
- बच्चों को समस्या-समाधानकर्ता बनाने हेतु किए जाने वाले आवश्यक उपायों में सही है–**बालक में आत्म पहचान का गुण विकसित करके, बालक को स्वावलम्बी बनाने के लिए प्रोत्साहित करके, बालक में भाषा का विकास करके**
- एक अन्वेषक के रूप में बालक अपनी समस्याओं की खोज किस रूप में करता है– **निरीक्षण, सामान्यीकरण, प्रमाणीकरण**
- बालक में अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के लाभ के सन्दर्भ में सत्य नहीं है– **ऐसे बालक कक्षा में प्रथम स्थान पर आते हैं**
- बच्चों के वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में विकास के लिए किन गुणों के विकास की आवश्यकता नहीं है– **बच्चों को सम्भावित समाधानों के निर्माण हेतु प्रेरित करके**
- एक बच्चा माचिस के खाली डिब्बों से कई प्रकार की वस्तुएँ बनाकर खेलता है। उस बच्चे के सन्दर्भ में आपकी राय क्या है– **उसमें वैज्ञानिक अन्वेषक के गुणों का विकास हो रहा है**
- बालक में वैज्ञानिक अन्वेषक के गुणों का विकास क्यों किया जाना चाहिए– **उसमें 'वैज्ञानिक स्वभाव' विकसित करने के लिए**
- क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) का उद्देश्य है– **विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना**
- मुक्त अन्त वाली सामग्री उपलब्ध कराने, मुक्त खेल के लिए समय देने एवं सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने, इन सभी को करते हुए शिक्षक विद्यार्थियों के लिए मजेदार बना सकता है– **समस्या-समाधान को**
- समस्या समाधान प्रायः उन विद्यालयों में सफल है, जहाँ– **परिवर्तनशील/लचीली पाठ्यचर्या है**
- समस्या समाधान और आलोचनात्मक चिन्तन पर अधिक बल देती है– **प्रकृतिवादी शिक्षा**
- यदि पूर्व प्राथमिक स्तर को बच्चों पर खोज करने की अनुमति दे दी जाए, तो वे सन्तुष्ट हो जाते हैं। जब उन्हें हतोत्साहित किया जाता है, वे ऐसा करते हैं– **अपनी उपेक्षा को कम करने में उनकी अभिप्रेरणा के कारण**
- समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है, यह विशेष चिह्न है– **समस्या-समाधान उपागम का**
- मिश्रित विधि एवं विचार-साहचर्य विधि है– **स्मरण करने की विधि**
- समस्या-समाधान को बाधित नहीं करता– **अन्तर्दृष्टि (Insight)**
- कक्षा में प्रभावी अनुशासन बनाए रखने के लिए शिक्षक को चाहिए कि वह– **विद्यार्थियों को कुछ समस्या हल करने के लिए दे**
- जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है, तब उनके सीखने का वक्र– **बेहतर होता है**